एस.सी.ई.आर.टी., बिहार
द्वारा विकसित

S9-G

दो वर्षीय सेवापूर्व डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन

मैथिली का शिक्षणशास्त्र

(उच्च-प्राथमिक स्तर)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार

पाठ्य पुस्तक विकास समूह

पत्र–S-9.G

(मैथली का शिक्षणशास्त्र)

दिशाबोध	श्री दीपक कुमार सिंह, भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना श्री सज्जन राजसेकर, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, बिहार, पटना डॉ० एस.पी.सिन्हा, सलाहकार, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
समन्वयक	डॉ० सुरेन्द्र कुमार, विभागाध्यक्ष भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, एस. सी.ई.आर.टी. बिहार, पटना
लेखक समूह	श्री अवधेश कुमार,व्याख्याता, डायट नरार, मधुबनी
	मो0 मुन्ना, व्याख्याता, डायट पूसा, समस्तीपुर
	श्री गंगेश कुमार झा, व्याख्याता, डायट नरार, मधुबनी
समीक्षक	श्री महेन्द्र नारायण राम, पूर्व व्याख्याता, डायट पूसा, समस्तीपुर
	श्री वीणाधर झा, पूर्व व्याख्याता, पटना कॉलेजिएट,पटना
भाषा समीक्षक	श्री अवधेश कुमार,व्याख्याता, डायट नरार, मधुबनी

पाठ–सूची

इकाई	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	मैथिली शिक्षणक उद्देश्य	2–12
2	भाषाई कौशलक विकास : सुनब ओ बाजब	13–27
3	पढ़बाक ओ लिखबाक कौशलक विकास	28–41
4	शिक्षण सहायक सामग्री, सीखने की योजना ओ मूल्यांकन	42–74
5	संदर्भ सूची	75

मैथिली का शिक्षणशास्त्र

S-9.G

इकाई–1

मैथिलीक शिक्षण शास्त्र

एहि इकाई मे निम्न विषयवस्तुक वर्णन अछि

- मातृभाषाक रूपमे प्रारम्भिक ओ उच्च प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षणक उद्देश्य
- अन्य विषयक अध्यापन मे मैथिलीक उपयोग। माध्यम भाषाक रूपमे मैथिलीक शिक्षण
- मैथिलीक ऐतिहासिक ओ सामाजिक परिप्रेक्ष्य
- मैथिलीक संरचना : ध्वनि, शब्द, वाक्य

मैथिली शिक्षणक उद्देश्य

जीवनक लेल वायु, भोजन, जल, वस्त्र आ धरक आवश्यकता अछि तहिना बजबाक लेल, पढ़बाक लेल, भाषाक आवश्यकता अछि।

भाषाक संवादक माध्यम थिक। मनुख्य अपन बात–विचार, अनुभव भावना, संवेदनाकेँ अपन भाषाक माध्यम से संप्रेषित करैत अछि। भाषाक बिना जीवनक कल्पना नहि कयल जा सकैछ। जाहि गामक संस्कृति जतेक चेतना सम्पन्न रहतैक, ज्ञान जतेक प्रबृद्ध होयतैक ततबे समृद्ध ओहिठामक भाषा से हो होयतैक। भाषाक माध्यम सँ क्षेत्रीय संस्कृति ज्ञान–विज्ञान, हसी–खुशी आदि अभिव्यक्ति भऽ पवैत अछि। एहि लेल भाषा ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ तँ महत्वपूर्ण अछिए ज्ञान– विज्ञानक लेल सहो अनिवार्य अछि।

मैथिली भाषा बऽपुरान अछि। भाषा रूप मे मैथिलीक प्रयोग कहियासँ शुरू भेल तकर निश्चित तिथि कहब कठिन अछि। प्रारंभिक काल मे अपभ्रंश बोल चालक भाषा छल तकरा देशी भाषा कहल जाइत छल। ओहि भाषा मे सलहेस, लोरिक, नेका बनिजारा, विसा–कहानी, आदि वाथिक परम्पराएक लोक साहित्यक निर्माण भेल अछि। एहिना गाम–घरमे, पावनि तिहारक अवसरपर खिसा–कहानीक, गीत नाद गाओल जाइत छल। सपता–बिपता (बरखा) आदि पावनिक अवसर पर कथा कहबाक जे परिपाटी अछि ओ मैथिलीक मौखिक परम्पराक साहित्य कहल जाइछ। लिखित रूप मे आठम एवं नवम शताब्दीसँ मैथिली साहित्य उपलब्ध होइत अछि। बौद्ध धर्मक साधुलोकनिक लिखल गीत आ डाक एवं घाघक वचन आदि मैथिलीक आदिकालक लिखित साहित्य रूपमे मान्य अछि। मैथिली साहित्यक पहिल पोथी चौदहम शताब्दी मे लिखित ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर' आ मैथिली नाटक 'धूर्त्तसमागम' अछि। मैथिली साहित्यक एहिसँ पुरान पोथी एखन धरि प्राप्त नहि भेल आछि।

भारतीय भाषा परिवारमे मैथिलीक महत्वपूर्ण स्थान अछि एहिमे कोनों दुविधा नहि अछि। पूर्वांचल भारतक पहिल साहित्यक कृतक रूपमे 'वर्णरत्नाकर' क आदर भारतमे भेल आछि। विद्यापति मैथिलीक एहन कवि भेलाह जनिक गीत भारतेटा मे नहि, सम्पूर्ण विश्वक साहित्य संसारमे मान्य अछि। यैह कारण थिक जे विद्यापतिक गीतक अंग्रेजी अनुवाद यूनेस्कोक सौजन्यसँ सेहो प्रकाशित भेल आछि। भारत सरकारक महत्वपूर्ण साहित्य संस्थान साहित्य अकादेमी मैथिलीकेँ गत शताब्दीक सातम दशकमे स्वीकृत कयलक। निश्चित रूपेँ मैथिली भाषा साहित्य एहिसँ मर्यादित भेल। साहित्य–लेखनक दीर्घ परम्परा आ उत्कृष्ट साहित्यक मानक रूपये प्रस्तुत करबाक कारणेँ मैथिलीकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित कयल गेल। एहिसँ मैथिली भाषा साहित्यक विकासक गतिमे तीव्रता आयल अछि। मैथिलीक पढौनी बाल, वर्गसँ विश्वविद्यालयक उच्चम, शिक्षा धरिये पहिलेसँ होइत छल किन्तु अनुसूची मे मैथिलीक

समावेशक बाद शिक्षाक विविध क्षेत्रमे सेहे एकर विकासक मार्ग बेसी प्रशस्त भेलैक अछि। मैथिली सेहो इन्टरनेटक भाषा बनि चुकल अछि। विश्वक भाषाक विकासक दौड़मे मैथिली अपन अभिव्यक्ति क्षमता अर्थात् शब्द सम्पदा, कथन–भंगिया तथा सार्वदेशिकताक कारणें महत्वपूर्ण भाषाये परिगाणित होइत अछि। भारतेटामे नहिं विदेशमे सेहो मैथिली रेडियो आ टेलीविजनक प्रसारणक माध्यमसँ भाषाक रूपे स्वीकृत या प्रशंसित भेल अछि। मैथिली पत्र–पत्रिका भारत आ नेपालसँ नहि अमेरिका धरिसँ प्रकाशित भड रहल अछि।

भाषा–

भाषा शब्द संस्कृतक 'भाष्' धातुसँ व्युत्पन्न अछि। एकर अर्थ भेल–व्यक्त वाणी। एहि भाष् धातुक अर्थेमे भाषाक लक्षण सन्निहित अछि। कोनो वस्तु वा दृश्यकेँ देखि मानवक मोनमे नाना प्रकारक इच्छा उत्पन्न होइत छैक। मुदा जाहिठाम इच्छाकेँ नहि प्रकट कयल जायत, ताधरि ओकर कोनो अर्थ नहि होइत अछि। एकर संगहि दोसराक भावकेँ सेहो जनबाक प्रयोजन होइत छेक।

अतएव एहि लेल माध्यमक आवश्यकता होइत अछि। भाषा ओ सरल साधन थिक, जकरा द्वारा लोक अपन मनोभावकेँ प्रकट करैत अछि आ दोसराक भावकेँ जनैत छैक।

भाषा अभिव्यक्तिक सरल माध्यम थिक। एकरा बिना मानव अपन अनुभूति आ संवेदनाक अभिव्यक्ति नहि के सकैत अछि। वस्तुतः लोक–व्यवहारक एकमात्र महत्वपूर्ण साधन भाषा थिक।

भाषा अभिव्यक्तिक मुख्यतः तीन रूप अछि–पहिल मौखिक दोसर लिखित तेसर सांकेतिक।

मातृभाषाक महत्व

मायक दूधक अभाव मे दोसर प्रकारक दूध पीवि बच्चा जीवित तँ रहि सकैत–अछि, पला–पोसा तँ सकैत अछि मुदा पूर्ण स्वस्थ नहि रहि सकैत अछि। करण जे बच्चाक तेल मायक दूध अमृतक समान थिक। तहिना मातृभाषाकेँ शिक्षाक माध्यम नहियों बनयलासँ बच्चा कोनहुना, दिक्कत सिक्कत पढ़ि तँ लेत, मुदा जे ओकरा मातृभाषाक माध्ययसँ शिक्षा देल जायत तँ विषय–वस्तुकेँ कम समयमे सृजतार्पूवक बूझि सकैत आछि। वस्तुतः मातृभाषाक बच्चा लेल अमृतवाणी थिक।

भाषा मानव जीवनक आ समाजिक जीवनक प्रथम सरलतम साधन आ आवश्यकता होइछ। ई अपन भाव, विचार या अनुभवकेँ व्यक्त करबाक सबसँ ऊत्तम साधन, ताहुमे मातृभाषाक, माध्यमसँ पढ़ायब, बुझायब, आओर सुगम थिक। विभिन्न विषयक ज्ञान अबोध बालककेँ जर्तेक सरलतासँ मातृभाषाक माध्यमसँ कराओल जा सकैत अछि तर्तेक सुगमतासँ आन भाषासँ नहि। दोसर भाषाक माध्यसँ विभिन्न विषयकेँ पढ़ौलासँ अधिकांश समय ओहि भाषाकेँ बुझबामे बीती जाइत अछि बुझबाक लेल मातृभाषा ऊत्तम साधन थिक तेँ छात्र केँ मातृभाषक माध्यमसँ पढ़ेबाक चाहि। बालक जतेक सरलतासँ मातृभाषामे सोचि सकैछ, बुझि सकैछ, अपन भाव व्यक्त करि सकैछ ततेक आन, कोनो भाषमे नहि। विषय वस्तु चाहे कोनो विषयक किएक न हो, भाषा ओकर मैथिली रहत तं औ बुझबाय अत्यन्त सरल, सुगम आ सुबोध होएत।

बच्चाक प्रारंभिक शिक्षा जन्मक बादेसँ आरंभ भऽ जाइत छैक आ तेँ जतेक पैघ शिक्षाविद् भेल अछि ओ सभ परिवारकेँ सर्वोत्तम आ पहिल पाठशाला कहलनि अछि। बच्चा विद्यालय जयबाँस पूर्व बहुत किछू परिवासँ अनुकरणकऽ सीखि लैत अछि। ओकरा मन– मस्तिष्क मे घरक या पारिवारिक परिवेशक बहुत रास शब्द अपन शब्दकोश बना लैत अछि। घर आ घरक बहरों ओकरा मातृभाषा सुनबाक या बजबाक अवसर भेटैत छैक आ तेँ ओ अपन बिचारकेँ ओहि भाषामे अभिव्यक्त करबामे सहजता के अनुभूति करैत अछि। अर्थात् मातृ–कदरसँ बहराइते बच्चा जाहि भाषकेँ मायक मुँहसँ बजैत सुनैत अछि तकरे नाम मातृभाषा थिक।

जखन बच्चा पहिले–पहिले विद्यालय जाइत अछि तखन ओकरा लग पन मातृभाषा टा पूँजीक रूपमे रहैत छैक। जँ एकर अतिरिक्त कोनहुँ आन भाषाक प्रयोग होयत तँ बच्चा अकबकायल रहत ओकर बालमन ओझरा जायत। जे बात ओ मातृभाषामे जनैत अछि सेहो आन भाषाक प्रयोएसँ अनचिन्हार भऽ जयतैक। ओ किछु सीखि नहि सकत आ पठन–पाठनक गतिविधिसँ छीह काटत तँ ई बात सत्य जे मातृभाषा अभिव्यक्तिक ओ माध्यम यिक जे शिक्षक ओ शिक्षार्थीक मध्य पुलक काज करैत अछि!

1.1.1 मातृभाषाक रूपमे मैथिली शिक्षणक महत्व

मैथिली भाषा ओ साहित्यक इतिहास अनेक भाषासँ प्राचीन अछि। बिहारक दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सहरसा, पूर्णियां, किशनगंज सहित लगभग बीस जिला मैथिलीभाषी अछि संगहि पड़ोसी देश नेपालक दोसर भाषा सेहो मैथिली थिक! संविधानक अष्टम् सूची मे मैथिलीक स्थान भेटि गेलाक बाद मैथिली भाषाक विकासक आयाम मे अनायासहि अभिवृद्धि भऽ गेल अछि।

सम्पूर्ण शिक्षामे मातृभाषक महत्व सर्वोपरि अछि। प्राथमिक स्तर पर छात्रक सम्पूर्ण शिक्षा मातृभाषाक शिक्षा थिक। अतएव छात्रक सर्वांगीण विकास हेतु मातृभाषा शिक्षण पर विशेष ध्यान देब आवश्यक अछि। देखल गेल अछि जे जाहि छात्रकें मातृभाषाक नीक ज्ञान रहैत छैक आनो–आन भाषा सुगमतासँ सीखि लैत अछि संगहि ज्ञानक भण्डामे वृद्धिक संगहि सिखवाक प्रक्रिया तीब्र भ जाइत अछि।

ऐही सब कारणसँ प्राथमिक ओ उच्च प्राथमिक स्तर पर मातृभाषाक माध्यमे पढ़ायब आवश्यक मानल जाइत अछि, एहिसँ ओकर शैक्षणिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, व्यक्तित्व, सामाजिकताक, काल्पनिकताक, विकास होइछ।

1.1.2 प्रारंभिक ओ उच्च प्रारंभिक स्तर पर मैथिली शिक्षणक उद्देश्य

बिहारक मिथिलांचलक क्षेत्रक विधालयों मे मातृभाषाक रूप मे मैथिली भाषाक शिक्षणक स्थिति अत्यंत चिन्ताजनक अछि। एक दिस कोठारी आयोग आओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 मे शिक्षार्थीक प्रारंभिक कक्षामे शिक्षा माध्यम मातृभाषाक रूपमे प्रयोग करबाक ले प्रोत्साहित करने छल मुद्रा स्थिति विपरीत अछि। राष्ट्रीय पाठयचर्याक 2005 मे स्थानीय भाषा अथवा मातृभाषामे सिखबाक स्वीकार कयल गेल अछि। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 मे स्थानीय भाषा पर जोर देल गेल अछि। बालकक प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा मे देल जाए एही पर बेस जोड़ अछि। अरस्तु प्रारंभिक विद्याय मे मैथिली भाषाक शिक्षण दु रूपये देल जाए पहिल मातृभाषा मैथिली एक विषयक रूपमे तथा दोसर विभिन्न विषयक शिक्षण क्रम मे मिथिलांचल मे प्रचलित भाषा उपलब्ध संसाधनक माध्य से विविध विषय वस्तुक अवधारणा स्पष्ट करबामे।

शैक्षिक उद्देश्य

कोनहुँ स्तरक शिक्षा हो, ओकर मूल अभीवृति होइछ किछु खास लक्ष्य दिस उन्मुख होयब। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा मैथिलीक शैक्षिक उद्देश्यकें निम्नलिखित रूपँ निर्दिष्ट कयल जाएछ–

1. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा– शिक्षणक मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थीक विद्यालयक प्रति आकर्षित करब थिक। नित्यः–क्रिया जकाँ विद्यालय जायब ओकर आदतिमे सम्मिलित भऽ जाइत तथा ओकरा रूचिगर लगैत।
2. पहिने हुनक मौखिक अभिव्यक्तिक क्षमताक विकास करब तदुपरांत लिखित क्षमता विकसित करबाक प्रयास करब।
3. तिरहुता आ देवनागरी लिपिक वर्ण कँ चिन्हबाक योग्यता विकसित करब।
4. स्वर व्यंजन ध्वनि भेदकँ बुझबाक अवगति उत्पन्न करब।

5. वर्ण सभक संयोगसँ सार्थक शब्दक रचनाक सामर्थ्य विकसित करब।
6. छात्रलोकनिमे साधारण वाक्य रचना करबाक कौशल विकतिस करब।
7. शब्दक शुद्ध उच्चारण, पूर्ण विराम अल्पविराम प्रश्नवाचक, विस्मयादि बोधक आदि चिह्नसँ ओकरा परिचित करायब।
8. पठित गद्य ओ पद्यक निहित भावकेँ बुझि समझबाक योग्यता विकसित करब।
9. खिस्साक शैली मे मिथिलांचलक महापुरूषलोकनिक जीवन वृतान्त कहि छात्रमे सदाचार राष्ट्रप्रेम मातृभाषा–अनुराग सदृश्य सद्गुण विकसित करब।
10. अपन पर्यावरण ओ परिवेशक परिस्थिति एवं समाजक संग अनुकूलित होयबाक क्षमता विकसित करब।
11. वाचन द्वारा प्रभावी उच्चारणक योग्यता विकसित करब।
12. श्रुतिलेख एवं चित्रक सहयोगसँ शब्द–सामर्थ्य समृद्ध करव।
13. सुलेख–लेखन द्वारा छात्रक लिपि एवं लेखन क्षमताकेँ ललितगर बनायब।

प्राथमिक स्तर शिक्षाक प्रथम सोपान थिक। शिक्षार्थी जेना–जेना आगाँक वर्ग प्रोन्नति होइत जायत तेना–तेना उपर्यूक्त शैक्षिक उद्येश्य ओकर मानसिक क्षमताक अनुसार क्रमशः व्यापक होइत जायत।

उच्च प्राथमिक कक्षा मे मातृभाषा शिक्षणक उद्देश्य एहि प्रकरें अछि–

1. सुनबक आ पढ़बाक योग्यताक विकास
2. मौखिक आ लिखित अभिव्यक्ति योग्यताक विकास
3. शब्द–सामर्थ्य, तार्किक तथा चिन्तन शक्ति बढ़ायब
4. राष्ट्रीय लक्ष्यक बोध आ ताहि दिस चेतना जगायब
5. भाषाये ओ विशेषतः अचाारणये शुद्धताआ प्रभावकारिता आनब।
6. छात्रक मानसिक तार्किक क्षमताक विस्तार करब आ ओकर अनुभति मे तीव्र बनायब।
7. सोन्दर्यग्ताध्यता, मौलिकता आ सर्जनशीलताक विकास करब।
8. छात्रक मनोभावके उदान्त बनायब आ सद्बृत्तिक विकास करब।
9. मैथिलीक सरल वाक्यक हिन्दी, संस्कृत, और अंग्रेजी मे अनुवादक क्षमताक विकास करब।
10. तिरहुता मे काक्य–रचनाक सामर्थ्य विकसित करब।

उपर्युक्त उद्देश्यक महत्व निम्न कारण अछि

(1) बच्चा कोनहुँ बात मे अपन मातृभाषक माध्यमसँ सहजतापूर्वक बूझि जाइत छैक।

(2) बालक अपन विचार जतेक सुगमतापूर्वक मातृभाषाये व्यक्त कऽ सकैत अछि ततेक कोनहुँ आन भाषक माध्यम से नहि।

(3) ओकरा दोसर भाषा मे बूझबामे मातृभाषा पुलक काज करते छैक अर्थात् एहि माध्यममे ओ दोसरा भाषा के बिना कोनहुँ दिक्कतक सीखि तैल अछि।

(4) विद्याालय अयबासँ पूर्व ओकरा लग जे संचित शब्द–भण्डार रहैत छैक तकर ओ समुचित उपयोग कऽ पबैत छैक।

(5) बालक पर एकाएक अनचिन्हार भाषाक भार ओकरा सिखबामे व्यवधान उत्पन्न करैत छैक आतें पाठक प्रति उदासीनता आबि जाइत छैक।

(6) मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा देला पर ओकरा घर आ विद्यालय दुनू एक समान बुझाइत छैक आओ अपना कें अपनहि परिवेश मे पवैत अछि, जाहिसँ विद्याालयक प्रति जे एकटा भय से दूर भऽ जाइत छैक।

अन्य विषयक अध्यापन मे माध्यम भाषाक रूपमे मैथिलीक उपयोग/शिक्षण

प्राथमिक शिक्षाक सन्दर्भ मे भाषा पाठ्यचर्याक अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग अछि। संवाद ओ संप्रेषणक प्राथमिक कार्यक अतिरिक्त भाषा शिक्षणक सम्पूर्ण क्रिया–कलाप मे माध्यम बनैत अछि एवं अवधारणाक निर्माणमे ओ ज्ञानक सृजनमे मुख्य भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। हमरा लोकनि अपन विचार ओ भावकें तऽ भाषामे अभिव्यक्ति करिते छी संगहि सोचब अनुभव करब आ स्मृतिमे जमा करबाक काज सेहो भाषा द्वारा संभव भऽ पबैछ। भाषा मानव जातिक विशेष सृजन अछि जाहिसँ हमरा लोकनि अन्य प्रजाति से अलग ओ विशिष्ट मानल जाइछ।

एक परम्परागत मान्यता थिक जे पढ़ाई मात्र भाषाक होइत अछि शेष आद्याये विविद्य विषय अबैत अछि। ई मान्यता सत्य अछि कारण भाषा स्वतंत्र विषय सेहो अछि आ विविध माध्यम से हो। बीसीएक 2008मे एहि बातक आवश्यकता पर जोर देल गेल अछि जे विविध विषयक माध्यमक रूपमे भाषा। एन.इ. पी 2020 मे सेहो प्राथमिक स्तरक पढ़ाई बच्चाक मातृभाषामे हुए एहि पर विशेष बल देल गेल अछि ओतवे नहि एहिमे रटन्त प्रणाली न हो अर्थात् समझ विकसित भऽ पाबय ओहि पर विशेष जोर देल गेल अछि।

वास्तव मे प्राथमिक स्तर पर शिक्षार्थीसभकेँ भाषाक अतिरिक्त कोनो विषयक शिक्षण चाहे– गणित, विज्ञान,व पर्यावरण हो मातृभाषामे देल जयबाक चाहि किएकतँ शिक्षार्थी ओही भाषामे जल्द ओ वास्तविक रूपमे सीखि लैत छथि।

संविधानक अनुच्छेद 350 क अन्तर्गत प्रत्येक राज्य कें प्राथमिक स्तर पर मातृभाषामे शिक्षाक पर्याप्त सुविधा उपलब्ध करबाक दिशा मे निर्देश देल गेल अछि। संविधानमे उल्लेखित सिद्धांतक दृष्टिसँ मातृभाषा आओर गृहभाषा कें प्राथमिक स्तर धरि कक्षा शिक्षणक माध्यक भाषा रहबाक चाही।

प्रशिक्षु शिक्षकस अपेक्षा कएल जाइत अछि जे ओ मिथिलांचल क्षेत्र मे गणित, विज्ञान आओर पर्यावरण शिक्षण करैत काल अवधारणा स्पष्ट करबाक लेल बेसीसँ बेसी शिक्षार्थीक भाषा प्रयोगमे लाबथि।

जेना–यूनिट (इकाई) क अवधारणा स्पष्ट करबाक लेल शिक्षार्थीक परिवेशक हिसाबे चूटकी, मुटठी, लप्प, आँजुर, गपसप आदि प्रयोगकऽ सकैत अछि। गणित, विज्ञान, पर्यावरण विभिन्न अवधारणके फलक करबोय मैथिलीक प्रयोग सार्थक आ प्रभावी भ सकैछ जेना पप्पत सुसुम अन्हार, इजोत, उलाएब, पकाएब झरकाएब, तरब, छानब, झोरएब आदि।

1.2.1 **मैथिली नामकरणः–**

मिथिला आदिकालसँ अनेक नामसँ प्रचलित रहल अछि जेना मिथिला तिरभूक्ति (तिरहुत) विदेह, नैमिकानन आदि।

प्रमाणक अधार पर कहल जा सकैत अछि जे प्राचीन मिथिला भाषाक लेल सम्बोधित शब्द अवहट्ठ अथवा मिथिला अपभ्रश छल। महाकवि विद्यापति देसिल बयनाऽ क अर्थ देशीभाषा होइत अछि। अल्फाबेब्म अब्राहमलिंकन 1771 ई मे तिरूहुतिया नामकसँ मैथिली भाषक चर्चा कयलनि। इहो सम्भव अछि जै तिरूहुत देश ओ तिरहुता लिपिक नामसँ तिरहुतिया मेल होअय। 1853 ई मे सर अर्सकिन पेटी सेहो एकरा तिर्हुती संज्ञा देलनि। 1801 ई मे एच.टी.कोलब्रुक एशिआटिक रिसोर्सेज मे मैथिलीके उपजीमसम किंबा डलजीपस यप देलतनि विलियम केरी एकरा डलजीपसम नाम देलनि। सर जॉन बीम्स एकरा मैथिली कहि हिन्दी भाषाक अन्तर्गत मानलनि कवीश्वर चन्दा झा मिथिला भाषा कहलनि। सर जार्ज ग्रिअर्सन 1880 ई मे एकरा मैथिली कहिकऽ स्थिर कयलनि।

1.2.2 मैथलीक विभिन्न रूप

प्रत्येक भाषाक अन्तर्गत अनेक विभाषा रहैत अछि। एहि विभाषा सभमे परस्पर पर्याप्त समानता रहैत अछि। परन्तु कतेको विभाषामे सँ एकेटा विभाषा भाषाक मानक रूप धारणा करैत अछि।

ग्रिअर्सन साहेबक अनुसार मैथिली भाषाक निम्नलिखित सातटा विभाषा अछि–

1. आदर्श मैथिली
2. दक्षिणी मैथिली
3. पूर्वी मैथिली
4. छिका–छिका मैथिली
5. पश्चिमी मैथली
6. जोलही मैथिली
7. केन्द्रीय जन साधरण मैथिली

1. आदर्श मैथिली– उत्तरी दरभंगा, दक्षिणी मधुबनी
2. दक्षिणी मैथिली– (क) दक्षिणी दरभंगा
   (ख) पूर्वी मुजफ्फरपुर
   (ग) उत्तरी मुंगेर
   (घ) उत्तरी भागलपुर
3. पूर्वी मैथिली– (क) पूर्वी पूर्णिया
   (ख) मालदह तथा दिनजपूर
4. छिका–छिकी– (क) दक्षिणी भागलपूर
   (ख) उत्तरी संथाल परगना
   (ग) दक्षिणी मुंगेर
5. पशिचमी मैथिली (क) पश्चिमी मुजफ्फरपुर
   (ख) पूर्वी चम्पारण
6. जोलही– उत्तरी दरभंगा मुसलमानक बोली
7. केन्द्रीय जन–साधरणक मैथिली– (क) पूर्वी सोतिपुराक बोली
   (ख) मधुबनी सबड़ीविजनक निम्नश्रेणीक जातिक बोली

मैथिलीक ऐतिहासिक ओ सामाजिक परिप्रेक्ष्य

भाषाक अपन इतिहास आ भूगोल होइत छैक। भाषा कोनहुँ खास जाति, धर्म, वर्ग लोक नहि होइत अछि। क्षेत्र विशेषक कारणेँ भाषाक स्वरूपमे भिन्नता भऽ सकैत अछि। तहिना व्यक्ति विशेषक कारणे से हो । जेना मिथिलाक राजा बनित गेल अपन धर्मक विषयक अधार पर अपन भाषाक जबरण थोपिते गेल एहि कारण भाषाक भिन्नाताक होयत गेल, जाहिमे सभसँ पैद्य कारण शिक्षाकेँ मानल जा सकैत अछि। शिक्षित वर्गक भाषा एकता सामान्य वर्गक लोकसँ बेसी परिमार्जित होइत अछि। दोसर कारण अछि संगति। जेना जाहि सामाजमे थोड़ व्यक्ति अशिक्षित अछि आ बेसी शिक्षित, समाज मे अशिक्षितों व्यक्तिक भाषा परिमार्जित देखबामे अबैत अछि।

मिथिला क्षेत्रपर बेर–बेर विदेशी–आक्रमण होइत रहल अछि, आ ओ सभ अपन भाषा आ संस्कृतिकेँ जबरन अहिठामक लोकपर थोपैत रहल अछि। एहि सभ काराणें एहि ठाकक शिक्षाकेँ माध्यम कहियो मैथिली नहि भ सकल। मुद्दा एहि ठामक लोक ओकरा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परम्परामे जीवित रखने रहल।

साहित्यकार वर्ग मैथिली लिखैत रहलाह आ क्रमशः छपबैत रहलाह। आइ जे किछु भाषा ज्ञान संबंधी संकट लोकके देखबामे अबैत छैक से सभ समाप्त भऽ गेल रहितैक जँ आरम्भसँ मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षण भेल रहितैक। आई विडम्बना ई अछि जे घरक भाषा किछु आ विद्याालयक भाषा किछु आऔर।

सीताकेँ जगज्जननी जानकी कहल जाइत छनि। हुनक जन्म मिथिलांक धरतीसँ भेल छलनि आ हुनक दोसर नाम 'मैथिली' सेहो छनि। बाल्मीकि रामायण मे सीता आ हनुमानक बीच जे वार्ता अशोक वाटिका मे भेल छलनि ओ लोकभाषा मैथिली छल कारण मिथिलासँ अयोध्या गेलाक बाद तँ कनिये दिनक बाद वनगमनक प्रसंग आयल अछि। तरवन ओ आन भाषा कतऽ सिखलनि हँ एतेक बात सत्य जे वर्तमान जाहि प्रकारक मैथिली बाजल किंबा लिखल जा रहल अछि ताहिसँ ओकर भिन्न रूप होयत

सीमा निर्धारणः

रामायणकालमे मिथिलाक सीमा एहि प्रकारें छल उत्तर मे हिमालय पहाड़, दक्षिण मे गंगानदी, पूरब मे कोशी नदी आ पश्चिम मे गंडक नदी।

"वृहद्विष्णुपुराणक" अनुसारे मिथिलाक सीमा एहि प्रकारें अछि।

"गंगाहिमवतोर्मध्य नदी पंचदशन्तरे।
तैरभुाक्तिरितिन्यातो देशः परम पावन ।।
कोशिकी तू समारम्य गंडकीमधगम्य वै ।
योजनानि चतुर्विशत् व्यायामः परिकीर्तितः ।।
गंगाप्रवाहमारभ्य यावर्द्धयवतं वनम् ।
विस्तारः षोऽश प्रोक्तो देशस्य कुलनंदन।।
मिथिला नाम नगरी यत्रास्ते लोक–विभुता।

कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छाथि–

"गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिश, पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गंडकी, उत्तर हिमवत बल विस्तारा।।
कमला, त्रियुगा, अमृता धेमुरा बागमती कृत सारा।।"

जाहिना भारतक तीन कात पानि आ एक कात पहाड़ अछि तहिना मिथिलाक सेहो, तैं मिथिलाकेँ भरतक नमूना कहल जा सकैत अछि।

महाभारत कालमे मिथिला चार भागमे बटल छल–विराटनगर, अंग, वैशाली आ मिथिला। एकर प्रमाण महाभारत ग्रंथसँ प्राप्त होइत अछि। महाभारतक पश्चात् मगधक राज्यक उदय होइत अछि। मगधक राजा अशोक बऽ प्रतापी भेलाह। बेस राज्य विस्तार कयलनि मुदा कलिंगा युद्धक पश्चात बौद्धधर्म स्वीकार कऽ लेलनि आं बौद्धधर्मी बनयबाक पुरजोर युद्ध आ अभियान चलौलनि। जाहिसँ मिथिलाक गरीब लोभी आ अशिक्षित वर्ग प्रभावित भेल। समाजमे विद्वेषक भावनाक उदय भऽ गेल। एकर बाद मूसलमानक शासन एहि ठामक लोककेँ अपन नियम–कानूनक अन्तर्गत चलबाक लेल बाध्य करैत रहल। तकर बाद अंग्रेजक शासनमे लोक पिसाइत रहल।

मिथिलाक भौगोलिक सीमाक अन्तर्गत पुरना मुजफ्फर, पुरना दरभंगा, सहरसा, चम्पारण, उत्तरी मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, पुणियाँक किछु भाग आ नेपालक रौतहट, सरलाही, सप्तरी मोहतरी, धनुषा, विराटनगर आ मोरंग जिला आवि जाइत अछि।

वर्त्मानमे प्राचीन मिथिला दु भागमे विभक्त भ गेल अछि। नेपालके सात गोट जिला पुर्व मिथिलाक अछि। डॉ० सुभद्र झाक अनुसारेँ मैथिलीक पश्चिममे भोजपुरी, पुरबमे–बंगला, उत्तरमे–नेपाल, दक्षिणमे–मगही भाषाक प्रभाव अछि। अपन निजी क्षेत्रमे मैथिली मुंडा आ संथाली एहि दु गोट अन्य भाषासँ मिलैत अछि। एहि सीमा क्षेत्रक भाषाक संबधमे निर्णय करब कठिन भ जाइत अछि जे मैथिलीक प्रभाव ओकरापर पड़ल अथवा ओकर प्रभाव मैथिलीपर पड़ल।

1.4 मैथिली संरचना : ध्वनि, शब्द, वाक्य :

जाहि माध्यमसँ भाषाक उच्चारण होइत अछि से ध्वनि कहबैत अछि, आ, बिनु शब्दक उच्चारणे भाषा नहि बनि सकैत अछि। मनक भाव बुझयबाक हेतु लोकमे प्रचलित मौखिक–संकेतक स्वरूप भाषा कहबैत अछि, अर्थात् जकरा द्वारा अपन भावकेँ व्यक्त कयल जाइत अछि भाषा कहल जाइल अछि। प्राचीन समयमे भारतक समस्त आर्यजाति एके भाषा बजैत छल, जे भारतीय आर्यभाषा कहबैत छल। पहिने एकर स्वरूप भारत भरिये प्रायः एके छल परन्तु काल–क्रमे परिवर्तित होइत चल गेल।

1.4.1 ध्वनि :

मैथिली सेहो समय–समयपर अपन स्वरूप बढ़लैत रहल अछि। लगभग 800 ई० सँ 1200 ई० धरि एकर जे स्वरूप छल से अवहठ् वा उद्भव कालीन मैथिली कहबैत अछि। विद्यापतिक देसिल बयना यह थिक जे 'कीर्तिलता' आदि मे देखल जाइत अछि। 1200 ई० सँ 1600 ई० धरिक स्वरूप प्राचीन मैथिली कहबैत अछि, 1600 ई० सँ 1800 ई० धरिक भाषा मध्युगीन मैथिली कहबैत अछि। 1800ई० सँ अद्यपर्यन्त नवीन मैथिली कहबैत अछि। नवीन मैथिली सेहो आइ भिन्न–भिन्न स्वरूपक भऽ गेल अछि। मुद्दा एहि सबासँ उपर मैथिलीक एकटा परम्परागत साहित्यक स्वरूप अछि जे मानक मैथिली कहबैत अछि। अन्यान्य भाषा जका मैथिलीमे सेहो मुख्यतः संस्कृतसँ ओ अरवी, फारसी अंग्रेजी आदि भाषा सभसँ बहुतो शब्द लेल गेल अछि।

भाषाकेँ तीन भागमे बॉटल जा सकैत अछि–मौखिक, लिखित आ सांकेतिक। एहि तीनु प्रकारक भाषामे मौखिक भाषा बिना ध्वनिक भइए नहि सकैत अछि। लिखित भाषामे घ्वनि अक्षर द्वारा व्यक्त कयल जाइत अछि। परम्परागत व्याकरणमे ई ध्वनि वर्ण कहबैत अछि आ तकर पूर्ण श्रृंरवला थिक वर्णमाला। प्रायः सभ भारतीय आर्यभाषामे वर्णमाला एके अछि यथा– अ, सँ, ह।

1.4.2 शब्द :

अक्षरक ओ समुह जकर कोनो खास अर्थ हुए ओकरा शब्द कहल जाइत अछि। परन्तु किछु एहनो अक्षरक समुह होइत अछि जकर कोनो खास अर्थ नहि होइत छैक। आ तेँ शब्द केँ दू भागमे बॉटल जा सकैत अछि–सार्थक आ निरर्थक। निरर्थक शब्दसँ व्याकरणकेँ कोनहुटा प्रयोजन नहि छैक तेँ सार्थक शब्दपर विचार करब उचित होयत।

उद्‌गमक आधारपर शब्दक चरि भाग मे बाटल गेल अछि–

(1) तत्सम (2) तद्‌भव (3) देशज आ (4) विदेशज

(1) तत्सम–

जे शब्द संस्कृतसँ बिना विकारक शुद्ध रूपँ व्यवहृत होइत अछि से तत्सम कहबत अछि, यथा – मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, आकाश, वायु जल आदि

(2) तद्‌भव–

संस्कृतसँ आयल ओ शब्द जे मैथिलीमे विकृत वा अपभ्रंश भ प्रयोगमे अबैत अछि तकरा तदभव कहल जाइत अछि, यथा–माय, हाथ, आँखि, कान, देखब, सुनब आदि।

(3) देशज–

जहि शब्दक पता कतहुसँ संस्कृतमे नहि अछि से सभ शब्द प्राचीन आर्य भाषासँ आयल अछि, तकरा सभकेँ देशज कहल जाइत अछि, यथा–बाप, बेटी फड़की, लोटा, ढेकी, बाटी, चिक्कस, मौगी, मनसा आदि।

(4) विदेशज–

आन–आन देशक भाषा सबसँ जे शब्द प्राप्त भेल अछि से विदेशज शब्द कहबैत अछि एकरो सख्या बहुतेक अछि। एहिमे तत्सम ओ तद्‌भव रूप देखबामे अबैत अछि, मुदा आब ओ मैथिलीमे तेना ने पचि गेल अछि जे ओकर तद्‌भव रूप प्रचालित अछि।

जेना– अरबीसँ, किताब, अदना, बाजार, इम्तिहान, तारीख, अदालत, मोकदमा, हाकिम, फकीर आदि

फारसी– दोमान, चक्कू, पातर, हल्लुक आदि

पुर्त्तगाली–कमरा, नीलाम, अलमारी, गोदाम आदि

अंग्रेजी– डाकघर, लालटेम, रेल, बटम, मास्टर (आदि)

1.4.3 व्युत्पतिक आधार पर शब्दक भेद –

एहि दृष्टिसँ शब्दक दू भेद – अव्यय ओ व्यय। अव्यय शब्द ओ थिक जाहिमे लिंग, वचन, कारक किवां पुरूषक कारणे कोनहुँ रूपान्तर नहि होअय आ व्यय शब्द ओ थिक जँ एहि सभ कारणे रूपान्तर होयत अछि।

1.4.4 वाक्य :

सार्थक शब्द सभक ओ समुह जकर किछु खास अर्थ बहराइत होअय तकरा वाक्य कहल जाइत अछि। अर्थात एहन ध्वनि समुदाय जाहीसँ साधन द्वारा कोनहुँ क्रियाक निष्पत्ति साध्यता प्रतीत होइत अछि। अतः वाक्यमे दू खण्ड रहैत अछि– साधन–खण्ड ओ साध्य–खण्ड । जकरा अंग्रेजी व्याकरणमे सब्जेक्ट (subject) आ प्रीडिकेट कहल जाइत अछि, आ प्रचलित व्याकरण सभमे उद्देश्य ओ विधेय।

मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. मातृभाषा रूपमे प्रारंम्भिक स्तर पर मैथिली शिक्षणक उद्देश्य अपन शब्द में बताऊ।
2. बालकक सर्वागीण विकास मे मातृभाषाक महत्वकें प्रतिपादन करू।
3. मातृभाषा शिक्षणक उद्देश्यकें स्पष्ट करू।
4. बालकक प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे होयबाक चाहीं । वर्णन करू।

5. मैथिलीक ऐतिहासिक ओ सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर संक्षिप्त निबंध लिखू।
6. मैथिलीक विशिष्टता से ध्वनि, शब्द ओ वाक्य आधार पर परिचय कराउ।
7. मैथिली संरचनाक आधार पर शब्द कें व्यख्या करू।

इकाई–2

परिचय

बच्चा स्वभावसऽ जिज्ञासु प्रवृत्तिक होइत छथि। तैं कथा वा खिस्सा पिहानी सुनब आ बाजव दुनू हुनका नीक लगैत छनि। बाबा मैया, नाना–नानी आदि लोकनिसँ खिस्सा सुनाबक जिद करय लागैत छथि। घर–आँगन दलान, प्रदर्शनी आदिमे नाना प्रकारक मनोभाव चित्रकेँ देखि आत्मविभोर भजाइत छथि। संगहि ओहि चित्रक कथावस्तुकेँ अपनासऽ ज्येष्टसऽ जनबाक जिज्ञासा प्रकट करैत छथि। ई सब सूनब आ सूनिकऽ दोसराक समक्ष बाजब दूनू हुनका नीक लगैत छनि अधिकांश बच्चामे मास्टर, डाक्टर आ दोसरा लोकनिक व्यवहार आ क्रिया–कलापक, अनुकरण करबाक स्वाभाविक प्रवृति होइत अछि। बच्चाक एहि स्वाभाविक प्रवृत्तिकेँ विकसित कराबक लेल ओकरा पर्याप्त सुअवसर भेटक चाही। एहि तरहेँ बच्चामे सुनबाक आ बजबाक कौशलकेँ विकसित करबाक लेल भाषा प्रमुख साधन अछि जाहि माध्यसे बच्चामे भाषा–कौशलक विकास कयल जा सकैत अछि। जाहिसऽ हुनक पकड़ भाषा पर मजगूत होअय। कथा–कहानी वा खिस्सा पिहानी, चित्र, प्रदर्शनी, अनुकरण, प्रश्नोत्तर, आवृति, वार्त्तालाप, वाद–विवाद वर्ण अभिनय आदि भाषा–कौशलक विकासक मुख्य साधन अछि।

कथा सुनलासँ बच्चाक मोनमे ई बात अबैत अछि जे एकर बाद की भेलैक? ऐना किएक भेलैक? आदि। एहिसँ बच्चामे कल्पनाशक्तिक विकास होइत अछि। तर्क, वितर्क आ सोचबाक क्षमताक विकास होइत अछि, ओ एहि तरहक कथा वा खिस्सा–पिहानी गढवाक तत्पश्चात प्रयत्न करैत अछि। आरंभमे किछु अशुद्धि होईत अछि मुदा क्रमशः हुनक सुनब ओ बजबाक कौशलक विकास होमऽ लगैत अछि।

पाठक पुनरावृत्तिसँ बजबाक क्षमताक विकास होइत अछि। कोनो विषय–वस्तु पर वार्त्तालाप आ वाद विवाद कराकऽ बजवाक कौशल केँ विकसित कयले जा सकैत अछि। पशु–पक्षीक आवाज, नदीक कल कल करैत ध्वनि हवाक सांय–सांय करैत आवाज, पातक खरखराहट शिक्षक, आ नाना नानीक आवाज सुनबाक स्वाभाविक चेष्टासऽ बालकमे सुनबाक क्षमताक स्वाभविक विकास होइत अछि। शिक्षक बच्चाकेँ एहि तरहक क्रिया–कलापक लेल उत्साहित करबाक प्रयास करबाक चाही। ओकर पुनरावृत्ति कयलासँ बजबाक कौशलक विकास होइत अछि।

उदेश्य

- बच्चा भाषाई कौशलक संकल्पना बुझि सकत।
- बच्चाकेँ सुनब आ बजबाक अर्थ बुझा सकब।
- बच्चाकेँ मौखिक अभिव्यक्तिक की थिक? बुझा सकब।
- बच्चामे मौखिक अभिव्यक्ति विकास कोना कयल जाय। बुझासकब।
- कक्षामे बच्चाकेँ सुनबाक आ बजबाक अवसर कोना उपलब्ध होयत ताहि पर विचार कएल गेल अछि ।

भाषा कौशलक संकल्पना

भाषा विकासक यात्रा सभ्यताक विकासक यात्राक संगहि प्रारंभ भेल विभिन्न काल खण्डमे अपन विविध स्वरुपकेँ धारण करैत वर्त्तमान स्तर घरि पहुँचल अछि। सभ समयमे मनुखकेँ अपन मोनक बात, जिज्ञासा आ कौतुहलकेँ एक दोसराक सम्मुख रखबाक आवश्यकता रहैक। अस्तु जाहि माध्यममे अपन बात विचार आ भावक अभिव्यक्ति कयलक ओकरा 'भाषा' कहल जाइत छैक।

भाषा संस्कृतक शब्द 'भाष्' घातुसँ बनल अछि। जकर अर्थ बाजब (मौखिक भाव प्रकाशन) होइत अछि। एहि बातक पुष्टि करैत भाषाविद् डॉ. भोलानाथ तिवारी लिखैत छथि भाषा अपन सोच ओ समझकेँ व्यक्त करबाक सशक्त साधन होइत अछि। मनुक्ख जे किछु सौचेत अछि, विचारैत अछि वा कि जनैत अछि ओ ओकरा अपन भाषाहिक माध्यमे एक दोसराक बीच प्रकट करैत अछि। अपन बात, दोसरासँ तर्क–वितर्क, वाद–विवाद, वार्त्तालाप आदि करैत अछि। अपन बात दोसराकेँ बुझाबैत अछि आ दोसराक बात स्वयं बुझैत अछि। NCF.2005 आ BCF-2008 भाषाकेँ अभिव्यक्तिक माध्यमक संगहि अस्मितासँ जोडैत अछि। कहबाक आशय जे भाषा व्यक्तिके पहचान होइत अछि। किछु अर्थमे भाषा एक तरहक संस्कार सेहो थिक। हमरा लोकिन जेहन होइत छी तेहने भाषा होइत अछि। एहिसँ हमरालोकनिक परवरिश आ संस्कार सेहो झलकैत अछि। एहिद्वारे बच्चासभक भाषायी परिवेशकेँ सुसंस्कृत ओ परिनिष्ठित बनयबाक लेल भाषा शिक्षणकेँ रुचिगर बनयबाक आवश्यकता अपेक्षित अछि।

तें भाषा शिक्षणकेँ सतर्कताक संग करबाक चाहियनि ओकरा सहज ओ स्वाभाविक बनयबाक चेष्टा करक चाहियनि। जाहिसँ बच्चा सभ सहजतासँ अपन वर्गकक्षमे भाषा सिखथि तै सभके अधिकाधिक बजबाक सुनबाक आ गप्प–शप्प करबाक अवसर देब अपेक्षित अछि। बच्चाक योग्यता, क्षमता आ सामर्थ्यक अनुसार पाठ्य वस्तु होयबाक चाही। संगहि संदर्भो ओकरे अनुभव ओ परिवेशानुकूल होयबाक चाही। भय ओ दबावसँऽ नहि। दबाव सऽ बच्चा कॉच–करची जकौँ टुटि जाइत अछि। सीखबाक हुलास खत्मभऽ जाइत छैक। संगहि एक बात आओर वर्णनीय अछि जे शिक्षककेँ स्वंयक भाषाक प्रयोग पर सेहो ध्यान देब आवश्यक अछि। किएक तऽ बच्चा अपन शिक्षककेँ अनुकरण करवामे सभसऽ आगू रहैत अछि।

जाहि माध्यममे (युक्ति) भाषाक अभिव्यक्ति कयल जाइत अछि ओकरा भाषा–कौशल कहल जाइत छैक। बच्चाक पकड़ भाषाई कौशल पर जतेक मजगूत हेतैक ओकर भाषा ततबे शुद्ध, समृद्ध आ प्रांजल हेतैक ताहिद्वारे बच्चामे भाषाक विभिन्न कौशलकेँ विकसित करब आवश्यक अछि। जाहि सऽ ओ अपन भाषामे प्रवीणता प्राप्त कऽ सकय। भाषा सिखबाक चारिटा आधारभूत कौशल क्रमशः सुनब, बाजब, पढब आ लिखब होइत अछि। एहिमे परस्पर समन्वय स्थापित करब भाषा–कौशलक समन्वय कहबैछ। अस्तु भाषाक एकटा कौशलक प्रभाव जखन दोसर कौशल पर पडतैक तखने परस्पर एक दोसराक विकास संभव भऽ सकत। एहि लेल बाजि–बाजि कऽ लिखब बाजि–बाजिकऽ पढब, खिस्सा–पिहानी संवाद, कविता आदिकेँ मनोयोगपूर्वक सुनब तत्पश्चात् प्रश्नोत्तर करब आदि क्रिया एहि लेल उपयोगी होइत अछि। एहि कारणे कहल जाइत अछि जे सही रुपेँ भाषा सिखबाक लेल बच्चामे भाषा–कौशलक शिक्षण आ अर्जन करायब अनिवार्य होइत अछि।

गतिविधि

बच्चामे भाषाई–कौशलक विकासक लेल परिवार, समाज आ श्रव्य–दृश्य सामग्रीक योगदान पर प्रशिक्षूकेँ तीन समूहमे बाँटिकऽ काज करिथ। संगहि प्रतिवेदनक वाचन कक्षामे कराकर प्रशिक्षुसँ विशुद्ध मैथलीभाषाक शब्दकेँ अपन परिवेशसँ संकलनकऽ कक्षा मे वाचन करावथि।

सुनब ओ बाजबक अर्थ

सुनब के संस्कृत भाषा मे श्रवण कहल जाइत अछि। ओ संस्कृतक 'श्रव' धातुसऽ बनल अछि जकर अर्थ सुनब होइत अछि। जन्मक पश्चात बच्चा सबसँ पहनहि सुनबाके स्थितिमे होइत अछि। तेँ ओ शब्दकेँ सुनबाक चेष्टा करैत अछि। शनैः–शनैः उम्रक संग–संग सुनल गेल शब्दक अर्थो बुझय लगैत अछि। मुदा एतय स्पष्ट कऽ देनाई आवश्यक अछि जे सुनब ध्वनि के सुनब मात्र नहि थिक

बल्कि सुनिकऽ अर्थ ग्रहण करब अर्थात् बोधपूर्ण श्रवण होइत। ध्वनिसंकेतक श्रवणक संग–संग ओकर अर्थ ग्रहण करैत जायब होइत अछि। तैं सुनबा मे धैर्य आ एकाग्रता अत्यावश्यक अछि। एहिलेल कहल जाइत अछि जे नीक वक्ता होयबाक लेल नीक श्रोता होयब आवश्यक। चिन्तन–मननक संग उचित आ अर्थ पूर्ण प्रतिक्रिया देब सुनब थिक।

सुनबाक कौशलक विकास बच्चामे एक–दूदिन एक मास, दु मास अथवा एक दु वर्षमे नहि कयल जा सकैत अछि। एकरा लेल सतत् प्रयासक जरुरत होइत छैक। ई ग्रहणात्मक कौशलमे अबैत अछि। बच्चा एहि कौशलकेँ परिवार, पड़ोस आ परिवेशसऽ ग्रहण करैत अछि। जेना–जेना ओकर परिवेश पैघ होइत जाइत छैक तेना–तेना ओकर सुनबाक अवसर विस्तृत होइत जाइत छैक। शिक्षक प्रशिक्षककेँ सेहो बच्चाकेँ सुनबाक लेल पर्याप्त परिवेशक सृजन करबाक चाहियनि। वर्ग–कक्षसँ बाहर चिड़ै–चुनमुनीक कोलाहल, कल–कल करैत नदी आ झड़नाक आवाज, खड़–खड़ाईत गाछक पातक आवाज, नाना प्रकारक पशु–पक्षी आदिक आवाज सुनबाक अवसर देबाक प्रयास करक चाहियनि। जाहिसँ ओकरामे सुनबाक क्षमताक पर्याप्त विकास भऽ सकय। वर्गकक्षक चारदिवारीसँ निकलि प्रकृतिक खुले आँगनमे विचरण करबाक पर्याप्त स्वतंत्रता देब आवश्यक अछि। गिजु भाई होथि आ कि मान्तेसरी सभ एहि बातक समर्थन करैत छथि। कारण सुनब एक स्वाभाविक प्रक्रिया होइत अछि। बजबाक अपेक्षित तैयारी होइत अछि।

खिस्सा–पिहानी, चित्र, गद्य–पद्य वाचन, भाषण, वार्त्तालाप, वाद–विवाद, चर्चा, निबन्ध, गीत, लोकगीत, टी.वी., सिनेमा, टेप रिकार्डर, विडियो आदि उपकरण साम्रगीक माध्यमे बच्चा सुनाबक कौशलक अपेक्षित विकास करैत छथि। विद्यालयक चेतना–सत्रक एहि दिशामे सार्थक उपयोग कयल जयबाक चाही।

सुनबाक अपेक्षित योग्यता

सुनबाक लेल बच्चामे निम्नलिखित दक्षता होयब अपेक्षित अछिः–

1. सुनबाक सम्बन्ध कानसँ होइत अछि। तैं बच्चामे श्रवण–विकलांगता नहि होयबाक चाही।
2. ध्वनिक सूक्ष्म–अन्तर बुझबाक योग्यता।
3. सुनल शब्द ओ वाक्यकेँ सन्दर्भित प्रसंगसँ अर्थ निकालबाक क्षमताक विकास।
4. धैर्य व मनोयोगपूर्वक कहल गेल शब्द अथवा वाक्यकेँ सुनबाक क्षमता
5. ध्वनि–विभेदीकरण आ ओहिमे निहित सूक्ष्म–अन्तर करबाक क्षमता।
6. वक्ताक मनोभावकेँ बुझयमे निपुणता।
7. बच्चामे भाषा–साहित्यक अध्ययनक प्रति रुचि जगाएब।
8. बलाधात, स्वराघात, स्वरक आरोह–अवरोहक अनुसार सुनि कऽ अर्थ निकालब।
9. चित्रमे वर्णित अर्थ आ आशय बुझक क्षमता।

सुनाबक कौशलक उद्देश्य

1. सूनिकऽ अर्थ बुझवाक क्षमता विकसित करब।
2. दोसराक बातकेँ ध्यानपूर्वक सुनबाक क्षमताक विकास करब।
3. ध्वनि विभेदीकरण आ ओहिमे निहित सूक्ष्म अन्तर स्पष्ट करबाक क्षमता वर्द्धन करब।
4. वक्ताक मनोभावकेँ बुझऽमे निपुण बनायब।
5. बच्चाक शब्द–भण्डार, लोकोक्ति, मुहावरा, आदिक भण्डारमे वृद्धि करब।
6. व्यावहारिक जीवनक ज्ञानभण्डारकेँ बढायब।
7. बच्चामे भाषा–साहित्यक प्रति लगाव उत्पन करब।

बाजब

बाजब पढिकऽ अर्थ ग्रहण करबाक कौशलकेँ कहल जाइत अछि। अपन अभ्यन्तरक भाव ओ विचारकेँ दोसराक समक्ष व्यक्त करबाक लेल सार्थक शब्दक प्रयोग 'बाजब' अछि। बाजब (वाचन) पुस्तक पठन मात्र नहि होइछ वरन पढिकऽ ओकरा बुझब आ ओकर अर्थ ग्रहण करब होइत अछि। कहबाक तात्पर्य जे कोनो रचनाकारक रचनामे वर्णित विचार ओ भावक संग तादात्म स्थापित करऽ लेल हमसभ जाहि युक्तिक प्रयोग करैत छी तकरा 'बाजब' कौशल कहल जाइत अछि।

बाजब कौशलक तत्व

1. ध्वनिक प्रतीक वर्णकेँ देखि कऽ पहचानब।
2. वर्णक सार्थक आ तर्कपूर्ण प्रयोगसँ शब्दक निर्माण करब।
3. प्रसंगानुकूल शब्दक भावकेँ बुझब।
4. उचित उच्चारणसँ वर्णकेँ उच्चारित करब।
5. पूर्व संचित ज्ञानकेँ पठित सामग्रीसँ सम्बंध स्थापित करब।
6. पढवामे उचित अन्तराल, आरोह, अवरोह आदिक ध्यान राखब।

बाजब कौशलक विकास

भाषाक एहि महत्वपूर्ण कौशलक प्राप्तिक विकास बच्चामे करबाक अपेक्षित अछि जाहिसँ ओ भाषाक ज्ञानकेँ समृद्ध कऽ सकय। खासकऽ माता–पिता आ शिक्षक–प्रशिक्षककेँ एकरा लेल विशेष ध्यान देबाक चाहियनि। कक्षामे अनावश्यक अनुशासनक नाम पर बच्चाक आवाज नहि दबायल जयबाक चाही। ओकरा कक्षा–कक्षमे बजबाक, गप्प–शप्प करबाक, प्रश्न करबाक, उत्तर देवाक, अपन जिज्ञासा प्रकट करबाक आदिक स्वतंत्र अवसर भेंटब उचित अछि। ताहि लेल शिक्षककेँ हुनका उत्साहित करक चाहियनि। विद्यालमयमे समय समय पर बालगोष्ठी वाद विवाद परिचर्या अन्तराक्षरी आदिक आयोजन आ ओहिमे बच्चाकेँ भाग लेबाक लेल प्रोत्साहित कयलासँ बच्चामे पर्याप्त वाचन–कौशलक विकास स्वाभाविक रुपेँ होमय लागैत अछि। आरंभिक कालमे अशुद्धता, उचित उच्चारण, आ मानक भाषाक सन्दर्भे अधिक टोकाटोकी नहि कयल जाय। ओहिसँ बालमन कुंठित होमय लगैत अछि। हलाँकि मातृभाषाक कक्षामे एहि सन्दर्भे विशेष कठिनाई नहि अबैत अछि। तेँ पहिने बच्चाकेँ बजबाक पर्याप्त अवसर ओ समय उपलब्ध करायल जयबाक चाही। तत्पश्चात् एहि बात पर ध्यान देब आवश्यक जे बच्चा जे किछु बाजय ओ शुद्ध उच्चारणक संग बाजय। कारण प्रारंभिक कक्षामे एहि पर ध्यान नहि देल जायत तऽ बादक स्थितिमे बच्चा आ शिक्षक दूनुगोटेकेँ एहि समस्या सऽ पार पावयमे विशेष मशक्कत करय पड़तनि। एहिलेल तृतीय कक्षाक बच्चाकेँ आरंभिक अवस्था सँ प्रयत्नशील करय पड़त। शिक्षक सेहो कक्षामे शुद्ध उच्चारणक संग बाजथि किएकतऽ बच्चा अनुकरण करबामे सभसँ आगू रहैत छथि।

जहाँतक मातृभाषा मैथिली भाषाक शिक्षणक सवाल अछि तऽ बच्चाक विद्यालयमे प्रवेश ओकर मातृभाषा अथवा परिवेशक बोलीक (स्थानीय भाषा) संग होइछ। विद्यालय परिसर अथवा पहिल कक्षामे बच्चा मैथिलीक स्थानीय बोली, जे मैथिली भाषाक स्थानीय स्वरुप होइत अछि ओकरेबजने चलि जाइत रहैत अछि। एतय मैथिली भाषाक शिक्षकक परम दायित्व होइते छन्हि जे ओ मानक मैथिली भाषाक नाम पर बच्चाकेँ टोकिऽ तत्काल हतोत्साहित नहि करथि। कारण मैथिली अपन निर्धारित भौगोलिक सीमा मे कतेको स्वरुप ग्रहण कयने अछि। तेँ बच्चाक मैथिली भाषाक स्थानीय स्वरुप केँ स्वीकार करथु, ओकर अस्मितक रक्षा करथु तत्पश्चात् शनैः–शनैः बच्चाकेँ मैथिलीक मानक स्वरुप

दिस अग्रसर करथु। ई स्वाभाविक प्रक्रिया भेल। हँ, प्रशिक्षू आ शिक्षक विद्यालय परिसर ओ कक्षा विनिमयनक अवधिमे स्वयं शुद्ध आ स्पष्ट उच्चारणक संग भाषाक प्रयोग करथु। हुनकेसँ सुनिकऽ बच्चा स्वयंमेव शुद्धआ मानक मैथिली सिखऽ लागत। एहि प्रकारेँ ओकर अभिव्यक्ति खुजतैक आ ओकर चुप्पी पर विराम लगतैक। विद्यालयक चेतना सत्रक उपयोग एहि दिशामे सार्थक रुपेँ कयल जा सकैछ।

बजबाक कौशलक उद्देश्य

1. अपन अभ्यतरक भाव, विचार ओ अनुभवकेँ सरलतापूर्वक स्पष्ट ढंगसँ व्यक्त करबाक योग्य बनायब।
2. शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर ओ गति एवं हाव–भावक संग बाजबक सम्प्राप्ति।
3. विषय आ अवसरक अनुरुप बजबाक योग्यताक प्राप्ति।
4. धाराप्रवाह बजबाक क्षमताक विकास।
5. वाक्यकेँ उचित अर्थान्वितिमे बॉटिकऽ बाजब।
6. चित्रात्मक भाषाकेँ बुझबामे निष्णात करब।
7. संदर्भानुकूल श्लोकपाठमे सक्षम बनायब
8. छन्द ओ भावानुकूल श्लोक पठनमे सक्षम बनायब।
9. मौन वाचन द्वारा स्वाध्यायक प्रवृति जाग्रत करब।
10. चर्चोपरान्त पूछल जायबला प्रश्नक उत्तर देबामे सक्षम बनायब।

11–संवादक दौरान दोसराक विचारक विश्लेषण करैत अपन बातकेँ प्रभावपूर्ण ढंगसँ सभहक समक्ष राखब।

12–बजबामे विरामचिन्हक ध्यान राखब।

13–बच्चा सभकेँ वैयाकरणिक भाषाक प्रयोग करब सिखायब।

सुनब आ बाजबमे सहायक श्रव्य–दृश्य सामग्री

आजुक युग सूचना प्रोद्योगिकीक युग अछि। एकरा बिना आइ मनुक्ख अपनाकेँ अधूरा ओ असहाय महसूश करैत अछि। कोरोनाकालतऽ सूचना–प्रोद्योगिकीक लेल वरदान बनिकऽ आयल अछि। आई सभ गोटे आई.सी.टी.क प्रयोग हड़सठे कऽ रहल छथि। तेँ आई–काल्हि पठन–पाठनमे सूचना–प्रोद्योगिकीक प्रयोग युगधर्म बनि गेल अछि। दीक्षा एप्प एकर उदाहरण अछि। अस्तु, शिक्षक–प्रशिक्षक सभकेँ चाहियनि जे ओ बच्चामे सुनबाक आ बजबाक कौशलक विकासक लेल आइ. सी.टी. उपकरणक हरसठे उपयोग करथि। बालक तऽ एहिमे वयस्को सँ आगू छथि। स्वअभ्यासक माध्यमे ओ एहिमे महारथ पाबि जाइत छथि। तेँ सुनब आ बाजब कौशलक विकासक लेल निम्नलिखित वर्णित आई.सी.टी. उपकरण उपयोग कक्षा कक्षमे कयल जेबाक चाही।

1. **डेस्कटॉप आ लैपटॉप –** कक्षामे लैपटॉपक उपयोग कऽ द्वारा विभिन्न एप्प पर उपलब्ध व्म्प्त सँ बच्चामे ऑन–लाईन (पाठ्य–सामग्रीक) सुनबाक आ बजबाक विकास कयल जा सकैछ।
2. **मोबाइल –** अहुक माध्यमे बच्चाकेँ सुनबाक आ बजबाक लेल उत्साहित कयल जा सकैछ। चाहे ओ वार्त्तालापक माध्यमें होअय अथवा गूगल सर्चकऽ सन्दर्भित पाठ्यवस्तुकेँ सुनब आ बाजब होअय।

3. **टेपरिकॉर्डर** – एहि माध्यमसँ बच्चाकेँ रिकार्ड कयल गेल भाषण वार्त्तालाप आ समसामयिक चर्चा सुनाकेँ सुनबाक कौशल बढायल जा सकैछ। फेर ओहि बातकेँ हुनका अपन संगीसाथीकेँ सुनाबय लेल कहिकेँ हुनक वाचन कौशलकेँ समृद्ध कयल जा सकैत अछि।
4. **टेलीफोन** – टेलीफोन पर बच्चाक बातचीत सुनि शिक्षक ओकर मौखिक अभिव्यक्तिक त्रुटिक निराकरण कऽ सकैत छथि।
5. **टेबलेट** – टेबलेटक माध्यम सँ बच्चा शिक्षकक निर्देशनमे अपन सुनबाक ओ बजबाक कौशलकेँ विकसित करबाक अभ्यास कऽ सकैत अछि।
6. **प्रोजेक्टर** – आई.सी.टी.क एहि उपकरणक इस्तेमाल विद्यालयसभमे कमोबेश हड़सठे भऽ रहल अछि। एहिसँ बच्चाक कैतुहल आ जिज्ञासाकेँ बढा स्वाभविक रुपसँ ओकर एहि दूनु कौशलक विकास आसानी सँऽ कयल जा सकैछ।

एकर अतिरिक्त ह्वाइट डिजिटल बोर्ड, आईपॉड, पम्पलेट्स, माइक्रोफोन, कम्प्यूटर, पेनड्राइव आईपैड्स डी.वी.डी. आ सी.डी., विडियो गेम्स आदिक उपयोग कयल जा सकैछ। एहि संद्धर्भे एक बात बुझिनय आवश्यक अछि जे आइ.सी.टी.क उपयोग कयलासँ शिक्षण अथवा सिखाबयक प्रक्रिया शिक्षक–केन्द्रित सऽ बालकेन्द्रित भऽ जाइत अछि।

गतिविधि

दृष्टान्त –1

दरभंगा जिलाक टटुआर गॉव, लोकसभ घर–आँगनक साफ–सफाई करऽमे पिछला पॉच छः दिनसँ लागल छथि। बच्चा सभ बाँसक करचीमे बाँसक खपलोईया गाँथि–गाँथि कऽ सुखावैमे व्यस्त अछि। बूढ लोकसभ खरक ऊक बना रहल छथि गाहे बगाहे पटाखाक शोर रहि–रहि कऽ गामक शान्तिकेँ भंगकऽ रहल छल। शिवम नामक बच्चा शहरसँ छुट्टीमे गाम आयल अछि। ओ ई सभ देखि जिज्ञासु होइत जा रहल अछि जे एहि तरहक सरयजाम कोन पाबनिमे होइत छैक। कारण ओ जाहि वातावरण मे रहैत अछि ओतय घर–आँगनकेँ नीपब, बच्चा सभहक हुक्कालोली खेलब आ ऊका फड़वाक प्रचलन प्रायः नहि होइत छैक। दिनक सात बाजि रहल छलैक ओ अपन जलखई छोडि अपन बाबा लीला बाबूक संग पछोड़ धरैत दलान पर पहँचि गेल आ पुछलक जे बाबा गाममे कोन पाबनि हतैक जे नेना भुटका सऽ लड़कऽ बूढ तक पुरुषसऽ लऽकऽ महिला तक सभ अपश्यात बुझाइत छथि ? लीलबाबू कहलथिन जे दु दिनक बाद दीयाबाती पाबनि हेतैक ताहि द्वारे सभजन अपन–अपन काजमे लागल अछि। बाबाक बात खत्मो नहि भेलन्हिकि शिवम पूछि देलकन्हि जे दीयाबाती किएक ओ कोना मनायल जाइत अछि।

बाबा कहलखिन जे दीयाबती मिथिला नहि सम्पूर्ण भारतवर्षक एक महान पर्व अछि। एकर प्राचीनता रामराजसँ अछि जखन मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्री राम रावण सन राक्षसकेँ सहारकऽ चौदह वर्षक वनवाससँ भाई लक्ष्मण आ पत्नी सीताक संग अयोध्या आपस अबैत रहथि तखन हुनक स्वागतमे घर–बाहर सभठाम दीप मालिका सजाओल गेल रहय। ताहि दिनसँ दीयाबाती मनयबाक प्रचलन अछि। ओ दिन अछि कातिक मासक अमावस्या तेँ ई पावनि अन्धकार पर प्रकाशक, असत्य पर सत्यक आ अनैतिकता पर नैतिकताक विजय पर्व थिक। एहि पावनिसँ संदेश भेटैक छैक जे अन्धकार कतबो प्रभावशाली किएक नहि हो मुदा ओकर पराजय निश्चित छैक। विजय सत्येटाक होइत एलैक अछि, आ होइत रहतैक।

कातिक मास आबिते दीयाबातीक, हेतु सभ जाति–वर्ग लोक अपन–अपन सुविधा आ अर्थक हिसाबसँ तैयारी शुरु कऽ दैत छथि अमीर गरीब, पैध छोट, कनिया मनिया आदि सभ घर आँगनक

साफ–सफाई करैत छथि। साल भरिक कूडा–कचड़ा घर सँ बाहर कऽ एकदम चिकन– चुनमुन बना दैत छथि। घर–आँगन अयना जकाँ चमचम करऽ लगैत अछि।

बच्चा सभ उत्सुकतसाँ दीयाबातीक प्रतीक्षा करैत रहैत अछि। पहिनहिसँ बाँसक कोपडसँ निकलल सुखायल मोटका पत्ताकेँ कराँचीमे गाँथि कऽ रखैत अछि आ दीयाबाती दिन ओकरा जराकऽ भँजैत अछि। किछु बच्चासभ लत्ताक गेन्द जकाँ बना कऽ तारसँ बान्हि मटियातेलमे डुबा दैत छथि आ ओकरे रातिमे जराकऽ भँजैत छथि आ उत्साहित भऽ बजैत छथि मटिसत हुक्कालोली हुक्कालोली। नेनासभ फुलझड़ी जरायबमे मस्त रहैत अछि। घरक बुढ़ अथवा जेठ सदस्य ऊक फेरि अन्न–घन लक्ष्मीकेँ घर अनैत छथि आ दरिद्राके घर सँ बाहर करैत छथि। उत्साहित नेना–भुटका सभ दीप जराकऽ घर–आँगन, दूरा–दरबजा आ मन्दिर पर रखैत अछि। ओकरा सजबैत अछि। रंग–बिरंगक फटाका, फूलझाड़ी, आलूबम, लहसूनबम, चटाईबम, आकाशतारा, अनार आदि छोडैत अछि। चारुकात उल्लासक वातावरण पसरल रहैत अछि। कतेक लोक फटाका फोड़वाक क्रममे दुर्घटनाक शिकारो भऽ जाइत छथि। एहिसँ बचक चाही। फटाकाक दारुण आवाजसँ कतेको बीमार लोकक हृदयक धड़कन बढि जाइत अछि। तेँ एहि सभ समस्यासँ बचाबक लेल सरकार दिससँ इकोफेन्डली दीयाबाती मनायबाक अपील कयल जाइत अछि बच्चासभके कमसँ कम फटाका छोड़बाक चाही आ सेहो अपन अभिभावक संरक्षणमे जाहिसँ ध्वनि आ वातावरण प्रदूषण कम होय। दीयाबातीसँ पहिने धन्वन्तरि जयन्ती मनाओल जाइत अछि। जकरा धनतेरस कहल जाइत अछि। एहि दिन सबपरिवारमे किछुने किछु नव बरतन–वासन कीनल जाइत अछि। नव नव बरतन कीनबाक परम्परा पूर्वहिसँ अछि।

दीयाबातिक राति सेठ–साहूकार, कारोबारी, व्यापारी, दूकानदार सभक हेतु अपन व्यवसाय शुरु करबाक बहूत शूभ तिथि होइत छैक। एहि दिन गणेश–लक्ष्मीक पूजा व्यपारी आ करोबारी धूम धाम से करैत छथि। संगहि पुरान खाता–बही छोड़ि नव खाता–बहीक शुरुआत शुभ–लाभ लिखि करैत छथि। एहि पर्व मनयबाक पाछु दोसरा तर्क ई देल जाइत अछि जे एहि दिन लक्ष्मीक आगमन होइत छन्हि। तेँ करोबारी आ व्यापारी लोकनि नवीन खाता बहीक शुभारंभ करैत छथि। आ सभ अपन–अपन घर द्वारिकेँ साफ–सुथड़ा कऽ दीप जरा कऽ चमकेने रहैत छथि जे हूनका घरमे लक्ष्मीक आगमन होइन।

एहिलेल विभिन्न क्षेत्रमे भिन्न–भिन्न प्रकारक व्यवहार देखल जाइत अछि। कतहु रातिमे सूप डेंगाओल जाइत अछि तऽ कतहु रात्रिजागरण कयल जाइत अछि। लक्ष्मीक प्राप्तिक हेतु लक्ष्मीजीक पूजा–अर्चना कयल जाइत अछि। तऽ ओहि पर अंकुश लगएबाक हेतु वा सद्बुद्धि प्राप्त करबाक निमित्त गणेशजीक पूजा कएल जाइत अछि एहि दिन काली पूजाक दिन सेहो रहैत अछि। तें तांत्रिक लोकनि सेहो अपन सिद्धि हेतू जप, ध्यान, योग आदि विभिन्न रीतिएँ पूजा अर्चना करैत छथि।सिद्धि प्राप्ति करैत छथि।

भारतवर्षेटामे नहि पड़ोसी देश नेपाल, बंगलादेश, पाकिस्तान आदिमे सेहो दीयाबाती मनाओल जाइत अछि। आई काल्हि ई देखबामे अबैत अछि जे वातावरणक साफ–सफाईक दृष्टिकोणसँ सभ धर्म आ सम्प्रदायक लोक एकरा मनबैत छथि। भले ओकर रुप जे होइक। सभ आपसी भेदभाव बिसरि कऽ एहि उत्सवमे शरीक होइत छथि। वैमनस्यताके विसरि उल्लासित होइत छथि। आपसी भाईचारा आ प्रेमक प्रर्दशन करैत छथि। देशक प्रायः सभराज्यमे कोनो ने कोनो रुपेँ दीयाबाती मनाओल जाइत अछि।

शिवम् बाजि उठल बाबा एहि पावनि मनायबामे उल्लास छैक समाजक लेल सन्देशो छैक आ गाँधीजीक द्वारा बताओल गेल स्वच्छताक महत्वोंसँ लोक परिचितभड जाइत अछि। बहुत नीक अछि इ दीयाबाती। '' हमहूँ अपन बहिन अपराजिता आ अंकिता संग दीयाबाती मनायब बाबा।

अहाँ सुनलहूँ तऽ बाजु

कक्षा में शिक्षक दीयाबातीक एहि विविरणक वाचन स्वय करथि। तत्पश्चात् प्रश्न पूछि बच्चाक सुनबाक आ बजबाक कौशलक प्राप्तिक मूल्यांकन करथि।

1. दीयाबाती कोन तिथि के आ कोन मासम मनाओल जाइत अछि?
2. दीयाबाती किएक मनाओल जाइत अछि?
3. दीयाबातीक इ कथा के सुनौलक आ किनका सुनेलक? नाम बाजू।
4. भारतक अतिरिक्त आर कोन देशमे दीयाबाती मनाओल जाइत अछि?
5. दीयाबातीक अतिरिक्त मिथिलाक आन आन पावनिक नाम बताऊ?
6. अहाँ दीयाबाती कोना मनबैत छी? बाजू।
7. शिवम् ककरा संग मिलिकऽ दीयाबाती मनाओत? बाजू।

नोटः– जँ बच्चा सभ प्रश्नक उत्तर सही–सही दऽ दैथ तऽ बुझू जे हूनका में सुनब आ बाजब दूनू कौशलक अपेक्षित विकास भऽ रहल अछि नहि तऽ प्रयासक आवश्यकता अछि।

शिक्षार्थी शिक्षकक मौखिक क्षमताक विकास

मनुक्ख पहिने मौखिक अभिव्यक्तिक माध्यमे अपन भाव, विचार आ बातके दोसराक समक्ष व्यक्त कयलक। समयक संग आगू अभिव्यक्तिक दोसर माध्यम सेहो अस्तित्वमे आयल। मुखसँ अर्थात् मुहसँ आ अभिव्यक्तिक अर्थ अछि, व्यक्त अथवा प्रकट कएनाई। अस्तु मनुक्ख जखन अपन बातके मूहसँ बाजि कऽ दोसरा पहुचाबैत अछितऽ ओकरा मौखिक अभिव्यक्तिक संज्ञा देल जाइ अछि। सम्प्रेषणक आन माध्यमक उपेक्षा वाणी द्वारा कयल गेल अभिव्यक्ति सार्वाधिक सरल सहज आ स्पष्ट होइत छैक। सुविधाजनक सेहो होइत अछि। भावक सम्प्रेषण आनो तरहेँ यथा आँगिक लिखित ओ सांकेतिक माध्यममे सेहो कयल जासकैय। जतय आंगिक ओ संकेतक द्वारा न्यून मात्रक भावक सम्प्रेषण होइछ ओतय लिखित आशक प्रयोग सदिखन करबामे बाघा उत्पन्न होइछ। एहि कारणे त्वरित ओ प्रभावी सम्प्रषणक लेल वाणीक प्रयोग सर्वाधिक करब स्वभाविक आ सुविधाजनक होइत छैक। लोक हड़सठे एहि माध्यममे अपन विचारक सम्प्रेषण करैछ। मुदा एकर प्रयोग करबामे किछु सावधानी सहो बरतऽ पडैत छैक। अन्यथाक स्थिति मे अर्थक–अनर्थो भऽ जाइत छैक, हास्यास्पद ओ शर्मनाक स्थितिक सामना सेहों करऽ पड़ैत छैक। वाणीक उचित प्रयोग लाभकारी होहछ आ अनूचित प्रयोग हानिकारक भऽ जाइत छैत लोंकके अपन बात कहेँ भवेक ओ विचारके तार्किक क्रमे कलात्मक ढंग सऽ अपन वाणीक माध्यममे व्यक्त करक चाहि।

मौखिक अभिव्यक्तिक आवश्यकता

मौखिक भावक आवश्यकता मनुक्खकेँ दू कारणे होइत

1. अपन बात विचार आ भावके मोखिक रुपसँ दोसरका समक्ष रखबाक लेल
2. दोसरका बात विचारकेँ सूनिकऽ ओकरा अर्थपुर्ण ढंगसँ ग्रहण करब अथ्वा बुझब।

मौखिक अभिव्यक्तिक उद्देश्य

1. अपन बात विचार के दोसरा तक पहुचेनाई।
2. बजबामे शुद्ध आ सन्दर्भानुकूल भाषाक प्रयोग।
3. शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित विराम दकेँ आ उचित लयमे बाजबामे निपुण बनायब।
4. बच्चाकेँ व्याकरण सम्मत भाषाक प्रयोग सिखेनाई।

5. विषायुक्तकूल व प्रसंगानुकूल बजाबामे दक्ष करब।
6. बच्चा कँ निःसकोच आत्मविश्वासक संग धारा प्रवाह बाजबामे सक्षम बनायब।
7. भाषा प्रयोगमे शुद्धता सरलता आ बोधगम्यता विषयानुकूल सिखायव आदि।

मौखिक अभिव्यक्तिक विशेषता – मौखिक अभिव्यक्तिक निम्नलिखित विशेषता होइछः–

1. मौखिक अभिव्यक्ति सरल सहज ओ बोधगम्य होइत अछि।
2. श्रोताके बुझबमे विशेष कठिनाई होइत छैक। बशर्ते ओकर अद्यिगम क्षमता अनुकूल होय।
3. मौखिक अभिव्यक्ति मनुक्खक स्वभाविक क्रिया थीक।
4. तथ्यों कँ क्रमानुसार स्पष्टरुपें समायोजित कऽ बजबा में आसानी होइत।
5. वर्त्तालापक क्षमतामे वृद्धि होइत छैक।
6. मौखिक अभिव्यक्तिमे सर्वमान्य भाषाक प्रयोग हेबाक अपेक्षित अछि अप्रचलित ओ क्लिष्ट शब्दक प्रयोगसँ अभिव्यक्तिक अर्थ दुरूह भऽ जाइत छैक
7. अभिव्यक्तिक ई रुप आन कोनो माध्यमक अपेक्षा सर्वाधिक प्रचलितरुप अछि। सभ अपन विचारके लिखित रुपे नहि प्रकट कऽ सकैत अछि।
8. मैखिक अभिव्यक्ति सँ एक दोसरका विचार जानिकऽ लोग समाजिकऽ भऽ जाइत अछि।

मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण विधि

1. वर्त्तालाप एहिसँ मौखिक अभिव्यक्तिक विकास होइत अछि धीरे धीरे बच्चाक बजबाक क्षमता परिमार्जित होइत तें शिक्षक प्रशिक्षक कें बच्चाके अधिकाधिक बातचीत करबा लेल उत्साहित करक चाहियनि।
2. सस्वरवाचन बच्चाकें जोर जोर सँ पाठक सस्वरवाचन करयबाक चाही जाही से हुनक झिझक आ संकोच समयक संग कम होइत जाइके वाणीदोषमे सुधार होइत।
3. कथा वाचन छोट बच्चाक मौखिक अभिव्यक्तिमे शिक्षक आ अभिभावक द्वारा कथावाचनक उपयोग विशेष उपयोगी होइत अछि। नेना भुटकाकहानी सुननाई ।विशेष पसंद करैत छथि। तें हुनका अधिकाधिक कहानी आ खिस्सा पिहानी सुनक अवसर भेंटक चाही जाहीसे ओंकर मौखिक अभिव्यक्तिक क्षमतामे वृद्धि होयह।
4. प्रश्नोतर प्रश्नकं उत्तर देबाकलेल विद्यार्थीके विशेष प्रोत्साहित कयल जयवाक चाहि जाहि से शिक्षकउत्तर अशुद्धिक शुद्ध क बच्चाके मौखिक अभिव्यक्तिक सही क सकथि
5. कविता पाठनः कविता पाठ कयला से बच्चा काव्यपाठन में लय छन्द गति आदि में निरंतर सुधार होइत जाइत अछि।
6. पैनल चर्चा पनैल चर्चा माध्यम से निधारित विषय छात्रक समूहमे बॉटिकऽ ओहिपर चर्चा करेलासँ बच्चाक मौखिक अभिव्यक्तिक मे निरन्तर निखार अबैत अछि
7. चित्रर्वणन बच्चा चित्र देखिकँ ओहिमे वर्णित विषय पर चर्चाकऽ अपन मौखिक अभिव्यक्तिके पृष्ट कऽ सकैत। आछि

मौखिक अभिव्यक्तिक विकास आदर्श स्थिति

प्रशिक्षुकें बच्चाक मौखिक अभिव्यक्ति क्षमताक विकासक लेल निम्नांकित स्थितिक सृजन करबाक चाही।

1. शैशवास्थाहिसँ बच्चाक बजबाक लेल प्रोत्साहित करक चाहि।

2. बजबाक अधिकाधिक अवसरक सृजन कयल जाय जाहिसँ। ओकर मौखिक अभिव्यक्ति में उत्तरोत्तर सुधार भऽ सकें।
3. शुरुआती दौर मे बच्चाक के उच्चरण आ अशुद्ध पर विशेष ध्यान नहि देल जाय। ओकरा शुद्ध अशुद्धबजबाक पर्याप्त स्वतंत्रता देल जाय।
4. समयकसंग बच्चा जेना जेना पैध होइत जाय ओकरा अन्य लोक संगे वार्तालाप करक अवसर भेटक चाहिं जाहि सह ओकरा में मौखित अभिव्यक्तिक शुद्धता अजेतैक।
5. विभिन्न तरहक प्रतियोगिता यथा भाषण, वाद–विवाद संवाद नाटक राकल से कथा वाचन आदि आयोजन विद्यालयमे शिक्षकके समय समय पर करक चाही।
6. स्नेहिल व आत्मीय वातावरणक सृजन कयल जाय जाहिमें बच्चा बेबाक रुपसे अपन विचारकें व्यक्त कऽ सकय।
7. बच्चा संयमितरुपें से अर्थपुर्ण ढंगसे अप्पन बात राखि सकय ताहि लेल प्रशिक्षकक स्नेहिल समर्थन आ स्वतंत्रता देब आवश्यक अछि।

उच्चारणके प्रभावित करयबाला कारकः

प्रत्येक व्यक्ति मे वैयक्ति भिन्नता प्रतिनिधित्व करैत अधि ताहिकारणें लोंकक उच्चारण भिन्न भिन्न होइछ ओकर उच्चारण मौखिक अभिव्यक्तिक स्वरुप के बिगाडि द्वैत अछि। उच्चारण ध्वनिकआधार पर कयल जाइत अछि ध्वनिक अभाव मे भाषा ज्ञान भऽ सकैछै आ ने ओकर ठीक ढंग से बुझल जा सकैछ अस्तु उच्चारण`प्रभावित करऽ बाला कारक निम्नलिखित अछिः–

1. **जैविक कारक –** भाषाक उच्चारण करब आ ओकरा बुझबाक लेल । स्वस्थ्य स्नायु आ वाक्तंत्र आवश्यकता होइत अछि बच्चाक स्नायु आ वाक्तंत्र बनावट व कार्ज करक शैली सही हेतैक ओकर उच्चारण सही होयत।
2. व्यक्तित्व प्रत्येक मनुक्खक शारीरिक संरचना आ व्यक्तित्वमे स्थितिय कमोबश विभिन्नता पाओल जाइतँ अछि जाहि स ओकर उच्चारणमे विभिन्नता पाओल जाइत अछि।
3. मनोवैज्ञानिक कारकः जे व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूपें संतुलित होइत छथि हुनक उच्चरण शुद्ध आ सटीक होइत अछि।
4. भौगोलिक तत्व– क्षेत्रवाद आ प्रान्तवादक असर सेहो उच्चारण पर देखल जाइत अछि क्षेत्र विशेषक जलवायु रहनसहन संस्कृति बोली आदिक प्रभाव व्यक्ति पर साक्षात होइत मैथिली एहिसँ सेहो अक्षुण्ण नहिं अछि विशुंद्ध मिथिला क्षेत्रक व्यक्तिक उच्चारण श्रवणीय होइत अछि। शुद्ध मैथिली भाषा सुनबाक अवसर भेटैत अछि। परंच किछु दूरी पर ओकर स्वरूप बदलल भैटत अछि।
5. सामाजिकतत्व मनुक्ख सामाजिक प्राणी होइत अछि समाजेमे रहिकऽ बच्चा भाषा सिखैत अछि। जाहि समाजमे जाहितरहक भाषाक उच्चारणक चलन रहैछ बच्चा तदनुरुप अनुकरणकऽ ओहि भाषाक उच्चारण सीखि जाइत अछि। जेना नेपालमे स'क के स्थान पर श' क प्रयोग हड़सठे होइत अछि।
6. दूरी कहल जाइत अछि जे छः कोस पर भाषा बदलि जाइत अछि जँ भाषा बदलत तऽ ओकर उच्चरणों प्रभावित हेतैक।

एकर अतिरिक्तों अन्यान्य कारक सभ अछि जे उच्चारणकें अपन गिरप्फ्तमे लऽ लैत अछि। शिक्षककेँ एहिसँ बच्चाकेँ सावधान करक चाही।

उच्चारण दोष :

1. जिह्वा के रोकिकऽ अक्षरकेँ दबाकऽ बाजब।
2. तालु आदि उच्चारणक स्थान पर अत्यधिक बल दऽकऽ बाजब।
3. अक्षर आ शब्दकेपूर्ण उच्चारितनहिकरब।
4. नासिकसँ बाजब।
5. जल्दी–जल्दी बजाबमे शब्दक गलत उच्चारणकऽ नहि करब।
6. अन्यवाश्यकरुपेँ देरी कऽके बाजब।
7. अटकि अटकिकें बाजब।
8. शब्दक वर्णके उलटि पुलटि कऽ बाजब।
9. शब्दलाधँवक प्रवृति।
10. सुर ,लय ,बालाघात ,यति ,आरोहि, अवरोहिक, बजबाक क्रमे गलत प्रयोग।
11. स्नायु तंत्र मे त्रुटिक करण हकलाकऽ आ तोत लाकऽ बाजब।
12. स्थानीय बोलीक प्रभाव।
13. अर्थक भावक संग नहि बाजब।

एकर निवारणक लेल निम्नलिखित उपाय कयल जा सकैछः–

1. उच्चारणक अभ्यास कराओल जाय
2. उच्चारणक प्रति बच्चा के साकांक्ष कलय जाय
3. ध्वनि वर्ण ह्रस्व आ दीर्घक समुचित ज्ञान कराओल जाय।
4. मौन–वाचनक अपेक्षा बच्चाक सस्वर वाचन करयल जाय।
5. प्राथमिक कक्षाहिसँ बच्चाक उच्चारणपर ध्याान देल जाय
6. बच्चा के भाषाण वाद विवाद परिचर्या गोष्ठी आदिमे भाग लेबक लेल उत्साहितकयल जाय।
7. वाणीदोषसँ युक्त बच्चाक शुद्ध उच्चारणक अभ्यास कराओल जाय।
8. बच्चा अपन संगतुरिया संगे खुलिकऽ बात करय।
9. विद्यालय में भाषाक प्रयोगशाला स्थापित कयल जाय।
10. जाहि बच्चामें वाणीदोष हो ओकरा लेल ससमय चिकित्सकीय परामर्श आ उपचारक व्यवस्था कयल जाय।

एहि तरहेबच्चाक उच्चारण दोषक निवारण कयल जयबाक चाही। मुदा ई प्रक्रिया स्वभाविक रुपेँ चलय तऽ बढ़ियाँ। जाहिसँ बच्चाके बुझाइ नहि पडैकजे ओ कक्षाक समान्य बच्चा सँ अलग अछि। अन्यथाक स्थितिमे ओ चुप्पीक संस्कृतिक शिकार भऽ जायत वाणिमे दोष बनले रहतैक।

कक्षामें सुनबाक बजवाक अवसर उपलब्ध करायबः

आजुक समय बालकेन्द्रित शिक्षणक समय अछि। जतय शिक्षकक दायित्व बच्चाक लेल सन्दर्भित माहौलक सृजन आ विषय वस्तु कँ सुगम बनाकऽ ओकरा बीच रखबासँ अछि। बच्चे सभ क्रियाकलापक केन्द्र बिन्दू होइछं तँ कक्षा कक्षमें सुनबाकआ बजबाक अधिकाधिक अवसर उपलब्ध करायब शिक्षकक परम दायित्व छिक। एहिलेल विभिन्न तरह क्रिया कलापक लेल बच्चाके उन्मुख करब जरुर। कक्षाक वातावरण के सहज आ उन्मुक्त बनयबाक आवश्यकता अछि। जतय बच्चा स्वयं अपन सहकर्मी शिक्षार्थीक गप्प शप्पके सुनथि आ आपस मे ओकर आदान प्रदान करथि । आत्म अनुशासनक सृजन आवश्यक अछि। भय ओ दबाक स्थितिमे बच्चा उपभोक्ता मात्र बनि जाइत अछि। ओकरा उपभोक्ता नहि उत्पादक बनायब आजुक शिक्षा आ शिक्षाविदकमाँग अछि कक्षाके बालकेन्द्रित

आ प्रजातांत्रिक स्वरुप प्रदान कयनाइ शिक्षकक परम दायितव अछि। जाहिसँ बच्चाकेँ बजबाक आ एक दोसराके सुनबाक पर्याप्त अवसर उपलब्ध हेतैक जकर उपयोग ओ अपन भाषा क्षमताक संवर्धन हेतु कऽ सकत । ओ बच्चाक अस्मिताकेँ स्वीकार करथु। ओकर ज्ञान के महत्व देथु। ओकर भावना आ जिज्ञासाकेँ सम्मान करथु।

विद्यालय मे समय समय पर वाद विवाद परिचर्या गोष्टी अन्तराक्षरी एकांकी आदि आयोजित हो जाहिमे बच्चासभ खुलिकऽ भाग लऽ अपन सुनबाक आ बजबाक क्षमताक विस्तार कऽ सकय। कक्षा शिक्षककेँन्द्रित नही बालकेन्द्रित हो। एहिलेल ओकर सुचालन गतिविधि आधारित होयबक चाहीं। जाहिमे सभ बच्चाक भागीदारी भऽ सकत बच्चा स्वयं सऽ सीखैत अछि अपन परिवार परिवेश ओ समाज सऽ अर्न्तक्रिया कऽकेँ सीखैत अछि। शिक्षक ओहि तरहक वातावरण सृजनकरथु इतिहास विषयक शिक्षा नाटक एकाकी अथवा रोलप्लेक माध्यमे देलासँ बच्चाक सुनबाक आ बजबाक कौशलक त्वरित विकास हैत। शिक्षककेँ चाहियन्ति जे ओ अपनविद्यायलक चेतना सत्रक उपयोग एहि दूनू कौशलक विकास लेल संसाधनक रुपमे करथि। बालसंसद आ मीनामंचक उपयोग सेहोँ कयल जा सकैछ। समय समय पर बच्चासभ के भ्रमण आ देशाटन करायल जाय। मुख्यमंत्री परिभ्रमण योजना एहि दिशा मे साार्थक प्रयास अछि। संगहि सभसँ आवश्यक अछि जे शिक्षक पुरातन मानसिकता आ परम्परागत कार्यशैली के तिलाँजलि द अपन कार्यकें उत्तरदायित्व पूर्ण ढंग सऽ करथु जाहिसँ बच्चा जिज्ञासावश कक्षा मे सदिख्न सक्रियरुपेँ सिखबाक प्रयास करत।

भाषा कक्षाक स्वरुप

भाषा जतबहि देखऽमे आसान लगैत अछि ओकर शिक्षण ओतबहि कठिन अछि। तेँ भाषाक कक्षाक सशक्त आ प्रभावकारी होयबाक चाही। एहिलेल निम्नलिखित बिन्दु पर ध्यानदेब आवश्यक अछि

1. भाषाक कक्षा लचीला भागीदारी होअय।
2. शिक्षाक भाषा शुद्ध आ बच्चाक स्तरानुकूल होयबक चाही।
3. कक्षामे बेसी बच्चाक भागीदारी होअय।
4. कक्षामें दूतरफा संवाद गुंजाइश होअय।
5. प्रत्येक बच्चा खास होइत अछि तेँ ध्याान राखि सिखयबाक तरीकामे विधिता होअयं
6. कक्षाक सवरुप प्रजातांत्रिक होअय।
7. मातृभाषाकेँ आदर ओ सम्मान देबाक चांहि जाहिसँ बच्चाक भाषाई सामाजिक अस्मिताक सम्मान हाअय।
8. पाठ्य विषय–वस्तु सम्बन्धित टी.एल.एम. उपयोग कयल जाय।
9. पढाओल गेल विषय वस्तुक दोहराव होअय।
10. कक्षा के पुस्तक आ प्रश्न उत्तर तक सीमित नही राखि ओकरा बच्चा के आसपासक दुनियाँ आ अनुभव से जोडल जाय।
11. बच्चाकेँ वर्त्तालाप करऽ लेल खिस्सा पिहानी कहबाक ले कविता पाठ चूटकुला सुनायब लेल प्रोत्साहित कयल जाय।
12. सुगमकर्त्ताक भाषा–शिक्षणक समझ दुरूस्त होयबाक चाहि। विषय वस्तु सम्प्रेषणक कौशल उपयुक्त होयबाक चाही। जाहिसँ बच्चा हुनक अनुकरण क शुद्ध भाषा सीखी सकय।
13. छात्र–शिक्षक मध्य आत्मीय सम्बन्ध

भाषाकक्षाकेँ प्रभावशाली बनयबामे एहि सभहक युक्तिक कारगर होइत अछि। तेँ प्रशिक्षुकेँ एहिसभहक ख्याल मैथिली भाषाक शिक्षण करैत काल राखब आवश्यक अछि जाहिसँ बच्चाक भाषा पकड मजबुत भऽ सकय।

मैथिली भाषक शिक्षण मे बच्चाक गप्प–शप्प फकरा आ मुहावराक महत्त्व

मातृभाषा मैथिलीक शिक्षणमे बच्चा गप्प–शप्प, मैथिली फकरा आ लाकोक्तिक विशेष महत्त्व अछि जकरा बच्चा स्वभाविक रुपेँ अपना गाम–घर मे स्वयं सीखि लैत छथि। ओहिलेल माध्यमे जाने बहुत कुछ भाषयी मानक अर्जन कऽ लैत अछि। तेँ बच्चके अनावश्यक अनुशासनीय कर्मकाण्डमे शिक्षककेँ नहि जकइरबाक चाहियनि ओकरा कऽ अपन अनुभव ओ जानकारीक आपसमे आदान प्रदान करअ। एहि क्रम मे ओ अपनहिमे कारकक चिन्हक प्रयोग न भेलैक? ओ के करैत आदि। बहुत रास व्याकरणक उपयोग ओ अपना संवादमे सऽ जागैतअछि। जखन शिक्षक कक्षा मे व्याकरण पढाबऽ लगैत छथि तखन बच्चा ओकरा आसानीयसँ ग्रहण कऽ लैत अछि ओ ओकरा रोजमर्राक गप्प शप्प मे पहनहि व्यवह्यत कयते रहैत अछि। एहिना धीरे–धीरे भाषा पर खासकर मातृभाषा पर अपन पकड बनालैत छथि। गप्प–शप्प करैत काल बहुतो फकरा आ लोकक्तिक उपयोग हडसठे करैत रहल अछि। जाहिसँ ओकर शब्द भण्डारमे वृद्धि होइत जाइत अछि। सुनबाक आ बजबाक कौशलक संग आशय बुझबाक क्षमतामे अप्रत्याशित बढोतरी होइत जाइत छैकक। जेना चोरक मुंह चानसन, भुसकोल विद्यार्थीक गत्तामोट सरसोभुन्नात रहू के दमना सीाघन बाइस पसेरी आदिक प्रयोग। बच्चा आपस मे हडसठे करैत अछि। गाम–घर मे माय बाप भाइ बहिन आदि आन जोकसभ बातबात मे फकरा पढैत अछि। तत्काल ओकरा एकर अर्थ नही बुझि छथि मुदा बारम्बार सुनलाक बाद कठस्थों भऽ जाइत छैत आ ओकर अर्थो बुझय लागैत अछि। जाहिसँ भाषाक ज्ञान बढैत जाइत छैक। तेँ अध्यापकेँ चाहियनि जे एहि समयक उपयोग कक्षा मे संसाधनक रुपें प्रयोग कडकेँ बच्चा सभकेँ भाषा मे दक्ष बनावयि। ओकरा नकारि फिजुलखर्च शिक्षक कहाबडसँ बचथि।

मुल्यांकनलेल प्रश्न

(क) अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

1. भाषा की थिक? बताउ
2. कौशलसँ अहाँ की बुझैत छी? लिखु
3. सुनबाक अर्थ लिखु।
4. बजवाक अर्थ बताउ।
5. मौखिक भावक अभिव्यक्तिसँ अहाँ की बुझैत छी? लिखु

(ख) लघुउत्तरीय प्रश्न

1. भाषा कौशलकविकास सुनब आ बाजबसँ बच्चामे कोन कोन दक्षताक विकास होयत? उदाहदण संग लिखु।
2. सुनबाक अपेक्षित योग्यताक वर्णन करु
3. बाजब कौशलक विभिन्न तत्वेकेँ लिखु
4. मौखिक अभिव्यक्तिक उद्देश्य केँ लिखु
5. मौखिक अभिव्यक्तिक आदर्शस्थितिसँ अहाँ की बुझैत छी न आहाँक अनुसारे आदर्शस्थितिसँ सृजन कोना होयत? एहिलेल शिक्षककेँ की कर आर्दस्थितिसँ पडतनि?
6. उच्चारण के प्रभावित करयवला कारक कोन कोन अछि? लिखु

7. मैथिलीक भाषाक शिक्षणमे फकरा लोकोक्ति आ बच्चाक गप्प शप्प महत्व बर्णनकरु। उदाहरण संग उत्तर दिअ।
8. मैथिली भाषा मैथिलक अस्मिता थिक। विवेचना करू।

(ग) दीर्घउत्तरी प्रश्न

1. भाषा कौशलक संकल्पनाक सविस्तार वर्णन करू।
2. सुनबा आ बजबाक कौशलक विकास कोना होइत अछि।
3. बच्चामे मौखिक अभिव्यक्तिक विकासललेल की की कयल जायब अपेक्षित अछि। एहिमे आइ. सी.टी. क योगदान क विस्तार से चर्चा करु।
4. बच्चाके कक्षामे सुनवाक बजबाक अवसर उपलब्ध करएबा लेल प्रशिक्षु द्वारा कोन कोन प्रयास कयल जाय। अपन अनुभव से लिखु।
5. उच्चारणदोष आ एकर निवारणक वर्णन करु।
6. जेशिक्षक बच्चाक ज्ञान गप्प शप्प आदि कैं नकारि देत छथि वास्तवम ओ फिजूलखर्च शिक्षक छथि। पक्ष विपक्ष मे तर्क दियअ।

इकाई–3

पढ़वाक ओ लिखबाक कौशलक विकास

पढ़वाक ओ लिखबाक कौशलक विकास

- पढ़बाक अर्थ ओ एकर विभिन्न सोपान
- पढ़बाक प्रकार सस्वर, ओ मौन
- पढ़बाक सिखबाक विधि
- पढ़वाक समस्या ओ समाधान

लिखबाक कौशलक विकास

- लिखबाक अर्थः संकल्पना ओ विकास
- लिखबाक शुरूआत
- लेखन कौशलक विकासक तरीका
- लेखनक प्रकार

परिचय

मनुक्खक जीवन मे पढ़वाक महत्व अत्यधिक अछि। जीवन मे नित्यप्रति एकर आवश्यकता पड़िते रहैत अछि। समाचार पत्र, पत्र–पत्रिका, कथा ,कविता, उपन्यास, आदि पढ़बा मे कौशलक आवश्यकता मातृभाषाकें चारिता मूल कौशल अछि, सुनब, बाजब पढ़ब आ लिखब। भाषाक चारू कौशलम लोक लिखल वा छपल वर्ण–शब्द समुहकेँ जोर–जोरसँ बाजिकअ बा मने–मन पढ़िकअ ओकर भाव–ग्रहण करैत अछि।

हम किएक पढ़ैयछि? हमर, आओर तोहर पढ़बाक कोनो खाश उदेश्यसँ होयत अछि। इ उदेश्य भअ सकैत अछि–कोनो खास जानकारीक लेल पढ़ब, आनंद आ मनोरंजनकेँ लेल पढ़बाक, जिज्ञासा लेल पढ़बाक आदि रहित अछि।

पढ़ब अर्थात पठन एकटा एहन प्रक्रिया अछि जाहिये शिक्षार्थी के सिखबाक अवसर भेटैत अछि। पढ़बाक लेल विद्यालय जयबाक आवश्यक अछि। किएककि विद्यालय मे प्रवेश करयसँ पूर्व विद्यार्थी, बालक या बालिका श्रवण कौशलक या भाषा कौशलक थोड़ योग्यता प्राप्तकऽ लैअत अछि। मगर पठन कौशलक लेल विद्यालय मे जयबाक आवश्यक भअ जायत अछि। शिक्षार्थी बालककेँ भाषाक लिखित रूपसँ अवगत करबैत अछि। समान्य शब्द मे ढ़यबाककेँः वाचन कहल जयत अछि। एकर मतलब इ भेल जँऽ बच्चा अपन मुखसँ (मुहसँ) अक्षर वा शब्दक पहचान अपन मुखसँ शुद्ध उच्चारण करऽ लागैत अछि, वैह पठन आ वाचन कहबैत अछि।

पढ़ब अर्थात पठन एकटा एहन प्रक्रिया अछि, जाहि शिक्षार्थी कैं सिखबाक अवसर भेटैत अछि। शिक्षार्थी विधिपूर्वक पढ़बाक अभ्यास करयबक पठन–शिक्षण कहबैत अछि। एतए कहबाक तात्पर्य होयत मैथिली भाषा जेना लिखल जाइत अछि प्रायः पढ़लो ओहिना जाइत अछि। पढ़बाक क्रम मे शिक्षार्थीक वर्णमाला सिखबाक, लिखबाक आ लिखित सामग्रीक वाचन करबाक, ओतबेनहि ओकर अर्थ ग्रहण करयबाक उद्देश्य सेहो अछि।

पढ़वाक/ पठनक अर्थ

पठनक शाब्दिक अर्थ पढ़वाक अर्थात लिखल गेल सामग्रीक पढ़वाक आआरे ओकर अर्थ ग्रहण करबाक एहि प्रक्रियाकेँ पठन/पढ़वाक अथवा वाचन कहल जायत अछि। पठन वा वाचन दुनू संस्कृतक 'पठ' ओ 'वच' धातुसँ बनल अछि। वाचनक अर्थ जोर–जोरसँ पढ़ब जकर आनन्द श्रोतागण सेहो लऽ सकथि, मुदा पठनक अर्थ कम जोरसँ वा मने मन पढ़ब। एहि कारण जँ कोनो पाठयांश अर्थ गंभीर रहितो जँ ओ विचारक प्रतिनिधित्व नही कऽ सकय तावत काल ओ व्यर्थ होइछ। एहि लेल आवश्यक अछि लिपिक सही ज्ञान, पढ़ि कऽ बुझबाक ज्ञान, शब्दक अर्थ ग्रहण करबाक ज्ञान।

एहि हेतु पठनक परिभाषा विभिन्न विद्वानक भिन्न प्रकारक अछि –

- ल्यूइस महोदय द्वारा देल गेल परिभाषा –

वाचन एकटा साधन अछि जकरा माध्यमसँ बालक बालिका संपूर्ण मानवताक संचित ज्ञान राशिसँ परिचित होयत अछि।

- डा0 उमा मंगल द्वारा देल गेल वाचनक परिभाषा –

वास्तव मे लिखित सामग्रीकेँ पढ़िते ओकर अर्थ ग्रहण करबाक प्रक्रियाँ पठन आ वाचन कहल जायत अछि।

वाचनक उद्देश्य

वाचनक उद्देश्य केवल लिपि आ लिपिबद्ध भाषकेँ पढ़बाक नहीं बल्कि कोनो छपल सामग्री सँ अनेको स्तरक आओर ओकर पहलुओं के अर्थ ग्रहण करबाक अछि।

- बाचनक द्वारा शिक्षार्थीकेँ शुद्ध आ स्पष्ट उच्चारणक अभ्यास करायब।
- अक्षरकेँ, ध्वनिसँ जोड़केँ शब्द आओर फेर वाक्य बनायब।
- कोनो भाषाक लिपिकेँ पहचान करायब।
- तेज रफ्तारसँ अक्षर पहचैनकेँ ओकरा जोड़बाक।
- शिक्षार्थी भावानुसार स्वर बदलबामे कुशल बनायव।
- पोथी पढ़िकऽ बच्चा ओकर भाव बुझि सकय तथा दोसराकेँ बुझा सकय।
- शिक्षार्थी मे एहन क्षमता उत्पन कऽदेब जाहिसँ ओ पाठ पढिकऽ वाचन एहि प्रकारें करयजऽ सुनयबला सरलतासँ बुझि सकथि
- छपल सामग्री पर भावानात्मक स्तरकेँ प्रतिक्रिया दऽ सके। जेना डर, जोश विस्मय आदि भावकेँ स्वयं महसुस क सकथि।

पढ़बाक लेल कौशल

''पढ़बाक कौशल बेहद सरल आ स्वभाविक अछि।''

ई वाक्य हिनका लेल सत्य अछि, जकड़ा पढ़यबाक सिखाओल नहीं गेल बल्कि कोनो रोकटोककेँ पढ़बाक मौका देल गेल अछि।

''पढ़बाक कौशल जटिल(कठिन) आओर रहस्यम्य अछि''

ई उनका पर लागु होत जे पढ़बाक करीबमे कखनों नहीं पहुँचल किएकतऽ पढबाक तैयारी मे उलझकेँ रहि गेल। पढ़बाक आनंद आओर ओकर स्वादसँ अनभिज्ञ रहिगेल। एहिसे कोनो सक नही जे पढ़बाक कौशल नहीं अछि। एहिमे बहुतेक कौशल निहीत अछि जे एक दोसरासँ जुरल अछि। आओर पढ़बाक मूल एहि कौशलकेँ अंतरसंबंधमे छुपल अछि। कोनो कौशल पूर्ण नहीं अछि। किएकतऽ एक या दूटा

कौशलकेँ सिखलासँ पढ़िलेबाक दाबा नहीं कैल जा सकैत अछि। ई कौशल कोन अछि एकर अंतरसंबंध प्रकृति कि अछि जे उदाहरण स्वरूप देखल जाउ।

जक सलली मर्य कोरच यै इम्फना

उपर देल गेल वाक्य 'पढ़िये' लेने होब। पढ़यसँ इ अर्थ भेल जे शब्दोंकेँ उच्चारणक लेने होष। एहि वाक्य सँ कि समझने होब?
एकटा दोसर उदाहरण देखु

ओ लोक राएति–राएते पटनासँ जयनगर पहुँच गेल

देवनागरी लिपिमे होबय के कारण हम एकरा पढ़िये लेली मगर की समझली?

पढ़बाक समझकेँ बगैर संभव अछि?

शब्दकेँ उच्चारित कऽ लेलासँ शब्दाशः पढलेबाक दरअसल पढबाक नहीं अछि पढबाक तरवने नीक होत जखन अर्थ सहित बुझि पाबैअछि एहिठाम कुछ कारणसँ असमर्थ छि?

- हम एहि भाषासँ परिचित नही छि, तैँ हम एकरा समझ नहीं पाबैयछि।
- लिपि (अक्षर–ध्वनि) सैँ परिचित
- भाषा सैँ परिचय
- भाषाऽ वाक्य–संरचना आओर शैलीसँ परिचय
- विषयसँ परिचय

एकरा मदकेँ बगैर हम पढ़ि नहीं सकैत छि।
पढयमे इ सब सहायक होयत अछि –

i. **भाषासँ परिचय –** पढ़लजाऽ रहल भाषाकेँ पहिने जानबाक ओ समझबाक जरूरी अछि, एकरा अभाव मे पढ़बाक संभव नहीं अछि। बोलय जायबला भाषा लिपिबद्ध होयत अछि। आओर अगर हम बोलयबला भाषा नहीं जानब तखन लिखल गेल बात पढ़ि नहीं सकयछि।

ii. **भाषा विन्यास/शैली –** सभ भाषा एकटा विशेष संरचनामे बान्हल होयत अछि, चाहे शब्दोकेँ स्तर पर हो, ध्वनियो के वा वाक्योंकेँ।

iii. **पूर्वज्ञान/ पूर्वानुभव –** भाषा आओर विषय दूनुसँ संबंधित ज्ञानकेँ पूर्वज्ञान कहबैत अछि। एकरा सहायतासँ हम पढ़बाक प्रयास करतछि। लिखैयमे, पढयमे, सुनबाक अर्थ निर्मित करबाक पूर्वानुभव आ पूर्वज्ञानक सहायतासँ होइछ। पूर्वानुभव आ पूर्वज्ञानक अर्थ इ भेल जे व्यक्ति पहुलका अनुभवसँ बनल अवधारणा 'स्कीमा' क रूपमे मस्तिष्कमे संचित अछि।

अगर हम सभ उड़िया भाषासँ परिचित रहति तखन एहि वाक्यक अर्थ बुझिति आ बुझादेति। हलांकि उड़िया भाषाकेँ इ वाक्य देवनागरी लिपिमे लिखल छलतैँ हम आहाँ एकरा उच्चारित कऽ सकलि, मगर एकर अर्थ तखन समझ पायब जखन आहाँ उड़िया भाषाक शब्दकेँ अर्थ–व्यवस्थासँ परिचित रहब। एहिसँ कहल जा सकय जे पढ़ना अथवा वाक्योकेँ उच्चारण आ डिकोडिंग मात्र नहीं अछि बल्कि अर्थ समझबाक जरूरी अछि।

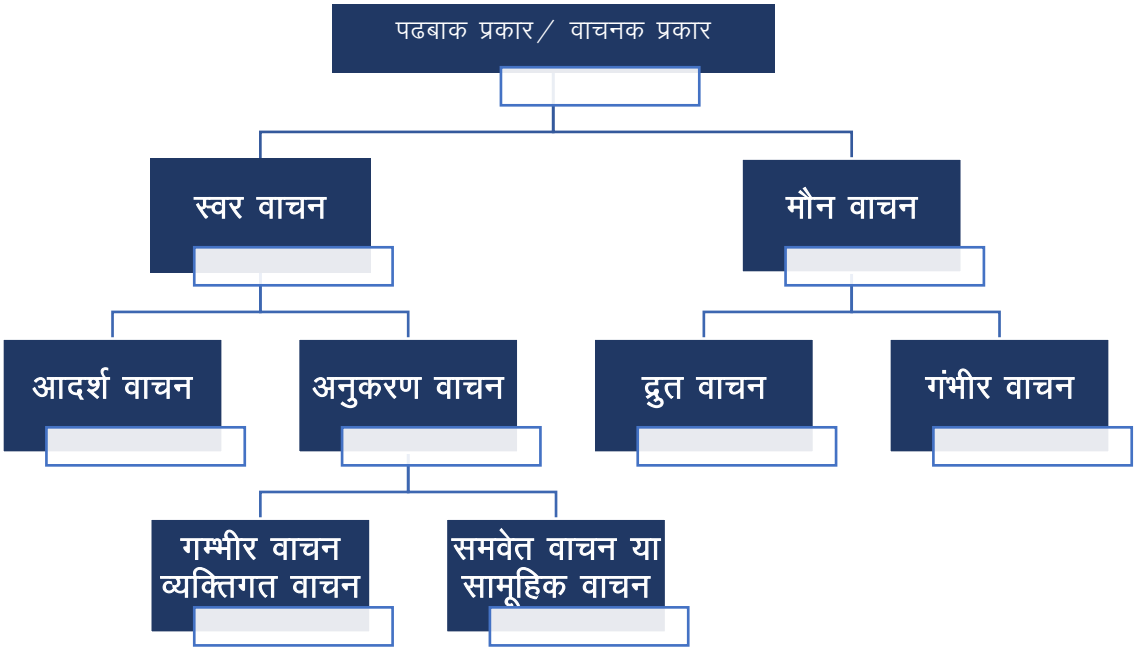

1. **सस्वर वाचन –** उच्चारण संग ध्वनिकेँ प्रकट करब आनि स–सुरमे आ स्वर बाजब अथवा अवाज प्रकट कऽ पढब सस्वर वाचन अछि। एहिसँ संकोच दुर होइत अछि। एहिमे चरिता प्रतिक्रिया सम्मलित अछि – लिपिब्ध अक्षरकेँ देखब ,चीन्हब, शब्दकेँ बुझब, उच्चारण करब आओर अर्थ केँ ग्रहण करब। एहि पाठसँ बच्चामे कहबाक बजबाक वा पढबाक शिक्षक टुटैत अछि। आत्मविश्वास जगैत अछि। सस्वर पढलासँ बालक शब्दक शुद्धता आ एकाग्रचीत बनाबैत अछि। सस्वर वाचन कक्षा छः(6) तक उपयुक्त अछि।

सस्वर वाचनक दु प्रकार अछि

i. **आदर्श वाचन** – अध्यापक द्वारा कोनो लिखित भाषाक अध्ययन या अध्ययापन लेल देल वाचन आदर्श वाचन कहबैत अछि। किएकतऽ शिक्षक जेकूछ पढाउत आ समझाउत ओकरा छात्र आदर्श मानैत अछि। शिक्षक जे

ii. **अनुकरण वाचन –** अनुकरण विद्यार्थी द्वारा कैल जाइत अछि। जेना शिक्षक कहैत अछि SUNDAY रविवार बच्चा वैह अनुकरण करैत अछि अनुकरण वाचन कहबैत अछि।

अनुकरण दुटा प्रकार अछि

(क) **व्यक्तिगत वाचन** – कोनो विद्यार्थी अकेले मे कोनो लिखित भाषकेँ उच्चारण जोर जोरसँ वाचन करैछ व्यक्तिगत वाचन कहबैछ।

(ख) **समवेत वाचन/समुह वाचन** – दु आ दुसँ अधिक कोनो लिखित भाषा के वाचन करबाक क्रियाकेँ समुह वाचन कहबैछ। समुहमे अनेको छात्र एव छात्रा रहेय जहिसँ दोसरा कक्षा प्रभावित न भऽ पाबय। सस्वर वाचनकालेमे ओतेक ध्यान देबय बात मुख्य बिन्दुः–

- एहिमे ई बातपर विशेष ध्याान रखबाक अछि जे शिक्षार्थी ध्वनिक के शुद्ध आ स्पष्ट उच्चारण करथि।
- सस्वर पाठ ठाढ भऽ कऽ कराओल जायतँ नीक रहत एहि क्रम मे किताब बामा हाथमे आ किताबक दुरी औखिसँ 25cm दुरीपर रखबाक चाही।

- सस्वर पाठ कयनिहार शिक्षार्थीकेँ शिक्षक एक निश्चित क्रमशँ नही चयन करथि बल्कि वर्गक बीचसँ कोनहुँ शिक्षार्थी केँ पढबाक लेल कहब।
- कक्षा मे सस्वर पाठ होयबाकाल वातावरण शांत होयब आवश्यक अछि।
- सस्वर पाठ करयबालकाल हमेश एकरंग नही होअय स्वरमे उतार चढाव आरोह अवरोह होयबाक चाही।
- सस्वर पाठ करबाक क्रममे उच्चारण वर्गआकक्षमे सभकेँ सुनाब योग्य हुए।

2. मौन वाचन

विद्यार्थी लिखित भाषाके बेगर बोलने यानी मने मन वाचन करबाक मौन बाचन अछि। मौन वाचन मे मस्तिष्क आओर नेत्र सक्रिय रहैत अछि। सर्वाधिक ज्ञान का ग्रहणशीलता होयत अधि। एहिसँ मुख्यतया गद्य शिक्षण, कहानी उपन्यासक गहन मुख्य रुप सँ होयत अछि। मौन वाचन क़क्षा 6 (छः) से उपर उर्पयुक्त मानल जायत अछि। मौन वाचन करयसँ तीन गुणा वाचन करवाक गति बैढ़ जायत अछि।

मौन वाचन के प्रकार

i. द्रुत वाचनः– द्रुत वाचनक अर्थ अछि तेज गति सँ अर्थात अत्यंत तीव्र गतिसँ वाचन करबाक क्रियाकेँ द्रुत वाचन कहबैछ। एहिसँ वाचन करय मे 10 गुणा बढय जायत अछि। एकरा माध्यमसँ समाचार पत्र आ कोनो कथा वाचन कैल गेलकै दुवारा वाचन करब।

ii. गम्भीर वाचनः– जब कोनो मुल विषय वस्तु के गम्भीर मुद्रामे पढैत छि जेना परीक्षा भवनमे जायसँ पहिले ज वाचन करैयछि ओकरे गम्भीर वाचन कहबैछ। एहिमे कोनो नव सूचना एकत्र करयकेऽ लेल गम्भीर रह पडत अछि।

मौन वाचनक लेल आवश्यक तत्व

- **शान्तिपुर्ण वातावरण** – मौन वाचक लेल पूर्ण शान्तिमय वाातावरण होयबाक आवयश्यक अछि। अशान्त वातावरण मे मौन वाचन करबाक कठिन थिक।
- एकाग्रताः– मौन वाचनक उद्देश्य तखन पूर्ण होयत जखन शिक्षार्थी एकाग्रचित भऽ वाचन करत
- **वाचनक मुद्रा** – वाचन करयबाक क्रममे शिक्षार्थीक मुद्रा पर विशेष ध्यान देबाक थिक। शिक्षक देखथ जे विद्यार्थी उचित ढंगसँ पोथी पकडने अछि किंवा नहि। शिक्षार्थी पोथीपर बेसी झुकय नहि।
- कठिन शब्दकोशः– मौन बाचन करवा पाठय विषय कँ नीक जकाँ बुझबाकलेल विद्यार्थी के शब्द कोशक गहणता होयब आवश्यक अछि।
- उचित प्रवाह तथा गतिक ध्यान राखब शिक्षक शिक्षार्थीक के बुझबथि जे मौन वाचन करबाक क्रम मे ओ विराम चिन्ह गति आ प्रावहकेँ मने मने अवश्य ध्यान राखय।

मौन वाचन करबाक उदेश्य

- शिक्षार्थी मे अधिकांस से अधिकांश अधिक साहित्यक रुचि उत्पन्न करायब।
- शिक्षार्थीमे मौन वाचनक अभ्यास करबाक चाहि जाहिसँ कमसँ कम समयमे बेसी सामग्रीक आत्मसात् कऽ सकय।
- व्याकरण द्वारा शब्दक अर्थ स्पष्ट करायब।

मौन वाचनक महत्त्व

- मौन वाचन द्वारा शिक्षार्थी शीर्घता से पढि सकैत अछि।
- मौन वाचन सँ शिक्षार्थी पढबाक संग– संग विषय के अर्थ ग्रहण कऽ सकैत अछि।
- मौन वाचन से वातावरण शांत रहैत अछि एहिसँ दोसराँ एकाग्रचीत बनल रहैत अछि।
- मौन वाचनसँ स्वयं पढबाक आदति लागि जाइत छैक। विद्यार्थी मे पोथी पढबाक रुची उत्पन्न होइत छैक।

पढबाक सिखबाक विधि

पढबाक सिखबाक विधिमे प्रमुख विधि अछिः–

अनुकरण विधि अक्षर बोध विधि

- ध्वनिविधि
- देखब विधि
- अनुकरण विधि
- सामूहिक पढब विधि
- सहचर्य विधि
- वाक्य शिक्षण विधि
- कथा विधि

1. **अक्षर बोध विधि** – सभसँ प्राचीन विधि थिक। एहिमे बच्चाकेँ सभसँ पहिने अक्षरक ज्ञान कराओल जाइत अछि। पहिने स्वर अक्षर तकराबाद व्यंजन आ पुनः संयुक्त अक्षर क्रमशः सार्थक शब्द बनायब सिखाओल जाइत अछि। पश्चात प्रत्येक अक्षरकेँ ध्वनिसँ सम्बन्ध जोडब सिखाओल जाइत अछि।
2. **ध्वनि साम्य विधि** – अक्षर बोध विधिक सहायक होइछ। एहिमे एक संग उच्चरित होमऽवला शब्दकेँ एक संग सिखाओल जाइत अछि जेना भक्ति–शक्ति,नरम–गरम, भुक्ति–मुक्ति, सरस–नीरस आदि।
3. **देखब आ कहब विधिमे–** बच्चाकेँ शब्दक ज्ञान कराओल जाइत अछि। शब्दक बोध करबा लेल चित्रक सहारा लेल जाइत अछि। बेरि–बेरि शब्द चित्र देखलासँ शब्द एवं चित्र बच्चाक मस्तिष्कमे स्थिर भऽ जाइत अछि।
4. **अनुकरण विधिमे–** शिक्षक कोनो शब्दक उच्चारण करैत छथि तत्पश्चात् बच्चा ओकर अनुकरण कऽ उच्चारण करैत अछि।
5. **सामूहिक पठन विधि** – अनुकरण विधिए जकाँ होइछ। एहमे शिक्षक वर्गमे आदर्श पाठ करैत छथि पश्चात बच्चा सामूहिक रूपसँ ओकर अनुकरण करैत छथि।
6. **सहचर्य विधि** द्वारा अक्षरक पहचान कराओल जाइत अछि।
7. **वाक्य शिक्षण विधि** द्वारा बच्चाकेँ अक्षर शब्दसँ प्रारंभ कऽ वाक्यसँ कराओल जाइत अछि। बच्चा बेरि–बेरि एक्के वाक्यकेँ पढ़ैत छथि जाहिसँ बच्चाकेँ वाक्यक नीक ज्ञान भऽ जाइत छनि।
8. **कथा विधिमेः–** एक वाक्यक बदला बहुतहुँ वाक्य लेले जाइत अछि, जे कथाक रूपमे आबद्ध रहैत अछि। शिक्षक कथा पढ़ि कऽ सुनबैत छथि। कथासँ सम्बन्धित चित्रक प्रयोग सेहो कयल जाइत अछि आ चित्रक नीचाँ वाक्य लिखल रहैत अछि। शिक्षक वाक्यक आवृत्ति करैत छथि एहि तरहेँ बच्चाकेँ वाक्यक ज्ञान शीघ्रे भऽ जाइत छनि।

पढ़बाक सिखबाक विधि

उद्देश्य

मात्र इहे टा नहि अपितु पाठककेँ पढबाक उद्देश्य इहो होएबाक चाही जे पाठकमे पढबाक प्रति रुचि उत्पन्न कऽ सकी। वस्तुतः ज्ञान मात्र पढबाक माध्यम थिक। हमर उद्देश्य ई हेबाक चाही जे हम अपन छात्रकेँ एहन पाठक दी जाहिसँ पढनाई एक भऽ जाई हुनका मे पढबाक उत्कृष्ट अभिलाषा जागृत कऽ दी।

पूर्व अनुभव

आहा एक विद्यार्थीक रुपमे आ एक शिक्षकक रुपमे अपन विद्यालयक समय–सारणीकेँ बहुतो बेर देखने हएब ओकरा अनुसार काज सेहो कयने हैब। प्रत्येक कक्षाक समय सारणी विषयवार भिन्न–भिन्न होइछ। ओहिमे बहुतहुँ विषय पढल पढाओल जायत अछि। बच्चा कोन–कोन विषय पढैत छथि मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि। एकर अतिरिक्तों विषय भऽ सकैछ बेसी या कम यद्यपि पाठ्यपुस्तक हिन्दी भाषामे होइछ मुदा बच्चा अपन मातृभाषा मे पढब अधिक पसिन्न करैत अछि। विषय चाहे जे हो बच्चा जतेक सुगमतापुर्वक अपन भाषा क्षेत्रीय भाषामे बुझैत अछि ततेक आन भाषामे नहि तैँ विद्यालयमे भाषाक स्थिति एक विषयक रुपंमे होइत अछि आ माध्यमक रुपमे सेहो।

कि पढबाक अछि?

की हम कहियो ई सोचलहुँजे पढब की थिक? की बिना अर्थक पढनाई नीक काज?

एहि प्रश्नक जबाबमे बहुतहुँ उत्तर प्राप्त भऽ सकैछः–

- पढ़ल वस्तुकेँ उच्चारण करब।
- अक्षरक ध्वनिकेँ जोडिकऽ शब्द आ फेर वाक्य बनाएब।
- लिखत बातकेँ बुझब।
- भाषाक लिपिककेँ चिन्हब वा बुझब।
- छपल सामग्रीक विषय वस्तुसँ कोनो अनुभव, जानकारी, भावना, घटना आदि अनायास स्मरण होएब।
- छपल सामग्रीक विषय वस्तुकेँ कोनो पुर्व परिचित सन्दर्भमे राखब।
- शीघ्रतासँ अक्षर चीन्हिकऽ ओकरा जाडिऽ पायब।
- छपल सामग्री केँ शीघ्रतासँ बूझब।
- छपल सामग्री पर भावनात्मक स्तरपर प्रतिक्रिया दऽ पायब जेना – डर जोश हर्ष विस्मय आदि भावकेँ स्वयं महसूस करब।
- पढल वाक्यक अशंकेँ आधारपर बाकी वाक्यमे आबऽ बाल शब्द गुण वा दोषकेँ बूझि पायब।

ओना एहि सभ बातकेँ देखलासँ एक समान लागत मुदा एहिमे सूक्ष्म अन्तर अछि। एहि जबाबमे सँ कोनो एकटा जबाब पढबाक कौशलक पूर्ण विवरण नहि दैत अछि। एहि सभ जबावमे पढबाक सभ पहलुकेँ बूझाल जा सकैत अछि अर्थात पढब मात्र लिपि वा लिपिबद्ध भाषाकेँ बूझब मात्र नहि अपितु छपल सामग्रीसँ विभिन्न स्तर आ बहुतहुँ पहलुसँ अनतः क्रिया करब सेहो होइछ । पढ़बाक एहि समग्र परिभाषामे

बहुतहुँ एहन कौशलक आ क्रिया सम्मिलित अछि। सभ कौशलक सफलता आ सार्थक दोसरा कौशलक उपस्थिति पर प्रशिक्षुक रुपमे अहाँ स्मरण करु या कहू जे।

वाचनक महत्व/विशेषता

आजुक समयमे वाचनक महत्व बहुत अधिक अछि? कारण वाचन एकटा कला छिक। इ ज्ञानक कुंजी थिक। ज्ञानक निर्माण बिना किताबकेँ भ सकैत अछि। पहिले लिपिक छपाई अविष्कार ओ विकास नहिं भेल छल, तखन पुरी दुनियाकेँ, समाजमे संस्कृति व ज्ञानक सारा अदान प्रदान आओर विस्तार बैगर किताबकेँ पढ़बा व लिखवासाँ होयत छल। अखनो कतेको समाजमे संस्कृति व ज्ञानक हस्तांतरण मौखिक भाषामे होइछ। आजुक दुनियामे किताबक महत्त्व अत्यधिक भऽ गेल अछि। किताब पढ़बाक–लिखबाक आ साहित्यक आवश्यकता भऽ गेल अछि। वाचन शक्ति ठीक रहलासँ कठिनसँ–कठिन विषयकऽ पढिकेँ बुझि सकताह आओर पढ़ल गेल विषय अंशकेँ खोलिकेँ व्यक्त कऽ सकताऽ। पढ़बाक लिखवाक कारणही हम कोसो दूर बल्कि ओहि लोकमे चल जायछि जे हमराअतसँ परे (दूर) अछि।

पं0 जवाहरलाल नेहरू कहने अछि, ''पढ़बाक जीवनकेँ विभिन्न पहलुओं आओर ओकर बदलैत रंगमेँ समझबाक चाहि। साथही एकटा सार्थक जीवन जीबाक कलाकेँ समझबाक अछि। हमर व्यक्तिगत जीवन सीमित होइछ, एकरा विस्तार पढ़लासँ होयत। किताब हमरा परिचय ओहन अनुभव आओर विचारोसँ अवगत करबैछ जहिसँ असीमित बुद्धिमता आओर परिपक्वताक झलक भेटैत अछि''।

वाचन आ ज्ञान मनुक्खक मृत्युपर्यन्त संगी अछि। शिक्षित व्यक्ति वैह मानल जाइछ जे लिखित बातकेँ पढ़ि सकय, बुझि सकय, आओर दोसराकेँ बुझा सकैय वैह शिक्षित भेल। ज्ञानार्जनक लेल संभसँ सरल–सुलभ साधन पढब। कोनो मनुक्खक कतबो ज्ञानी अछि मगर पढ़ल लिखल नहीं अयलासँ अनपढ़े कहबैत अछि। आजुक समयमे किताबक स्थान महत्त्वपूर्ण बहुतेक भऽ गेल अछि। किताब पढ़बाक लिखबाक आवश्यक भऽ गेल अछि।

जीवनक हर क्षेत्रमे वाचनक आवश्यकता परते अछि। एकरा बिना हमर शिक्षा अधुरी अछि। वाचन आ पठनक महत्वकेँ निम्नलिखित तथ्योंसँ अधिक स्पष्ट होयत अछि जे निम्न अछिः–

1. **ज्ञानोंपार्जनक मुख्य साधन** – आय ज्ञानक क्षेत्रकेँ निरन्तर विकास होयत अछि, स्कूल आ कॉलेजोमे पढैयगेल पुस्तकसँ ज्ञानक द्वार खुलैत अछि। ज्ञानक भण्डार एकटा अथाह सागर समान अछि। एहिमे प्रवेश केलासँ ज्ञानक अपार वृद्धि होइत अछि।
2. **सामाजिक उपयोगिता** – सामाजिक दृष्टिकोणसँ पठन अत्यधिक उपयोगी भऽसकैछ। मनुक्खक अपन सामाजिक जीवनमें सभदिन अलगे–अलगे प्रकारक काम आबैत अछि। आहाँ कोनो बैंकमे जाउ, सरकारी कार्यालय आ न्यायालयमे पठन कौशलक बगैर कोनो काम पुरा नही भऽ सकैत अछि।
3. **समाचारोंकेँ जानबाक लेल सहायक** – आजुक युगमे पत्र पत्रकारिताक निरंतर विकास भऽ रहल अछि। समाचार–पत्र पत्रिका सभ भाषामे प्रकाशित भऽ रहल अछि। व्यक्ति प्रायः सबसँ पहिले चाय प्यालक साथ समाचार–पत्र पढैय चाहैत अछि। अगर व्यक्तिकेँ पास पठनक योग्यता रहत तखन समाचार–पत्र पैढकेँ उचित लाभ उठा पाउता।
4. **शिक्षा प्राप्तिमे सहायक** – पाठनकेँ योग्यताक बिना शिक्षा अधुरी अछि। यदि कतो मौखिक अभिव्यक्तिकेँ अवसर मिलैछ, तखन सस्वर वाचनक अभ्यास करवाक अति आवश्कय अछि। पठनसँ शिक्षार्थीमे विचार शक्ति उत्पन्न होइछ। साहित्यिक अध्ययनक लेल सेहो वाचनक अवश्यकता अधिक अछि।

5. **मनोरंजनमे सहायक** – पठन मनोरंजनमेँ लेल एकटा महत्वपूर्ण साधन थिक। विभिन्न प्रकारक पत्र–पत्रिकाओं आओर पुस्तकोंकेँ पढलासे मनोरंजन कऽ सकैत अछि। एहिलेल बहुमूल्य दृश्य आ श्रव्य उपकरणक अपनावयकेँ जरूरत नहीं अछि। घरमे, खेतमे, उद्यानमे, बसमे, आओर रेलयात्रा करिते समय कोनो ठाम अपन मनक बहलावय लेल पठनकेँ सहारा लऽ सकेतछि।
6. **आलोचनात्मक दृष्टिकोणक लेल सहायक** – व्यक्तिकेँ मानसिक आओर बौद्धिक विकासक लेल आलोचनात्मक दृष्टिकोण अति आवश्यक अछि। एहि दृष्टिसे हमर आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास भऽ सकता। एहिसँ व्यक्तिकेँ आलोचनात्मक दृष्टिकोण तखने विकसित होत।

परिणामतः हमकैह सकयछि जे मानव जीवनक लेल वाचन कौशल अति आवश्यक अछि। आय हमर जीवन जटिल भऽ रहल अछि, अतः वाचनकेँ आवश्यकता बढ़िते जा रहल अछि। पठनक योग्यताक विकास लेल भाषा शिक्षण सेहो जरूरत अछि। भाषा शिक्षणसँ बच्चाकेँ योग्यताक विकास भ सकैछ। एहि उद्देश्य लेल छोट कक्षाओंमे सस्वर वाचन आयोजन आवश्यकता अछि।

लिखबाक कौशल विकास

अभिव्यक्तिकेँ एकटा कला 'लेखन' आ 'लिखबाक' अछि। लिखबाक एकटा माध्यम अछि जाहिसँ हम अपन विचारकेँ दोसर व्यक्ति लग पहुचवाक साधन अछि, जे हमरा लग नही रहित अछि से भेटति अछि। शिक्षा मनुष्यकेँ पशुतासँ बाहर निकाली ज्ञानक इजोतमे आनि ठाढ़ करैत अछि। कहबाक अर्थ जे शिक्षा मनुष्यक विकास आधार थिक। शिक्षा मनुष्यकेँ विकास, सुन्दर, प्रगतिशील, सजग एवं प्रबुद्ध नागरिक बनाबैत अछि। एहिलेल मनुष्यक जीवनमे शिक्षाक महत्त्व बढ़, पैघ अछि। शिक्षाक बिना मनुक्ख पशुताक समान अछि। आजुक समयमे शिक्षा अनिवार्य भऽ गेल अछि। भाषा कानेहुँ मनुष्यक शिक्षाक माध्यम होयत छैक। भाषा लिखित, मौखिक, आओर सांकेतिक रूपमे होइछ एकरा एना कहल जा सकैत अछि जे मनुक्ख अपन मोनक गप जाहि माध्यमसँ प्रकट करैत अछि वैह भाषा थिक। जखन बच्चा पहिल बेर स्कूल जायत अछि तऽ ओकड़ामे बातचीतकेँ कलाक विकास शुरू रहित अछि। अगर एहि बात–चीतके कलाकेँ यदि हम दोसर लोगकेँ जोड़बाक कोशिश करयछि तखन लिखबाक कौशलक विकास होयत अछि। वस्तुतः शिक्षकेँ ई रूपमे सुनिश्चित करबाक चाहि जे बच्चाक लेखन कलाकेँ बातचीतक सौन्दर्यमे देखय।

बच्चाकेँ लिखबाक यांत्रिक तरीकासँ सिखाओल जाए, ओकरा सबसे पहिने वर्णमालाकेँ अक्षरसँ अवगत कराओल जाय आ बेर–बेर लिखाओल जाय। लिखित भाषामे भाव आ विचारसँ ध्वनिसँ चिन्ह सांकेतिक भाषामे संकेतक माध्यमसँ भाव आ अभिव्यकेँ प्रकट कएल जाइत अछि। सांकेतिक भाषा बौक, बहीर (मुक–बधिर) व्यक्तिक लेल अधिकांशतः प्रयोग होयत अछि। कोनो नेनामे शैक्षणिक विकास एहि प्रकारेँ होइत अछि। सूनि कऽ, बाजिकऽ, पढिकऽ, आ लिखकऽ।

लेखन कौशलक विकासकेँ बुझव प्रशिक्षुलेल आवश्यक एहिलेल जे ओ एकर गहन अध्ययनक उपरांत अपन शिक्षार्थीमे लिखब क्षमताक विकास कऽ सकता।

यद्यपि अनेक चिन्तक एवं विचारक दृष्टिकोन फराक–फराक छनि। किछु चिन्तकक विचार छनि जे लिखबाक प्रक्रिया वाचिक व्यवस्थाकेँ स्थायित्व प्रदान करबाक साधन मात्र छैक। किन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोणसँ विचार कएला पर देखैत छी जे लिखब एवं बाज ब दुनू अवलोकन कएला पर देखैत छी जे हमरा लोकनि अपन भाव विचार के जहिना बाजकेँ अभिव्यक्त करए छी वा लिपिबद्ध कऽ अभिव्यक्त कयल जाइत आ बाजिकए अभिव्यकत करैत छी तहिना लिखिकए सेहो अपन भाव एवं विचारकेँ व्यक्त करेत छी। एहि अध्यायमे हमरा लोकनि लिखबाक अर्थ, विकास, प्रक्रिया पढ़बाक आ लिखबाक सम्बध, लिखबाक विशेषतः प्राथमिक कक्षासँ एहि कौशलक विकास, लिखबाक सिखयबामे आबयबाला समस्या एवं समाधान उपाय एवं लिखबाक विभिन्न प्रकारक अध्ययन आदि विषयक विस्तृत जानकारी प्राप्त करब।

लिखबाक अर्थः संकल्पना ओ विकास

लिखबाक शब्दक उत्पति संस्कृत 'लिख' धातुसँ बनल अछि। किछ् लोकक अनुसार इ क्रिया वाचक प्रतीकक स्थायित्व प्रदान करबाक समाधान मात्र छैक। मुदा एकर अर्थ संकुचित अर्थमे स्वीकृत अछि। जखन गम्भीरता पूर्वक विचार करब तऽ ई ज्ञात होएत जे लिखनाई भावाभिव्यक्तिक मुख्य साधन छैक। हम जाहि कार्यकेँ लिखकिए व्यक्त नहि कए सकैत छी? निश्चित कयल जाऽ सकैत अछि हमरा लोकनिक जीवनमे बहुत एहन उदाहरण एवं प्रयोजन भेटैत अिछ जतए हम अपन भावनाकेँ बाजिकए अभिव्यक्त करबाक अपेक्षा लिखिकए व्यक्त करयमे सरलता एवं सहजता अनुभव करैत छी। इतिहास एकर साक्षी अछि बहुत एहन विचारक भेलाह जे भावनाकेँ बाजबाक अपेक्षा लिखकए व्यक्त कएलनि अछि। जकर प्रत्यक्ष उदाहरण हमरा लोकनिक समाजमे देखयमे भेटैत अछि। आई बालमिकी, व्यास, कालीदास, बानभट्ट, विद्यापति, चन्दाझा, यात्रीजी सन बहुआयामी व्यक्तिक रचनाकार लोकनि लेखनाभिव्यक्ति द्वारा अपन विचारकेँ प्रस्तुत नहि होयत तऽ निश्चित रूपसँ हुनक रसात्मक आ ज्ञानमय विचारसँ अनभिज्ञ रहि जइतहुँ। बहुतो एहन बात हम सभ कोनो सुचना विचार आ अभिव्यक्तिकेँ याके सुरक्षित राखबाक लेल लिखैत छी। बहुतो एहन भाव जकरा लोग धरि पहुँचयबाक लेल लिखैत छि।
ओहन ज्ञान आ अनुभव जकरा संयोग कऽ राखब अर्थात सम्प्रति लिखित उद्देश्य भविष्यक लेल संयोगि कऽ राखबे नहि, अपितु विभिन्न दृष्टिसँ एकर उपयोग सिद्ध करब उचित अछि।

दोसर शब्दमे कहबाक तात्पर्य अछि जे भाषाक ध्वनिकेँ लिपिबद्ध करब वैह लिखब थिक। शुद्ध सुनिश्चित आ स्पष्ट शब्दावलीक माध्यमसँ भाव एवं विचारकेँ क्रमबद्ध आ स्पष्ट ढ़ंगसँ लिपिबद्ध करबाक प्रक्रियाँ, लिखित रचना कहल जाइत अछि।

शिक्षाविद्धक मत रखनो भिन्न छनि जे नेनाकेँ पहिले वर्णमालाक ज्ञान (पढ़बाक) देबाक चाहि। किछु शिक्षाविद्धक मत अछि जे पहिले लिखबाक ज्ञान देबाक चाही, कुछ शिक्षाविद्धक मत अछि जे पढ़बाक आ लिखबाक दुनू शिक्षा एके संग देबाक चाहि।
उदाहरणस्वरूप जखन एक शुरूआत प्रक्रियाक अनुरूप धरती पर ठेहुनियाँ दैत, चलैत अछि, सहारा लए ठाढ़ होइत अछि, फेर चलत सिखैत अछि। ओहिना पढ़नाई–लिखनाइ प्रक्रियामे सेहो किछु एहने घटना होइत छैक। जखन बच्चा पहिल शब्द बजैत अछि तऽ घरमे खुशी पसरि जाइत छैक पुनः लोग उम्मीद करय लगैत अछि जे कखन दोसर शब्द बाजत। परंतु सोचबाक बात ई छैक जे हम जखन ओ पहिल बेर पेन्सिल, पकड़िकए लकीर खिचैत अछि। कोनो बच्चाक लेल कोनो लिखित प्रतीकक अर्थ बनाएब वा जमीन देवाक अथवा कागज पर पहिल रेखा खीचब एक पैघ उपलब्धि छैक। ई एक डेग छैक लिखबाक प्रक्रिया जे बच्चा उठा लेने अछि एक पड़ाव पार करबाक दिशा अछि।
जतए बच्चाकेँ प्रारंभिक अभिव्यक्ति प्रोत्साहन एवं सम्मान भेटैत छैक ओतए बच्चा लेखन कौशलकेँ अन्यान्य बिन्दुकेँ पार करैत सुन्दर लेखन कौशल प्राप्त करैत अछि। जतय हम ओकर एहि प्रारंभिक अभिव्यक्ति स्वाभाविक नही मानिकए अपन ज्ञानकेँ ओकरा पर थोपैत छथि। तखन निश्चय बच्चामे लेखन कौशलक स्वाभाविक विकास नहि भए पाओत। प्रायः एहन देखल गेलैक अछि जे बच्च दोषारोपणसँ हतोत्साहित भऽकऽ अपन लेखन प्रवृतिसँ क्रमशः सदाक लेले विमुख भऽ जाइत अछि।

लिखबाक शुरूआत

सर्वप्रथम बच्चाके पेन पेन्सिल आ भठा (चौक) पकरबाक प्रोत्साहित केल जाउ। टेढ़–मेढ़ रेखा प्रतिकात्मक चित्र, वर्त्तनी, प्रारंभिक लिखनाई दिश अग्रसर होयब। जेना बच्चा एकाएक चलब नहि आरम्भ करैत अछि। पहिले ओ उलटब सिखैत अछि , ठेहुनिया दैत अछि, शनैः–शनैः ठाढ़ होइत अछि ओकरा बाद प्रथम डेग उठएबा प्रयास करैत अछि आ लटपटाकए खसि पड़ैत अछि। खसलापर परिबारक सदस्य द्वारा पुनः प्रोत्साहन भेटलापर लकड़ी गाड़ी क्रमशः चलाब सीख लैत अछि। बालक क्रमबद्ध रूपेँ चलब सीख कए विश्वक सर्वश्रेष्ठ धावक बनैत अछि।

आरम्भिक चरणमे बच्चाके लेल टेढ़–टूढ़ लकीर अभिव्यक्तिक एक माध्यम होइत छैक। एहि लकीरमे बात छैक अर्थ छैक, भाव छैक, आ प्रारम्भिक लेखन दिश अग्रसर होयबाक क्षमता आ विश्वास छैक। बच्चाक टेढ़–टूढ़ लकीर पढ़बाक लिखबाक प्रक्रिया एक अत्यधिक आवश्यक अंग अछि। यदि हम सभ एहि टेढ़–टूढ़ लकीरकेँ नहि प्रोत्साहित करबैक तऽ बच्चा पढ़वा लिखबाक प्रयासमे उलझि कए रहि जाएत। बच्चाक एहि पहिल लकीरके कक्षामे बिना रोक टोक स्वीकारबाक आ ओहि पर बातचीत करब महत्त्वपूर्ण छैक। किएक तऽइ लकीर बच्चाक लेखनक पहिल महत्वपूर्ण पड़ाव छैक जत बच्चा पढ़बा लिखबाक क्रियाकेँ सार्थक रूपमे देखि रहल अछि। बच्चा बूझि रहल अछि जे मनक बात लिखल जा सकैत अछि, आ लिखल गेल बातकेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

लिखबाक आरम्भ लिपिक विकाससँ होइत अछि। वर्तमानमे तिरहुता, देवनागरी, फारसी, रोमन आदि लिपिमे बच्चा लेखनाभिव्यक्ति आरम्भ करैत अछि। प्रारंभिक समयमे बच्चा टेढ़–टूढ़ लकीर एवं बिन्दुक रूपमे किछु सिलेट पुस्तिका एवं भिति चित्र अकित करैत अछि प्रोढ़क दृष्टिमे एकरा लिखब नहि कहि सकैत छी किएक तऽ ओहिमे कोनो अर्थ नहि दिख पाबैत छथि। किन्तु बच्चक दृष्टिसँ देखब तऽ एहि टेढ़–टूढ़ रेखामे से हो हमरा लोकनिकेँ एक अर्थ नुकाएल भेटत। तखन बच्चाकेँ डाटल नहि जाए बल्की प्रोन्साहित केल जाए, तऽ बच्चाकेँ मनोबल बढ़ि जायत। एहि तरह वास्तवमे देखल जाए तऽ मानव जीवनमे लेखनक विकास एहि अवस्थसँ प्रारम्भ भऽ जाएत अछि।

बच्चाक जखन हाथ स्थीर भ गेलाक बाद बच्चाकेँ वर्णमालाक सिखायबाक शिक्षकक पहिल पड़ाव अछि। वर्णमालाक शुरूआत स्वरवर्णसँ कराओल जाय तऽ नीक रहत। वर्णमाला शिख लेलाक बाद बच्चाकेँ एक वर्णसँ दोसर वर्णकेँ जोड़ब अथवा संयुक्ताक्षर वा मात्रा लिखबाक अभ्यास करबाक चाहि। एहि तरहे बच्चाके चित्र जेना फल फुल बनयबाक सिखओल जायत अछि। आमक चित्र बनाकेँ आम लिखकेँ बुझाओल जाय तखन जल्दी बुझ जायत।

<u>लिखबाक शुरूआतमे शिक्षकेँ नेना पर विशेष ध्यान देब वाला योग बातः</u>

- बच्चाके सर्वप्रथम सुन्दर आ शुद्ध लेखन सिखायबक चाही।
- नेनाकेँ शब्दक वर्तनी ठिकसँ करे ओहि पर विशेष ध्यान देबाक चाहि।
- नेनासँ वर्णक सही बनावट आ शब्द वर्णक बीचमे कते दुरी होबाक चाही।
- साफ तथा सुस्पष्ट लिखबाक प्रयास कराओल जाय।

श्यामपट्ट पर एक शब्द लीखि ओकरा बच्चाकेँ अनुकरण करबाक लेल कहबाक चाही आओर ओही शब्दसँ कोनो चित्र जेना 'अ' सामने अनारक चित्र बनाके समझाओल जाए तथा 'च' चरखा चित्रकेँ 'त' तरबुजक चित्र 'म' मछलीक चित्र बनाकेँ बुझाओल जाए। छात्रक स्मृतिक आधार पर शब्द सभ सिखयबाक प्रयास करबाक चहि। बच्चाके पहिले अपन नाम, पिताक नाम आ संबंधितक नाम गाम सिखयबाक चाहि एहिसँ बच्चाक मनोबल बढ़ते अछि।

लिखनाइक विशेषता

सरल, जटिल आ आलंकारिक लोकनि अपन दिनचर्याक प्रारम्भ समाचार पत्रक अध्ययनसँ करैत छी। जतए एहन सुविधा नहि अछि ओतएक अपराह्न वा साँझ कऽ लोक निश्चित रूपसँ पत्र पत्रिकाक अवलोकन करैत अछि। समाचार पत्रमे लिखित भाषाकेँ एक सामान्य साक्षर व्यक्ति सेहो सुगमतापूर्वक पढ़िकए अर्थ बूझि लैत अछि। ई लेखनक स्वाभाविक एवं सरल स्वरूप अछि। एकरा हमरा लोकनि सरल लेखनक रूपमे स्वीकार कए सकैत छी।

जटिल लेखनसँ तात्पर्य एहन वाक्य रचना एवं शब्दक चयनसँ अछि जे सामासिक होइक। जकर वाक्यक स्वरूप पैघ आ अर्थ बोधमे सुगमता नहि होइक। मिश्र वाक्य एवं संयुक्त वाक्यकेँ जटिल लेखनक उदाहरा बूझल जाए सकैत अछि। आलंकारिक लेखनसँ तात्पर्य एहन लेखनसँ अछि जाहिमे लक्षण आ व्यंजनाक प्रयोग होइक। ओकर सामान्य अर्थ भिन्न होइत अछि मुदा विशिष्ट अर्थ ओहिसँ पूर्ण रूपेण भिन्न होइत

अछि। हरिमोहन झा, गोविन्द दास, सुमन जी प्रभृत रचनाकारक रचनामे पर्याप्त अलंकारिक लेखनक उदाहरण भेटैत अछि। देखल जाय विद्यापतिक पाँती –

सरसिज बिनु सर, सर बिनु सरसिज
की सरसिज बिनु सुरे।
की यौवन पिय दूरे।

अर्थात कमलक अभावमे पोखरिक शोभा नहि निखरैत छैक आ ने पोखरिक शोभा कमलक अभावमे होइत छैक। ठीक ओहिना यौवनक अभावमे शरीरक सुन्दरता नहि छैक आ ने शरीरक अभावमे यौवनक सुन्दरता होइत छैक आ ओहि शरीर आ यौवनक जे सौन्दर्य यदि ओ अपन प्रियतमसँ दूर रहैत अछि यथा कमल देवता पर शोभामान नहि भेल तऽ ओकर की सौन्दर्य अर्थात किछु नहि।

यद्यपि काव्यमे एहन आलंकारिक लेखन ओकर गौरबक दृष्टिए होइत अछि, किन्तु लेखनक ई स्वरूप बालावस्थामे अनुपयुक्त जेना होइत अछि। किएक तऽ बच्चा एहि आलंकारिक एवं जटिल लेखनकेँ नहि बूझि पबैत अछि तेँ अध्यापकक कर्तव्य छनि जे ओ बच्चापर एहि जटिल व्यवस्थाकेँ थोपबाक अपेक्षा ओकरा बूझबाक अनुरूपहि लेखनाभिव्यक्तिक प्रयोग करी एवं छात्र लोकनिकेँ सेहो एहि लेल प्रोत्साहित करथी।

प्राथमिक स्तरपर बच्चाकेँ कोनो निश्चित तरीका बुझएबा पर जोड़ नहि देल जएबाक चाही। बच्चाकेँ अपना अनुरूपहि लिखबाक तरीकाकेँ अपनाबए देबाक चाही अन्यो स्तरपर बच्चाकं मौलिकता ओकर निबन्ध वा अन्य लेखन कलामे झलकबाक चाही। शिक्षक द्वारा कोनो विशेष उतरक अपेक्षा नहि कएल जएबाक चाहि। जेना मायपर निबन्ध लिखबाक लेल कहल जाए तऽ ई आवश्यक नहि जे बच्चा अमुक लेखक वा अमुक पुस्तकक आधार पर अपन बात राखय। ओकरा मायपर अपन ज्ञान वा ओकरा सम्बन्धमे अपन विचारकेँ अभिव्यक्ति करबाक पूर्ण अवसर भेटबाक चाही। प्रोत्साहन भेटबाक चाही। लेखनक पर्यापत अवसर दए बच्चाक सृजनात्मक, कल्पनशीलता आदिकेँ प्रोत्साहित कएल जाए सकैत अछि। (साभार–BCF-पृ0–41)

प्राथमिक कक्षामे लेखन कौशलक विकासक स्वरूप–चित्र बनाएब, रेखाचित्रसँ कहानी बनाएब एवं ओकरा लिखबँ, अपन रूचिक वस्तुक संबंधमे लिखब, कहानीकेँ आगू, बढ़ाकए लिखब श्रुतिलेख, लयातमक शब्द आ तुकबन्दीक निर्माण आदि सिखाओल जएबाक चाही। प्राथमिक स्तरक कक्षामे बच्चाकेँ लेखन कौशल स्वाभाविक रूपसँ विकसित करएमे सबसँ अधिक जोड़ एहि बातपर देल जएबाक चाही जे बच्चा कोनो प्राकरकेँ वर्णमालाकेँ सीखि जाए। प्रायः अध्यापकेँ ई सोच होइत छनि जे बिनु वर्णमालाकेँ ज्ञानक लिखबाक प्रक्रिया आरम्भ नही भए सकैत अछि। किन्तु यदि एकरा सूक्ष्मरूपसँ विश्लेषण कएल जाए तऽ कहल जाए सकैत अछि जे वर्णमालापर आवश्यकतासँ अधिक बल देल जाइत अछि। आरम्भहिसँ हमरा लोकनिकेँ ई ध्यान देबाक आवश्यकता होइछ जे हम बच्चाकेँ लिखबाक कोन प्रकारेँ अवसर प्रदान कए रहल छी आ उपर्युक्त तरीकासँ आकलन करयसँ पूर्व ई परम आवश्यक अछि जे हम बच्चाकेँ अपन मनक बात लिखिकए अभिव्यक्त करबाक अवसर दी। तखनहि लेखन काजसँ बच्चा जुड़ि सकैत अछि। एहिसँ हुनक लेखन कार्यमे विविधता सेहो ओतैक।

प्राथमिक कक्षामे लेखन कौशलक विकासक विविध तरीका जे निम्नः–

1. **चित्र बनाएब** – बच्चा चित्रक माध्यमसँ स्व्यं अपन बात कहि सकैत अछि आ आनन्द उठा सकैत अछि। ओकरा अपन बात बाजबाक संगहि एक, आओरो ढ़ंगे कहबाक अवसर भेटैत छैक। परन्तु शिक्षक/अभिभावक बच्चाकेँ चित्र लेखनपर वेशी ध्यान नहि दैत छथि आ पुनः ई बूझि नहि पबैत छथि जे ई ओकर आरम्भिक लेखनसँ जुड़ल पहिल चरण छैक। तेँ आरम्भिक चरणमे चित्र लेखन पढ़ब–लिखब सिखबाक प्रमुख अंग छैक। शिक्षक आ अभिभावककेँ एकरा बूझबाक चाही। एकर आकलन सेहो करबाक चाही।

2. **रेखा चित्रक माध्यमसँ कहानी बनाकए लिखब** – हमरा लोकनि रेखा चित्रसँ कहानी बनाकए बच्चाक लेखन कौशलक विकास कए सकैत छी। पाठ्यपुस्तक अखबार आदिमे छपल रेखा चित्रकेँ बूझि रंग भरबा कए बच्चासँ छोट–छोट कहानी बनबा कए ओकरा प्रोत्साहित कएल जाए सकैत अछि। एहि पर चर्चा सेहो कएल जाए सकैत अछि। चित्र आकर्षक होइक चित्रमे बातचित करबाक पर्याप्त सम्भावना होइक चित्रक चयन करबा काल एहि बिन्दुपर ध्यान देल जाए सकैत अछि।
    - रोचकता
    - स्पष्टता
    - बच्चाक परिवेशसँ जुड़ाव
    - हिंशासँ मुक्त

बच्चाक संग बैसिकए चित्रपर चर्चा करी आ बच्चाकेँ विवरणक लेल जे चार्टपर लिखू एवं बच्चाक संग मिलि कए पढू। स्थानीय/क्षेत्रीय त्योहारोसँ जुड़ल चित्र स्थानीय घटना आदिसँ जुड़ल चित्र विवरण एवं लेखनक विषय भए सकैत अछि।

अपन रूचिक वस्तुक सम्बन्धमे लिखब – सुन्दर लेखन ओ बूझल जाइत अछि जाहिमे लेखक अपन दृष्टिकोण आ लिखल गेल बातसँ ओकर लगाब होइत छैक। बच्चाकेँ सेहो अपन दृष्टिकोणक विकास करबाक अवसर लेखन सम्बन्धित गतिविधि द्वारा देल जयबाक चाहि। बच्चासँ लेखन पूर्व चर्चा करब, ओकरा नव–नव विचारकेँ लेखनक पूर्व बच्चासँ चर्चा कए लेथि जे ओ रहल छथि जे ओहिमेसँ कोन–कोन बात सम्मिलित करबाक सम्बंधमे सोचि रहल छथि आ कोन ओकरा लिखबाक लेल प्रेरित करैत छनि। तेँ कोनो लेखनक पूर्व बच्चासँ चर्चा कए ली जे ओकरामे कोन कोन बात सम्मिलित करबाक सम्बंधमे सोचि रहल अछि। यदि बच्चा कोनो विषयपर नहि लिखय चाहैत अछि आ चर्चाक बादो ओ सक्षम अनुभव नहि करैत अछि तऽ ओकरा एतेक छूट अवश्य भेटबाक चाही जे ओ अपन विषय बदलि लिए। विशेष रूपसँ प्रारम्भिक कक्षाक बच्चाकेँ लेखनक अवसर ओकर जिनगीसँ जुड़ल अनुभव जे कि ओकर बहुत करीबी होइक, ओहिसँ सम्बन्धित होएबाक चाही। एहिसँ बच्चाकेँ ई स्पष्ट होइत छैक जे की की लिखबाक अछि आ कोना लिखबाक अछि एवं ओकरा अपन बात खुलि कए कहि देबाक, ओकर अपन दृष्टिकोणक निर्माण होइत छैक संगहि ओकर आत्मविश्वास सेहो बढ़ैत छैक।

कहानीकेँ आगू बढ़ाकए लिखब–हमरा लोकनि कहानीकेँ आगू बढ़ाएब सिखाएब प्रारम्भिक कक्षाक छात्रक लेखन कौशल बढ़ा सकैत छी। कहानीक मूल सन्दर्भमे परिवर्तन कए जे यदि एहन होइत तऽ की होइत? तखन निश्चये बच्चा अपन कोमल कल्पना सँ विविध सन्दर्भकेँ सन्निहित करैत अछि। शनैः शनैः ओकर रूचि कथा लेखनक प्रति बढ़ल जाइत छैक। बच्चाक संग मिलिकए लगपास रहयवाला पालतू जानवरक, घरक सम्बन्धमे चर्चा करी, संगहि बच्चाकेँ सोचबाक मौका दी। यदि जानवरक घर बदलि देल जाए तऽ की होएत जेना –

- पड़बाक खोंतामे कौआ आबि कए रहल लागत तऽ?
- मूसक घरमे चिड़इ चलि जाय तऽ?
- चुट्टीक घरमे चाली रहि पाओत?
- यदि गाय हमरा कक्षामे आबि जाय तऽ?

एहि गतिविधिसँ निश्चय बच्चामे लिखबाक प्रति अभिरूचि बढ़ैत जाएत।

1. **श्रुतिलेख** – श्रुतिलेख तात्पर्य सुनिकए लिखब अछि। एहि प्रक्रियामे शिक्षक गद्यांश किंवा पद्यांशक किछु भागकेँ बजैत छथि पुनः ओकरा लिखैत छथि।
2. **सुलेखः–** सुलेख अर्थ भेल सुन्दर लेखन एकर प्रयोग कयाला पर छात्रक लेखने जाँच मऽ जाइत छैक। एहि तरहक प्रयोग प्रतिदिन कयला पर छात्रक लेखनमे सुधार तँ होइत छैक संगहि छात्र लेख्न दिस आकृष्ट सेहो होइत अछि।
3. **चित्रक सहयोगसँ लेखः–** एहि तरहक प्रयोग कयलापर शिक्षककेँ बुझबामे सुगमता होइत छनि संगहि छात्रकेँ रोचक सेहो लगैत छैक।
4. **अनुच्छेद लेखनः–**अनुच्छेद लेखनक आरंभ छात्रकेँ कोनहुँ चित्रकेँ कक्षाक देखाकऽ कयल जा सकैत अछि। ओकरा अपन माता–पिता कक्षा अध्यापक पर अनुच्छेद लिखवा लेल कहल जा सकैत अछि। छात्राकेँ ओकरा द्वारा देखल गेल स्थानक संबंधमे लिखबाक लेल कहल जा सकैत अछि।
5. **कथा लेखनः–** कथा मूलतः व्यक्ति वस्तु स्थान सँ संबंधित होइत अछि। एहिमे कोनहु एक गोट घटनाक वर्णन कयल जाइत अछि।
6. **निबंधः–** लेखन सेहो लिखित रचनाक एकता प्रकार थिक एकर अन्तर्गत छात्रकेँ देल गेल विषय पर कहल जाइत छेक। एकर अन्तर्गत छात्र कतेक मोनमे रखैत अछि अपन विचार ओ समस्याकेँ कतेक नीक ढ़ंगसँ संगठित कऽअभिव्यक्त करैत अछि आदिक जानकारीप्राप्त होइत अछि।
7. **पत्र लेखः–** जनैत छी जे लिखित भाषाक सभसँ महत्वपूर्ण क्रियाकलाप पत्र लेखन अछि। एहिसँ हमरा सभकेँ किछु ने किछु संबंध रहैत अछि। किएकतऽ हमरा सभकेँ औपचारिक वा अनौपचारिक रूपमे कखनो ने कखनो पत्र लिखबाक आवश्यकता पडिते अछि।
8. **संवाद लेखः–** संवादक अर्थ भेल दू व्यक्तिक बीचक गप–शप प्राथमिक स्तर पर छात्रकेँ संवाद लेखनक अभ्यास लिखित योग्यताक विकासक लेल एकता रोचक मुक्ति छैक।

<u>मूल्यांकन हेतु प्रश्नः–</u>

1. पढ़बाक अर्थसँ परिचय कराउ।
2. पढ़बाक प्रकार कौन–कौन अछि वर्णन करू।
3. पढ़बाक सीखबाक प्रमुख विधि वर्णन करू?
4. पढ़बाकसमस्या ओ समाधान पर सम्यक विचार करू
5. स्वर ओ मौन पठनक विशेषता बताउ
6. लेखनक प्रकारक अपन भाषामे व्यख्या करू?
7. लेखनक की अर्थ ? अपन विचार प्रकट करू
8. बालकमे लेखन कौशल विकास लेल की करबाक आवश्यकता अछि ?स्पष्ट करू।
9. लेखन कौशलक विकास कौना होयत अछि? अपन भाषामे परिचय कराउ
10. पढ़ब आ लिखबमे अंतर सपष्ट करू।

इकाई–4

शिक्षण–सहायक सामग्री, सिखबाक योजना एवं मूल्यांकन

एहि इकाईमे

- शिक्षण सहायक सामग्रीक संकल्पना ओ मैथिली शिक्षण
- मुद्रित ओ चित्र सामग्री
- मल्टीमीडिया:ऑडियो.वीडियो
- प्रौद्योगिकीक उपयोगक अवधारणाक चर्चा अछि।

परिचय

सभ किछु सिखबाक आधार अनुभव होइत छैक। प्रभावी अधिगमक लेल प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करब, जेना–वास्तविक वस्तु अर्थात् टेबुल, कुर्सी, खिड़की, खाम्ह, खुट्टा, लताम, केरा, कुर्त्ता आदिक देखायब सर्वाधिक उचित आ नीक तरीका थिक। मुदा, शिक्षक एहन सभ प्रकारक वस्तुकेँ वर्ग कक्षमे नहि आनि सकताह, जेना– बाँस, मेध, पहाड़, नदी, पोखरि आदि। शिक्षक बच्चाकेँ वर्ग कक्षसँ दूर मरूभूमि (मरूस्थल), जंगली जीव–जन्तु वा अतीतमे घटित घटनाक विषयमे जानकारी देबाक हेतु आ एहि अनुभव सभकेँ वास्तविकताक लग अनबाक लेल हुनका विभिन्न प्रकारक अधिगम सामग्रीक आवश्यकता पड़ैत छनि।

आब सभ गोटेकेँ ई स्वीकार्य अछि जे बच्चाकेँ सूचना आधारित ज्ञान देबाक अपेक्षा '**अनुभवसँ सिखबाक**' व्यवस्था करब बेसी उपयुक्त आ सहज सेहो। अतएव क्रिया–कलाप आधारित, बाल केन्द्रित, शिक्षण–अधिगम क्रिया सभकेँ प्रोत्साहित करबाक लेल जाहि सामग्रीक उपयोग कयल जाइछ 'शिक्षण–अधिगम सामग्री' (ज्मंबीपदह स्मंतदपदह डंजमतपंस) अथवा शिक्षण सहायक सामग्री कहबैछ। एहि प्रकारक सामग्रीक विशेषता अछि जे एकर निर्माण आ उपयोग दुनूमे बच्चाक सहयोगक अपेक्षा रहैछ। शिक्षण–अधिगम सामग्रीक अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक आ सहायक पुस्तकक संगहि वर्ग कक्षमे उपलब्ध वस्तु आ परिवंश सुलभ प्राप्य वस्तुक सर्वाधिक उपयोग करबाक चाही। जे प्राकृतिक ओ मानवीकृत दुहू प्रकारक भऽ सकैछ।

शिक्षण–सहायक सामग्री भाषा–शिक्षणकेँ प्रभावशाली तँ बनबिते अछि, संगहि शिक्षण–अधिगम प्रक्रियामे सहयोग आ एकरा उन्नति प्रदान करबामे सेहो सार्थक सिद्ध होइछ।

शिक्षण–सहायक सामग्रीक अर्थ

रुचिगर बनयबामे प्रयुक्त सामग्रीसँ अछि। अर्थात् विषयकेँ सरल, सुबोध बनयबा लेल एकर उपयोग होइछ।

शिक्षण उद्देश्यक मापदण्ड बच्चामे व्यावहारिक परिवर्तन होयब थिक। शिक्षक इच्छित व्यवहार परिवर्तनक लेल अधिगम परिस्थितिक सृजन करैत छथि, जाहिसँ बच्चामे अपेक्षित परिवर्तन देखल जा सकय। एतदर्थ शिक्षण आ अधिगमक उद्देश्य प्राप्ति लेल शिक्षण सामग्रीकेँ जुटाओल जाइछ। तें शिक्षक अधिगम सामग्रीक चयनसँ बच्चामे निम्नांकित संभावनाक इच्छा रखैत छथि:–

- व्यवहारमे परिवर्तन (Learning change in Behaviour)
- ज्ञानार्जन (Aquiring of knowledge)
- अवबोध विस्तार (Broadening of Understanding)
- कौशल सुधार (Improvement in Skills)
- दृष्टिकोणक विकास (Development of Attitudes)
- गहन अनुभूति (Deepening of Thoughts)

व्यवहार परिवर्तने अधिगम थिक जे ज्ञानार्जन, अवबोध विस्तार, कौशल सुधार, दृष्टिकोणक विकास, अनुभूतिक गहनता आदि थिक। व्यवहार परिवर्तनकेँ साकार करबाक लेल शिक्षणमे चार्ट, मॉडल, उपकरण, खेल, कविता–कथा (लिखित/मौखिक) सभक प्रयोग कयल जाइछ। ई सभ किताबक अपेक्षा प्रत्यक्ष ज्ञान–प्राप्तिक साधन थिक।

परिभाषा

i. योकम आ सिम्पसन (Yoakam & Simpson) क अनुसारेँ– ''ई उपकरण शिक्षणक विधि नहि थिक, अपितु विभिन्न विधि सँ शिक्षणमे प्रयुक्त साधन थिक।''[1]

> 'There Instruments are not the teaching methods, but are means used in different methods of teaching. That is why they are termed as teaching materials or aids? –Yoakam & Simpsom.

ii. थुट आ गेरबैरिचक शब्दमे– ''शिक्षण सामग्री ओ साधन थिक जे अध्यापककेँ अपन कार्य सफलता आ शीघ्रतासँ करबामे सहायक होइछ।''[2]

> "Teaching aids are devices that help the teacher to accomplish things quickly and effectively." – Thut & Gerberich.

iii. आर0एम0 मिश्राक मतानुसार – ''शिक्षण सामग्री साधन थिक जाहि सँ समय विशेषपर विषयमे रूचि जागृत कयल जाइछ।''3

> "Teaching aids are means by witch interest is created at specific time in the subject." – R.M. Mishra

संक्षेपमे

अधिगमक प्रति सक्रिय भऽ कऽ बच्चा अपन व्यवहारमे परिवर्तन आनि सकैछ, जकरा लेल विभिन्न साधन जुटाओल जाइछ, जाहिसँ पाठ्य–वस्तु स्पष्ट, सुबोध ओ रुचिपूर्ण भऽ जाय आ बच्चा ओहिमे क्रियाशील बनल रहय। एही साधन सभकेँ शिक्षण अधिगम सामग्री वा सहायक सामग्रीसँ अभिहित कयल जाइछ।

शिक्षण–अधिगम सामग्रीक उद्देश्य

शिक्षण अधिगम सामग्रीक उपयोगसँ निम्न पूर्त्तिक संभावना व्यक्त कयल जा सकैछः–

1. अमूर्त्त (Abstract) वस्तुकेँ मूर्त्त (Concrete) रूपमे परिणति।
2. बच्चामे निरीक्षण शक्तिक विकास करब।
3. बच्चाक ध्यान पाठ दिस केन्द्रित करब।
4. पाठ्य–सामग्रीकेँ सरल, स्पष्ट ओ बोधगम्य बनायब।

5. तीव्र ओ मंदबुद्धि बच्चाक योग्यतानुसार शिक्षा देब।
6. अभिरुचिपर आशाक अनुकूल प्रभाव छोड़ब।
7. पढ़बामे अधिक रुचि बढायब।
8. बच्चाकेँ अधिकाधिक क्रियाशील बनायब।
9. सिखबाक जे धारणा शक्ति ताहिमे सुधार करब।
10. बच्चा लग तथ्यात्मक जे सूचना सभ उपलब्ध अछि तकरा रुचिपूर्ण ढ़ंगसँ प्रस्तुत करब। संगहि।
11. बच्चाकेँ पाठक प्रति रुचि उत्पन्न आ विकसित करब।
12. सार्थक शब्द भंडारमे वृद्धि करब।
13. अनुभवक सीमा–विस्तार करब।
14. विविधताक गुण उत्पन्न करब।
15. बच्चाक अभिव्यक्ति क्षमता आ कल्पना शक्तिक विकास करबाक संग सूक्ष्म चिंतनक योग्यता प्रदान करब।

अतएव 'शिक्षण–अधिगम सामग्री' सिखबाक उद्देश्य प्राप्ति हेतु प्रयुक्त होइछ। एहि सामग्रीक उपयोग शिक्षण कार्यकेँ प्रभावी बनयबाक लेल, ठीकसँ सम्पन्न करबाक लेल साधनक रूपमे होइछ। एकरा साध्य (लक्ष्य) अथवा सभ किछु यैह थिक से मानि लेब ठीक नहि। तें एकर प्रयोग उचित संदर्भक रूपमे आवश्यकतानुसार करबाक चाही।

शिक्षण–सहायक सामग्रीक आवश्यकता

भाषा–शिक्षणमे शैक्षणिक उपकरण अथवा श्रव्य–दृश्य साधनसँ तात्पर्य ज्ञानेन्द्रिय अनुभव द्वारा कोनहुँ वस्तु वा क्रियाक मानसिक चित्र बनायब आ एहि मानसिक चित्रेक आधारपर तत्सम्बन्धी निर्णय लेब थिक। अतएव शिक्षण द्वारा ज्ञान प्रत्यक्षीकरणक लेल आवश्यक अछि जे शिक्षण–कार्यमे आवश्यकतानुसार एहन शैक्षणिक उपकरण वा श्रव्य–दृश्य साधनक उपयोग कयल जाय, जाहि माध्यमसँ वस्तु भाव विचारक विम्ब ग्रहण करब संभव भऽ सकय। व्यापक दृष्टिसँ शैक्षणिक उपकरणक तात्पर्य शिक्षण हेतु प्रयुक्त ओहि सभ साधनसँ अछि जाहिसँ शिक्षण कार्यमे सहायता भेटैत अछि आ पाठकेँ सम्प्रेषणीय बनयबामे सुगमताक प्राप्ति होइछ।

शिक्षण–क्रियाकेँ सरल, सजीव, सुग्राह्य ओ प्रभावी बनयबाक लेल आवश्यक अछि जे नवीन ज्ञान भाव आ विचार एहि तरहेँ प्रस्तुत कयल जाय, जाहिसँ ओकर स्वरूप प्रत्यक्षतः स्पष्ट आ मूर्त्त भऽ सकय। एहि हेतु शैक्षणिक उपकरण सभक आवश्यकता पड़ैछ। एहि उपकरणक सहायतासँ अमूर्त्त आ सूक्ष्म जटिल विषय वस्तु केँ, विचारकेँ सरल, सुबोधगम्य आ स्वरूपगत बनाओल जा सकैछ। एकर प्रयोगसँ पाठकेँ क्रियात्मक आ व्यावहारिक बनयबामे सहायता भेटैछ।

एकटा मनोवैज्ञानिक सत्य ई थिक जे ज्ञानेन्द्रियकेँ जतेक बेसीसँ बेसी क्रियाशील राखल जाय, बच्चा ताही अनुकूल ज्ञानकेँ ग्रहण करबामे सफल होयताह। बच्चाकेँ व्याख्यान आ वाचनक माध्यमसँ देल गेल शिक्षा हुनका निष्क्रिय श्रोताक रूपमे परिणत कऽ दैछ। जँ इन्द्रियकेँ क्रियाशील राखल जाय तँ बालककेँ अपन दृष्टिकोण विकसित करबामे मदति भेटतनि, हुनकामे परिपक्वताक विकास होयतनि। से तखने संभव होयत जखन ओ अधिगम सामग्रीक आवश्यकतानुसार उपयोग करताह। सम्प्रति शिक्षाविद् लोकनि एहि तथ्यकेँ एक स्वरमे स्वीकार करैत छथि जे बच्चाक इन्द्रियकेँ अधिकाधिक क्रियाशील राखब बेसी हितकर अछि।

- **शिक्षण–सहायक सामग्रीक महत्त्व**

प्राचीन कालहिसँ शिक्षकलोकनिक ई अभिलाषा रहल अछि जे ओ अध्यापन कालमे शैक्षणिक गतिविधिकेँ ततबा प्रभावी बनाबथि जे बच्चा ओकरा सरलता सँ सीखि सकय। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री पेस्टलॉजी वस्तुक प्रत्यक्ष अनुभवपर जोर देलनि तऽ रूसो आ कामेनियस जड़ शब्दक ज्ञानकेँ महत्वहीन बुझलनि। फ्रॉबेल आ मॉन्टेसरी दृश्य–श्रव्य साधनक प्रयोगकेँ अपन शिक्षण–पद्धतिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान देलनि। आब सभ शिक्षाविद एहि विचारक समर्थक छथि जे अधिगम सामग्रीक मदतिसँ शिक्षण कार्यकेँ अधिक प्रभावशाली बनाओल जा सकैछ, तेँ एहि सामग्रीक महत्व निम्नांकित अछिः–

1. मनोविज्ञानक विकाससँ ई सिद्ध भऽ गेल अछि जे एकाधिक इन्द्रिय द्वारा प्राप्त ज्ञान बेसी स्पष्ट, पूर्ण, सहज, रुचिगर आ स्थायी होइछ।
2. मात्र व्याख्या वा वाचनसँ बच्चामे निष्क्रियता अवैछ आ ओ स्वयं निष्क्रिय रहैछ, जखन कि अधिगम सामग्री द्वारा पठित अध्यायमे ओकरा प्रत्यक्ष रूपसँ किछु देखबाक, विचार करबाक आ अभिव्यक्तिक अवसर भेटैत छैक।
3. आन–आन देश–परदेशक घटनाक वर्णनकेँ चित्रमय, चलचित्रमय बनाकऽ प्रस्तुत कयलापर विषय–वस्तु सरल, स्पष्ट, सहज, सुग्राह्य आ सुरुचिपूर्ण भऽ जाइछ।
4. अध्यापककेँ अधिगम सामग्रीक माध्यमसँ शिक्षणकार्य कयलापर श्रमक बचाव होइत छनि, संगहि पाठकेँ आकर्षक बनयबामे आ अनुशासनात्मक ढ़ंगसँ पढ़यबामे सुविधा होइत छनि।
5. अपनेसँ कऽ कऽ सिखबाक प्रवृत्तिकेँ एहिसँ प्रोत्साहन भेटैत छैक। तेँ बच्चा थाकि जयबाक, बिनु अनुभव कयने ई मानिकऽ एकटा स्थायी ज्ञानक वृद्धि करैछ जे प्राप्त ज्ञानसँ ओकरा अनुभवक प्राप्ति भेलैक अछि। एहिसँ अनुभवकेँ गति आ दायित्व प्रदान कयल जा सकैछ।
6. अतीतक बात सभकेँ चित्र द्वारा स्पष्ट करैत ओकरा मूर्त्तरूपक ज्ञान देल जा सकैछ। एहिसँ क्लिष्ट तथ्य सेहो बुझबामे आसान भऽ जाइछ।
7. छोट वा सूक्ष्म वस्तुकेँ पैघ आकारमे प्रस्तुत कऽ ओकर तथ्यात्मक ज्ञान बच्चाकेँ स्पष्ट रूपेँ देल जा सकैछ।
8. अधिगम सामग्रीक जे विषय–वस्तु तकर वास्तविकता प्रकट कयल जा सकैछ। एहिसँ पाठकेँ रुचिपूर्ण आ बोधगम्य बनाओल जा सकैछ।
9. अधिगम सामग्रीक माध्यमसँ अर्जित ज्ञान स्थायी स्मृतिक अंग बनि जाइत अछि। कारण जे तथ्यकेँ आत्मसात कऽ लेल जाइछ।
10. श्रव्य–दृश्य साधन द्वारा कम समयमे बेसी सिखाओल जायब संभव थिक। एकर प्रयोगसँ बच्चाकेँ व्यस्त राखल जा सकैछ।
11. अधिगम सामग्रीक उचित प्रयोगसँ बच्चाक कल्पना शक्तिक विकास कयल जा सकैछ। ई साधन (प्रोजेक्ट) बच्चा द्वारा स्वयं प्राप्त ज्ञानक योजनामे सहायक सिद्ध होइछ।
12. विषय–वस्तुक कठिन स्थलक स्पष्टीकरण उचित श्रव्य–दृश्य सामग्री द्वारा प्रस्तुत कयलापर बच्चा सरलतासँ बुझि जाइछ।
13. एकर प्रयोगसँ बच्चाक ध्यान पाठ दिस केन्द्रित कराओल जा सकैछ।
14. अधिगम सामग्रीक प्रयोगसँ शिक्षकक समय, श्रमक वचत केर संग वर्ग कक्षमे अनुशासन बनल रहैछ।

- **शिक्षण–सहायक सामग्रीक उपयोग**

भाषा–विषयक आवश्यकताक प्रसंग विचार करैत ई स्वतः स्पष्ट भऽ गेल अछि जे अधिगम–सामग्रीक उपयोगसँ शिक्षण कार्य सफल होइछ। आब आवश्यकता एहि बातक अछि जे सामग्रीक उपयोग कखन, कतेक, किऐक आ कोना कयल जाय।

एकटा सफल शिक्षकक सफलता एहि बातपर निर्भर करैछ जे हुनका द्वारा वर्ग कक्षमे देल गेल ज्ञानकेँ बच्चा सभ कतेक भागमे ग्रहण कऽ सकलाह। ई तँ सर्वमान्य अछि जे आइ शिक्षाक क्षेत्रमे नित नव आ व्यापक परीक्षण आ प्रयोग कयल जा रहल अछि आ ज्ञानकेँ अधिक स्पष्ट, विशद आ चिरस्थायी बनयबाक उपकरणक आश्रय लेल जा रहल अछि । एकर उपयोगक लक्ष्य अछि जे बच्चामेः–

i. तार्किक क्षमताक विकास करब।
ii. अनुभवक विस्तार करब।
iii. कल्पना शक्तिकेँ उत्तेजित करब।
iv. इन्द्रियकेँ क्रियाशीलता प्रदान करब।
v. महत्त्वपूर्ण विचारमे स्पष्टता आ प्रकाशक अवबोध करब।
vi. विषय–वस्तुमे स्पष्टता आनब।

शिक्षण–सहायक सामग्रीक प्रकार

कोनहुँ विधिसँ शिक्षा प्राप्त कयलासँ हमरालोकनिक मस्तिष्क क्रियाशील भऽ जाइछ। मस्तिष्ककेँ क्रियाशील बनयबामे हमर ज्ञानेन्द्रियक सभसँ पैघ भूमिका होइछ। क्यो ठीके कहने छथि जे– 'नेत्र आ कान नामक ज्ञानेन्द्रिय ज्ञानक प्रवेशद्वार थिक' तेँ शिक्षककेँ मदति एहि ज्ञानेन्द्रियक अधिकाधिक उपयोग सँ होअय। अस्तु एहन सामग्रीक विकास–निर्माण भेल जकर प्रयोगसँ शिक्षण कार्य अधिक प्रभावशाली भऽ सकय। भाषा–शिक्षणमे अधिगम सामग्रीकेँ मूलतः तीन भागमे विभक्त कयल जा सकैछः–

i. दृश्य सामग्री
ii. श्रव्य सामग्री
iii. दृश्य–श्रव्य सामग्री

i. दृश्य सामग्री

ओहन सभ प्रकारक साधन/ सामग्री जकरा देखि बच्चा पाठकेँ सरलता आ शीघ्रतासँ बूझि सकय, अपन ज्ञान–क्षितिजक विस्तार कऽ सकय–दृश्य सामग्री कहबैछ। जेना श्यामपट्ट, सूचनापट, पाठ्यपुस्तक, शैक्षणिक यात्रा, प्रतिरूप (डवकमस) वास्तविक पदार्थ, मानचित्र, कार्टून, चार्ट, रेखाचित्र, फ्लैश कार्ड, मैजिक लैटर्न, ओवर हेड प्रोजेक्टर, स्लाइड्स, चित्र विस्तारक (एपिडोस्कॉपी) कठपुतरी, माटिक वस्तु आदि।

प्रकार–उपयोग

एहि अध्यायकेँ विषय–विस्तारसँ बचयबाक लेल किछु–प्रमुख ओ प्रचलित दृश्य साधनक प्रसंग विचार करब प्रासंगिक होयत–

i. पाठ्यपुस्तक

अधिगम–सामग्रीक रूपमे पाठ्य–पुस्तकक उपयोग निम्न प्रकारेँ कयल जा सकैछः–

एकर उपयोग अस्पष्ट भावकेँ स्पष्ट करबाक लेल बच्चामे रुचि जगयबाक लेल आ पाठ्य–वस्तुकेँ स्पष्टताक संग रुचिगर, मनोरंजक, आ बोधगम्य बनयबाक लेल कयल जाइछ। किएक तऽ एहिसँ

इन्द्रियकेँ जोड़ल जाइछ आ चिंतनकेँ उचित दिशा प्रदान कयल जाइछ। ई अमूर्त्त केँ मूर्त्तरूप प्रदान करैछ। जेनाः–

- मौखिक रूप
- लिखित रूप

छोट–छोट नेनापर उदाहरणक बड़ बेसी प्रभाव पड़ैछ किएक तऽ ई

- ज्ञातसँ अज्ञात दिस
- स्थूल सँ सूक्ष्म दिस
- जटिलसँ सरल दिस
- अमूर्त्तसँ मूर्त्त दिस प्रेरित करयवला शिक्षण सूत्र पर आधारित अछि।

दृश्य साधनक सृजन/ रचना बच्चाक आँखिकेँ प्रभावित करबाक लेल होइछ, जाहिसँ ओ बूझि सकय जे कि देखाओल जा रहल छैक। भाषा अधिगममे वाचन आ लेखनक भाषा कौशलक विकासमे दृश्य साधन सहायक होइछ। किएक तऽ ओ बच्चाक नेत्रिन्द्रियकेँ उद्दीप्त करैछ। पाठ्यपुस्तक पठित अंशक पुनरावृत्तिमे सहायक होइछ। ई गृहकार्य, वाचन–अभ्यास आ लेखनकार्यमे (देखसी/देखाउँस) सहायक होइछ। पाठ्यपुस्तक आधार होइछ जे शिक्षण–उद्देश्यक पूर्त्तिमे सहायक होइछ। ई मूल्यांकनक आधारपर पाठ नियोजनमे सेहो सहायक होइछ।

ii. श्यामपट्ट

आने–आन विषय जकाँ भाषा–शिक्षणमे श्यामपटक परम्परागत शिक्षण–सामग्रीक रूपमे उपयोक करब आवश्यक भऽ जाइछ। एकर प्रयोगसँ बच्चाकेँ आँखिक उपयोगक उचित अवसर भेटैत छैक। किछु विशेष सामग्रीकेँ पहिनेसँ लिखिकऽ शिक्षक द्वारा वर्ग कक्षमे आनल जा सकैछ, जाहि लेल मोरूआ श्यामपटक उपयोग कयल जा सकैछ। श्यामपट बच्चाक लेल शब्दार्थ बोध, बर्तनी, शिक्षण, वाचनाभ्यास, लेखनाभ्यास आदि क्रियामे सहायक होइछ। भाषा–शिक्षणमे एकर निम्नांकित महत्व अछि–

(क) एहिसँ चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र प्रस्तुत कयल जा सकैछ।
(ख) एकर प्रयोगसँ महत्वपूर्ण प्रसंग दिस बच्चाक ध्यानाकर्षित होइछ।
(ग) ई–भाषा तत्त्वक स्पष्टीकरणमे सहायक होइछ।
(घ) एहि माध्यमसँ प्रसंगक सार लेखनमे सरलता उत्पन्न कयल जा सकैछ।
(ङ) एहि माध्यमसँ रचना कार्यमे बिन्दु संकलन सम्भव अछि।
(च) व्याकरण पाठमे उदाहरण, शब्द अथवा वाक्य, परिभाषा आ नियम ओ सिद्धान्तकेँ श्यामपट पर लीखि कऽ शिक्षण गतिविधिकेँ रुचिगर बनाओल जा सकैछ। एहि तरहेँ रचना पाठमे सेहो श्यामपट्टक विशेष प्रयोग होइछ। रचना शिक्षणक प्रश्नोत्तर, रूपरेखा, उद्‌बोधन, वाद–विवाद, शब्द प्रधान प्रणाली, आ समवाय प्रणाली आदिक उपयोग करबा काल श्यामपटक विशेष उपयोग होइछ। श्यापमट पर रूपरेखाक अंश, शब्द, वाक्य, प्रश्नादि लिखल जाइछ।

iii. चित्र

बच्चा चित्रा सभकेँ देखि बेसी आनन्दित होइछ। तेँ रुचि परिवर्तनक साधन रूपमे चित्रक प्रयोग लाभकारी होइछ। कोनहुँ पाठ विशेषकेँ आधार बनाकऽ प्रसंगानुकूल चित्रक निर्माण समीचीन होयत। जेना–पाठ प्रसंग 'जंगलक हिंसक पशु परिवेश'मे विभिन्न जंगली जीव–जन्तुक चित्र प्रस्तुत करैत ओकर परिवेशक

प्रसंग जनतव देलासँ विषयक धारणाकेँ बेसी स्पष्ट कयल जा सकैछ। विभिन्न प्रकारक हिंसक जानवरकेँ देखि बच्चा आह्लादिते टा नहि होयत, अपितु एहन जानवरक प्रकार सँ सेहो परिचित होयत।

iv. रेखाचित्र

जखन प्रत्यक्ष वस्तु/ वास्तविक पदार्थक अभाव होअय अथवा वर्ग कक्षमे ओकरा उपस्थित करब असंभव होअय अथवा जे वस्तुतः अमूर्त्त/ काल्पनिक अछि, भावाश्रित अछि, एहन वस्तुक आकृतिकेँ रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कयल जाइछ आ, पाठकेँ बोधगम्य बनाओल जाइछ। सन्धि, समासक भेद, प्रत्यय, उपसर्ग, वर्तनी, लिंग, वचन, कारक आदिसँ सम्बद्ध रेखाचित्र बच्चासँ तैयार कराओल जा सकैछ। रेखाचित्र वास्तवमे शिक्षकक मूक अभिव्यक्तिक साधन थिक।

v. मानचित्र

मानचित्रक प्रयोग भाषा–शिक्षणमे अधिक महत्वक नहि थिक, मुदा जँ पाठ्य–वस्तुमे भौगोलिक वा ऐतिहासिक विषय–वस्तुक समावेश होअय, तऽ मानचित्रक उपयोगसँ स्थितिकेँ स्पष्ट कयल जा सकैछ।

vi. प्रतिमूर्त्ति/प्रतिकीर्त्ति

जखन कोनहुँ वस्तुक वास्तविक स्वरूप चित्र द्वारा स्पष्ट करब संभव नहि होअय तखन ओहि वस्तुक प्रतिमूर्त्ति/मॉडल/प्रतिरूपक नमूना देखा कऽ स्पष्ट कयल जा सकैछ। एतय प्रत्यक्ष वस्तु दर्शन सर्वश्रेष्ठ विधि थिक। जेना शिल्प कला, ग्राम–पंचायतक मॉडल अदि।

vii. चार्ट

कतहु–कोनहुँ ठाम कोनहुँ विषय–वस्तुक ज्ञान करयबामे स्थायी चित्रणक आवश्यकता पड़ैक तऽ ओहन चित्रकेँ चार्टक स्वरूपमे आनल जा सकैछ। भाषा शिक्षणमे काल विभाजनककेँ चार्टक सहायतासँ व्यक्त कयल जा सकैछ। चार्टमे विचार आ तथ्यक मिश्रित आकर्षक योजना सन्निहित रहैछ। भाषाक चार्टमे व्याकरणक नियम, अध्यापन तालिका/ सारणी, गाछ–वृक्षक चार्ट, उपसर्ग–प्रत्ययक चार्ट, शब्द भेदक चार्ट, विलोम शब्दक चार्ट आदिकेँ सम्मिलित कयल जाइछ । उदाहरणार्थ

वर्ण विश्लेषण चार्टः–

- गोविन्द– ग+ओ+व+इ+न्+द्+अ
- शिवराज– श्+इ+व्+अ+र्+आ+ज+अ
- कृपा– क्+ऋ+प्+आ आदि

उच्चारण सिखबाक चार्टः–

- अभ्यास = अब्+भ्यास
- दैव = दै+व
- प्रशिक्षण = प्र+शिक्+ष्ण
- विश्वास= वि+श्वास आदि

पर्यायवाची शब्दक चार्टः–

- सूर्य– आदित्य, रवि, भानु, दिनकर, भास्कर इत्यादि
- चन्द्रमा– चाँद, मयंक, चंदा, शशि, रजनीकर इत्यादि

viii. फैल्ट बोर्ड

ई–श्यामपट्टे जकाँ एक प्रकारक बोर्ड थिक। एहिमे टोपीयुक्त पीनक सहयोगसँ बनल–बनायल चार्ट वा कविता आदिकेँ सम्बद्ध कयल जाइछ। कथा चित्रकेँ काटि कऽ पृष्ठभागमे रेगमाल लगा कऽ बोर्डपर टोपीयुक्त पीनक सहयोग सँ साटि देल जाइछ। जाहिसँ कथा–पाठ वा कविताकेँ मौखिक रूपेँ सुलभता सँ पढ़ाओल जा सकैछ। चित्र वा ओकर नामक कार्डकेँ एहि बोर्डपर लगा कऽ ध्वनि लिपिक शिक्षण कराओल जा सकैछ। वाक्य रचना, शब्द रचनाक अभ्यास सेहो एहिसँ कराओल जाइछ।

ix. शब्द पट्टी

शब्द पट्टीक निर्माण कतोक प्रकारेँ कयल जाइछ। एकर प्रयोग कऽ शब्दकेँ देखि ओही प्रकारक आनो–आन शब्दकेँ, ताकि एकक नीचाँ दोसर, तेसर, चारिम शब्दकेँ लगाओल जाइछ, एकवचन आ तकर बहुवचन, लिंग वर्गीकरणक लेल शब्द पट्टीक उपयोग संभव अछि।

x. वाक्यपट्टी

सार्थक शब्दक टुकड़ा सभकेँ उठा–उठाकऽ एकटा पट्टीपर राखि सार्थक वाक्यक रचना करब, अपूर्ण वाक्यकेँ पूरा करब, वाक्य पट्टीपर शब्द सभकेँ क्रमबद्ध सजायब आ सार्थक, शुद्ध वाक्यक स्वरूप देब वाक्यपट्टीक सहयोगसँ भऽ सकैछ।

xi. मात्रा खिड़की

कार्ड शीटक मध्य एकटा खिड़की बना कऽ, ओकरा उपर एहि प्रकारेँ झोरी बनाओल जाय जाहिसँ ओहिमे वर्ण वा मात्राक टुकड़ा लगा सकी। वर्णमे एकटा मात्रा लगाकऽ ओकर वाचन करब, बिना मात्रा वला शब्दमे मात्रा लगा कऽ नव सार्थक शब्दक विकास करबाक लेल मात्रा खिड़कीक प्रयोग कयल जा सकैछ।

xii. शब्द सूची

दोसर कार्ड बोर्डपर शब्दसूची तैयार कयल जाइछ, जेना– पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, शब्द युग्म, कठिन शब्द (वर्तनीक/दृष्टिएँ/उच्चारणक आधारपर), शब्द भेदक आधारपर शब्दक संकलन शब्द सूचीक सहयोगसँ करैत सिखबाक तकनीकसँ बच्चाकेँ अधिगम कराओल जा सकैछ।

xiii. मुखौटा

ई कागत आ प्लास्टर ऑफ पेरिसक संयोगसँ बनाओल जाइछ। विभिन्न जन्तु, व्यक्तिक मुखौटा बना कऽ मुखक उपर लगाओल जाइछ। शिशु गीत, अभिनय गीत, छोट–छोट संवाद, पाठ, बुझौअलि, एकांकी आदिक मुखाकृति लगा कऽ अभिनय कयल जा सकैछ।

xiv. कट–आउट

कार्ड बोर्ड, हार्ड बोर्डपर पूर्ण आकारमे चित्र बनाकऽ वर्ग कक्षमे प्रस्तुत करब आ तकर सहयोगसँ पाठक विकास कयल जा सकैछ। कोनहुँ महापुरुषक जीवनी वा आत्मकथाक शिक्षण करयबा काल कटआउट्स अधिक प्रभावशाली अधिगम सामग्रीक रूपमे प्रयुक्त होइछ।

xv. चित्र विस्तारक

एहि यंत्रक माध्यमसँ कोनहुँ चित्र वा मानचित्रकेँ दीर्घ आकारमे देखाओल जा सकैछ। एकरा Overhead Projector सेहो कहल जाइछ। जतऽ पैघ आकारक चित्र कीनव कठिन होइछ ततऽ छोट–छोट चित्रकेँ एहि यंत्रक माध्यमसँ पैघ आकारमे देखाओल जाइछ। खास कऽ गद्यक पाठमे एकर उपयोग महत्वपूर्ण होइछ।

उपर्युक्त दृश्य साधनक अतिरिक्त कतोक सामग्री–विधि अछि जकर उपयोगसँ शिक्षण–अधिगमकेँ प्रभावी बनाओल जा सकैछ, जेना–पोस्टर, फ्नैनल बोर्ड, फ्लैश कार्ड, चकती, शैक्षणिक भ्रमण आदि।

- **श्रव्य सामग्री**

ओहन सभ प्रकारक साधन जकर उपयोग सुनबामे होइछ। ओकरा सुनिकऽ बच्चा पाठकेँ सरलता, सुबोधगम्यता ओ सुगमतासँ सीखि सकय। एहन सामग्रीक प्रयोगसँ श्रव्य–इन्द्रिय (कान) केँ अधिक क्रियाशील बनाओल जाइछ। जँ पाठ्य वस्तुकेँ टेप रिकार्ड, ग्रामोफोन आ रेडियो सन श्रव्य साधनक माध्यमे प्रस्तुत कयल जाय तऽ बच्चा बेसी तत्पर होयताह आ सिखबामे रुचि लेताह। एहि उपकरणक प्रयोगसँ ध्वनि मात्रक प्रस्तुतीकरण होइछ। श्रव्य सहायक सामग्रीसँ ज्ञानात्मक ओ भावात्मक उद्देश्यक प्राप्ति सफलतापूर्वक कयल जा सकैछ। एकर प्रयोग क्रियात्मक उद्देश्यक लेल नहि कयल जा सकैछ।

श्रव्य सामग्रीक प्रकार आ उपयोग

श्रव्य सामग्रीक विविध प्रकार–उपयोग निम्नवत् अछिः–

i. रेडियो

रेडियो भाषा अध्ययनक एकटा महत्वपूर्ण साधन थिक। ई सम्प्रेषणक एकटा प्रमुख साधन रूपमे मान्य अछि। वस्तुतः ई विविध प्रकारक ध्वनिकेँ सुनबामे प्रयुक्त होइछ। एहिसँ भाषा अध्ययनक क्षेत्रमे स्पष्ट उच्चारण करबामे मदति भेटैछ। एहिसँ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक ओ शैक्षणिक गतिविधिक जानकारी अथवा ज्ञानार्जन हेतु समय–समयपर विद्यालयमे शिक्षक द्वारा बच्चाकेँ उपयोगी तथ्यसँ परिचिति कराओल जाइछ।

ii. सी.डी.प्लेयर

ई एकटा यंत्र थिक जे विविध प्रकारक ध्वनिकेँ अपना भीतर निर्दिष्ट स्थानपर स्थित सी.डी. (कॉम्पेक्ट डिस्क)क प्लेटपर अंकित करैछ। पश्चात् कहियो, कखनहुँ कतेको बेर ध्वन्यांकित स्वर–आवाजकेँ सुनल वा सुनाओल जा सकैछ। एहिसँ बजबाक ढ़ंगमे सुधार, कक्षामे भाषा–शिक्षणक हेतु भाषा सिखबामे सहायक, शब्दक शुद्ध उच्चारण, वाक्य रचना आ व्याकरणक ज्ञान सुगमतासँ देल जाइत अछि। एकर प्रयोग बच्चा कार्यक्रमानुसारेँ अपन घरपर सेहो कऽ सकैत छथि।

iii. लिंग्वाफोन

भाषा–शिक्षणमे 'लिंग्वाफोन' पद्धति द्वारा कोनहु भाषाक शुद्ध उच्चारण, वाक्य संरचनापर पाठ आ वार्त्तालाप रिकार्ड (ध्वयांकरण) माध्यमसँ सिखाओल जाइछ। ई रिकार्ड पत्राचारक माध्यमसँ (मैथिली) पाठ्य–सामग्रीक, संदर्भ सामग्रीक रूपमे तैयार कयल जाइछ। एकरा 'डिस्क रिकॉर्ड' नामसँ सेहो अभिहित कयल जाइछ। एहि माध्यमसँ सुनबाक मात्र कार्य लेल जा सकैछ। एहन रिकार्डक लेल आदर्श वक्ताक आवश्यकता होइछ। एकर उपयोग व्याकरण शिक्षण ओ कविताक शिक्षणक हेतु कयल जाइछ।

iv. डिक्टाफोन

एहि प्रकारक यंत्रसँ कोनहुँ संदेश/गप/भाषणादिकेँ रिकार्ड कयल जाइछ आ पुनः आवश्यकतानुसार सुनल जा सकैछ।

v ग्रामोफोन

ग्रामोफोनक माध्यमसँ बच्चाक ध्यान सुमधुर गीत–संगीत, कविता आ पद्यांशसँ साहित्यमे अभिरुचि जगाओल जा सकैछ। महापुरूष, विभूतिक भाषण, उपदेश, कविता पाठ, नाटक आ कथा–निबंधक रिकॉर्डसँ नैतिक शिक्षा आ शिक्षात्मक मनोरंजन प्रदान कयल जा सकैछ। कविताक वाचन, वार्त्तालाप, संवाद ओ भाषा शैलीक ज्ञान एहिसँ सुगमतापूर्वक कराओल जा सकैछ। स्वर वाचन, शब्द–उच्चारण, आदर्श वाचनक अभ्यास सेहो एहि माध्यमसँ कराओल जा सकैछ।

एहि तरहेँ विभिन्न प्रकारक श्रव्य (ऑडियो) सामग्री मोबाइल–हेडफोन (इयर फोन), साउण्ड बॉक्स आदि उपकरणक माध्यमसँ बच्चाकेँ सामूहिक– तात्कालिक अनुभवक रूपमे वर्ण, शब्द, वाक्य, पदादिक ज्ञान वर्ग कक्षमे कराओल जा सकैछ।

- **दृश्य–श्रव्य सामग्री**

एहन सामग्री जकर उपयोगिता बच्चाकेँ देखबा आ सुनबाक लेल संगे–संग होइत अछि, से दृश्य–श्रव्य सामग्री कहबैछ । दृश्य–श्रव्य सामग्रीसँ कोनहुँ बात अथवा प्रसंगकेँ देखयबाक लेल निर्मित कोनहुँ कार्यक्रम ई अपेक्षा करैत अछि जे बच्चामे सुनबाक आ बजबाक माध्यमसँ सिखबाक योग्यताक विकास भऽ सकय। दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री अपेक्षाकृत बेसी प्रभावशाली होइछ, किएक तऽ एहिसँ बच्चा बेसी तत्पर भऽ जाइछ। एहि सँ अधिगम प्रत्यय (ब्वदबमचज वि स्मंतदपदह) केँ बेसीसँ सरल आ व्यापकरूपेँ उत्पन्न कयल जा सकैछ । प्रत्ययक स्वरूपक लेक प्रत्यक्षीकरण आवश्यक अधिक स्पष्ट आ अधिगम क्रिया सरलता सँ भऽ जाइछ। एकर प्रयोग ज्ञानात्मक, भावात्मक आ क्रियात्मक उद्देश्य प्राप्तिक लेल होइछ।

प्रकार–उपयोग

दृश्य–श्रव्य सामग्री विभिन्न प्रकारक होइछ जकर प्रयोग उपयोग वर्ग कक्षमे कय जाइछ–

i. चलचित्र

चलचित्र (फिल्म)क माध्यमसँ भाषा–शिक्षण अत्यन्त प्रभावकारी सिद्ध भेल अछि। एहि माध्यमसँ एकहि संग कतोक बच्चाकेँ शिक्षण अधिगम प्रक्रियामे आनल जा सकैछ। देखबाक अर्थ होइछ विश्वास करब। आइ शिक्षण–प्रशिक्षणक क्षेत्रमे कतेको प्रकारक आ कतेको भाषामे फिल्म सभ उपलब्ध अछि। भाषाक वर्णाक्षर

सिखयबा ओ तत्सम्बन्धी समस्याक समाधान पर फिल्म निर्मित अछि। अदृश्य सामग्रीक प्रत्यक्षीकरण अवलोकन, वस्तुक गतिशीलताकेँ प्रदर्शनक लेल आ बच्चाक चरित्र निर्माण ज्ञानवृद्धिमे एकर उपयोगिता स्वतः सिद्ध अछि। बच्चाक अभिवृत्तिमे परिवर्तन अनबाक लेल सेहो विभिन्न संस्था द्वारा कतोक प्रकारक कार्यक्रम प्रदर्शित कयल जा रहल अछि, जकरा वर्गकक्षमे क्टण्क्ण च्सलमत माध्य सँ सी0डी0क उपयोग कऽ बच्चाकेँ देखयबाक चाही।

ii. दूरदर्शन

प्रत्यक्ष आ उद्देश्यपूर्ण अनुभवक माध्यम सँ शिक्षा देव शिक्षणक सर्वोत्तम विधि थिक। प्रत्यक्ष अनुभवसँ प्राप्त ज्ञान वास्तविक आ अन्तिम स्थायी होइछ। एतदर्थ दूरदर्शन एकटा एहन सशक्त माध्यम अछि, जकर उपयोग शिक्षाकेँ सुरूचिपूर्ण आ प्रभावपूर्ण बनयबाक लेल कयल जा सकैछ। एहि माध्यम सँ विभिन्न चैनल पर प्रसारित धारावाही रूपेँ शैक्षणिक गतिविधि सँ सम्बद्ध कार्यक्रमक अवलोकन बच्चा सभकेँ कराओल जा सकैछ। एहि लेल सरकारी/ गैर–सरकारी संस्था सभ कतेको प्रकारक छोट–छोट सिनेमाक प्रदर्शन सेहो करैत रहल अछि। कार्टून फिल्म आ शैक्षणिक गतिविधिसँ सम्बद्ध धारावाही रूपमे विभिन्न कार्यक्रमकेँ वर्ग कक्षमे दूरदर्शनक माध्यमसँ प्रदर्शित कऽ बच्चा सभकेँ भाषाक संग कोनो विषयक ज्ञान देआओल जा सकैछ।

iii. नाटक

बच्चा द्वारा पाठ्य–पुस्तकमे निर्धारित नाटकक अभिनय विद्यालयक रंगमंच पर अथवा खाली मैदानमे सफलतापूर्वक कराओल जा सकैछ। बच्चा कोनो व्यवस्थाक साक्षात् दर्शन/ अवलोकन कऽ कऽ अपन अधिगम स्तरमे जतेक वृद्धि कऽ पबैत अछि, ततेक पढ़ि अथवा मात्र सुनिकऽ नहि। यैह कारण थिक जे बच्चा शिक्षण धारावाहीकेँ देखि तकर वर्णन अक्षरशः अपन वर्गकक्षमे कऽ दैछ, मुदा कोनो पाठकेँ स्वयं पढ़ि तकर वर्णन स्वविवेक सँ पूर्वक तुलनामे नहि कऽ पबैछ। कियेक तऽ देखल गेल ज्ञान आ भाव ओकर मस्तिष्क पटल पर स्थायी प्रभाव नहि छोडैत छैक। तेँ नाटक सन शिक्षणकेँ तऽ वर्ग कक्षमे, बाल सभा कार्यक्रममे बच्चेक माध्यमसँ पात्र निरूपित करैत अभिनय कराओल जयबाक चाही। एहि सँ बच्चामे पात्र–संवादमे ओही अनुरूपेँ भावकेँ आत्मसात करबाक कला विकसित कयल जा सकैछ। जाहिसँ बच्चामे एकाग्रताक वृद्धि होइछ आ तथ्यक अध्ययन गंभीरतापूर्वक कऽ पबैत अछि।

iv. सी.डी0./डी.वी.डी./एम.पी.थ्री–फोर (वीडियो)

सम्प्रति बाजारमे वीडियो–शिक्षण–सामग्री बहुतायत मात्रामे उपलब्ध अछि। छोट–छोट स्मृति क्षमतावला सी0डी0मे अधिगमक पाठ संकलित रहैछ, जकर प्रदर्शन वर्गकक्षमे सुगमतासँ करैत बच्चाकेँ विविध विषयक भाषाई आ आनो विषय क्षेत्रक ज्ञान देल जा रहल अछि। मातृभाषाक शिक्षणमे वर्ण शिक्षण, वर्तनी शिक्षण, उच्चारण शिक्षण आदिमे सरल आ सुग्राह्य सिद्ध भऽ रहल अछि ई वीडियो कैसेट सभ।

v. स्पर्श सामग्री

स्पर्श सामग्रीक अन्तर्गत ओहन सामग्री अबैछ, जकर प्रयोग स्पर्शक माध्यम सँ सरलतापूर्वक करैत शिक्षण अधिगम क्रियाकेँ प्रभावी ओ सरल–सुगम बनाओल जाय। एखना टच–स्क्रीन मोबाईल, टेबलेट, एल.सी.डी. ,एल.ई.डी. आदि सामग्रीक माध्यमसँ अधिगम स्तरकेँ बच्चाक समक्ष उपयोग कऽ प्रभावी बनाओल जा सकैछ।

vi. मोबाइल

आइ–काल्हि मोबाइलक उपयोग सेहो शिक्षण सहायक सामग्रीक रूपमे बहुत तीव्र गतिसँ कएल जा रहल अछि। मोबाइलमे विभिन्न प्रकारक (ऐप) भाषा शिक्षण लेल सुलभ ओ उपयोगी अछि। सुनब, बाजब, पढ़ब कौशलक शिक्षणमे मोबाइल अधिकाधिक उपयोगी भ' सकैत अछि, ई निर्भर करैछ शिक्षकक सृजनशीलता ओ कल्पनाशीलता पर।

एहि तरहेँ नित नव–नव सामग्री जे शिक्षण अधिगमक हेतु प्रयुक्त भऽ रहल अछि, अथवा अनुसंधेय अछि, बच्चाकेँ ताहिसँ परिचिति करयबाक चाही, आ आधुनिक तकनीकीक माध्यमसँ भाषा शिक्षणमे तकर उपयोग कयलासँ शिक्षक कऽ अध्यापन कार्य आ बच्चाकेँ अध्ययन क्षेत्रमे लाभदायक सिद्ध होयतनि।

सारांश

शिक्षण–अधिगम सामग्रीक उपयोग कयलासँ अधिगमक स्तरकेँ उठाओल जा सकैछ। गतिविधिकेँ प्रभावी, आ उद्देश्यक अधिगम प्राप्ति कयल जा सकैछ। एकर उद्देश्य, आवश्यकता महत्व आ उपयोगसँ बच्चाक ज्ञानक स्तरमे वृद्धि कयल जा सकैछ। ई मुख्यतः तीन प्रकारक होइछ–दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री आ दृश्य–श्रव्य सामग्री, जकर सभक उपयोग विभिन्न परिस्थितिमे आवश्यकतानुसारेँ कयल जाइछ। सभक उपयोगक मूल उद्देश्य शिक्षण अधिगम क्रिया–कलापकेँ सुगम–सरल ओ बोधगम्य बनयवाक थिक। बच्चामे अध्ययन प्रति रूचि जगयबाक थिक ओ ज्ञानक प्राप्ति हेतु जिज्ञासा बढ़यबाक थिक। उक्त तीनू प्रकारक अधिगम सामग्रीक विभिन्न प्रकारक माध्यमे शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाकेँ अभिरूचिपूर्ण बनयबामे शिक्षक सक्षम होयताह।

प्रश्नावली

1. शिक्षण–अधिगम सामग्रीक तात्पर्य की? स्पष्ट करू। शिक्षणमे एकर महत्वकेँ निर्धारित करू।
2. शिक्षण–अधिगम सामग्रीक कतेक प्रकार होइछ? एकर वर्गीकरण प्रस्तुत करैत सोदाहरण परिभाषित करू।
3. दृश्य सामग्रीक पाँच प्रकारक उदाहरण सहित व्याख्या करू।
4. श्रव्य सामग्री सँ अहाँ की बुझैत छी? शिक्षणमे एकर उपयोग निर्धारित करू।
5. दृश्य–श्रव्य सामग्रीक आवश्यकता शिक्षण कार्यमे किएक? व्याख्या करू।
6. शिक्षण–अधिगम सामग्रीक अभावमे शिक्षण कार्य पर प्रभावक विवेचन करू।
7. दृश्य सामग्रीक रूपमे शिक्षणमे पाठ्य–पुस्तकक उपयोगिता पर प्रकाश दिअ।
8. पाठ्यपुस्तक आ श्यामपट्टमे अंतर केँ स्पष्ट करू एक दोसराक अभावमे शिक्षण–अधिगमक प्रभावकेँ स्पष्ट करू।

सिखबाक योजनाः आकलन ओ मूल्यांकन

एहि इकाईमे

- मैथिली शिक्षण हेतु योजना निर्माण
- सतत ओ व्यापक आकलन की ओ कोना
- पाठयपुस्तक आधारित मूल्यांकन
- प्रश्नपत्र निर्माणक चर्चा भेल अछि।

सीखब एकटा सापेक्ष क्रिया थिक, जकर प्रयोग विविध अर्थमे कयल जाइत अछि। एहि क्रियात्मक क्षमतामे वृद्धितऽ होइते छैक संगहि आचार–विचारमे एक तरहें संशोधन सेहो। तँ शिक्षण एकटा एहन मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया थिक जे नवीन परिस्थितिसँ संबंध स्थापित करबाक लेल व्यक्तिक व्यवहारमे परिवर्तन अनैत अछि।

शिक्षणक माध्यमसँ जाहि व्यवहारक जन्म होइत अछि ओ चिरकाल धरि स्थायी बनल रहैत अछि। एकरा दोसर तरहें सेहो कहल जा सकैछ जे 'सीखब एकटा अभ्यास–जन्य सार्थक आ स्थायी व्यवहार होइत अछि'।

शिक्षाक क्षेत्रमे मनोवैज्ञानिक लोकनिक सिद्धान्तक महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि ओ लोकनि सिखबाक योजनाकेँ (प्रक्रिया) अपना–अपना ढंगे परिभाषित करबाक प्रयास कयलनि अछि। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मार्गन एवं गिलीलैंडक कथन छनि जे – 'सीखब अनुभवक परिणाम स्वरूप प्राणीक व्यवहारमे किछु सकारात्मक परिवर्तनक क्रिया थिक जे कमसँ कम किछु समयक लेल प्राणी द्वारा धारण कयल जाइत अछि।'

जे.पी. गिल फोर्डक कथन छनि जे – 'व्यवहारक कारणे व्यवहारमे परिवर्तन सैह थिक सीखब।'

मनोवैज्ञानिक उदय पारीक कथन छनि जे – 'सीखब एकटा ओहन प्रक्रिया थिक जकरा द्वारा कोनहुँ प्राणी कोनहुँ परिस्थितिमे प्रतिक्रियाक कारण नव तरहक व्यवहारकेँ ग्रहण करैत अछि। जे किछु सीमा धरि प्राणीक सामान्य व्यवहारकेँ बाध्य आ प्रभावित करैत अछि।' तहिना चार्ल्स ई. स्किनरक कथन छनि जे – ''व्यवहारक अर्जनमे उन्नतिक प्रक्रियाकेँ सीखब कहल जाइत अछि''। जँ भिन्न–भिन्न मनोवैज्ञानिक द्वारा देल गेल सिखबाक एहि परिभाषापर ध्यान देल जाय, तँ देखबामे अबैत अछि जे इ सभ परिभाषा किछु विशेष तथ्यबोधक संकेत करैत अछि, जेनाः–

1. सिखबाक अर्थ व्यवहारमे परिवर्तन थिक।
2. सीखब व्यवहारक संगठन थिक।
3. सीखब नवीन प्रक्रियाक पुष्टि थिक।

कोनहुँ व्यक्तिमे सिखबाक क्रिया ओकर शारीरिक आ मानसिक स्वास्थ्य तथा ओकर परिस्थितिपर निर्भर करैत छैक, मुदा से सभ तरहक क्रिया 'सीखब' नहि थिक। ई.ए. पील महोदय सिखबाक प्रक्रियाक संबंधमे अपन मन्तव्य दैत कहैत छथि जेः–

1. सीखब सहज क्रिया नहि अछि। ई व्यक्ति जाहि परिवेश मे रहैत अछि ओही परिवेशसँ अर्जितो करैत अछि। पिपनी झपकब सीखब नहि थिक। आँखि मारब, इशारा करब ई क्रिया 'सीखब' थिक।
2. सीखब सामाजिक तथा जैविक अनुकूलनक लेल चेतन क्रिया अछि।
3. सिखबाक क्रिया द्वारा स्थायी तथा अस्थायी परिवर्तन होइत अछि।
4. सिखबाक माध्यमे आदान–प्रदान दुनू होइत छैक।
5. सीखब ठीक–ठाक भऽ सकैत अछि आ गलत सेहो।

एहि तरह सिखबाक क्रियामे कठिनताक स्तर सेहो निहित रहैत छैक। गगनेक मतेँ–वृद्धिक क्रियासँ उपर धारण योग्य मानव संस्कार तथा क्षमता सैह सीखब थिक। एहि दृष्टिएँ शिक्षण मानवीय संस्कार, क्षमता ओ व्यवहार परिवर्तन दिस संकेत करैत अछि, मुदा वास्तविकता ई अछि जे व्यवहार परिवर्तन व्यवहार संगठन तथा ओकर पुष्टेकरणमे कोनहुँ एकटा कारण अधिगमक लेल पूर्ण रूपेँ उत्तरदायी नहि अछि।

अधिगमक परिभाषा एहि तरहक होयबाक चाही जे– 'अधिगम मानवक मूल–प्रवृत्तिक क्रियात्मक व्यवहारमे संशोधन थिक। जकर संचालन निश्चित आधारपर आ पुष्टि नवीन क्रियाक द्वारा होअय।

अधिगम तथा परिपक्वता

बच्चा सिखबाक क्रियाक श्रीगणेश जन्महिसँ प्रारंभ कऽ दैत अछि। अधिगम बच्चाक विकासमे महत्त्वपूर्ण योगदान दैत अछि। अधिगमक द्वारा बच्चा नव–नव क्रिया करब सिखैत अछि। ओ जाहि परिवेश वा समाजमे रहैत अछि, ओहि परिवेशक रीति–रिवाज, प्रथा, प्रचलन तथा रूढ़िक अनुकरण करैत अछि। बौद्धिक कौशलक विकास अधिगमक द्वारा होइत छैक। नीक वा अधलाहक निर्णय न्याय तथा सौन्दर्य अवधारणा अधिगमक माध्यमे विकसित होइत अछि। मुदा, अधिगमक कौशल बच्चामे तखनहि विकसित भऽ पबैत अछि, जखन ओ शारीरिक तथा मानसिक रूपसँ परिपक्व रहैत अछि।

राइजन (त्पमेमद)1950 ई. मे चिम्पाँजीक नवजात शिशुकेँ अन्हारमे पोसलनि आ एकर परिणाम ई भेल जे ओकर आँखिक ज्योति खराब भऽ गेलैक। कतेको बेर एहन तरहक स्थिति आवि जाइत अछि जे निर्णय करब कठिन भऽ जाइत अछि। अधिगमक प्रक्रिया जीवनक अन्तिम समय धरि चलैत रहैत अछि। मानवक विकास अधिगमक द्वारा होइत अछि। बच्चाक व्यवहार एतेक क्षणिक आ अस्थायी होइत अछि जे ताहि आधारपर कोनहुँ निश्चित परिणामक घोषणापर विश्वास नहि कयल जा सकैछ।

एलेक्जेण्डरक मतेँ– अधिगमक विश्लेषण जँ एकर भिन्न–भिन्न रूपक विचार कयने बिनु करैत छी तेँ हम सभसँ पहिने ई अन्वेषण करब जे ई संशोधनक अनवरत प्रक्रिया अछि। जाहिसँ प्राणीक व्यवहार प्रतिमान एवं मानसिक विकासमे परिवर्तन होइत अछि।

बच्चाक मानसिक विकास सेहो परिपक्वता पर निर्भर करैत अछि। मानसिक विकाससँ अभिप्राय ओहि कार्यकेँ करबासँ अछि जे कार्य ओ शैशवावस्थामे नहि कऽ सकैत छल। एहि अनवरत प्रक्रियामे पहिल कारक अछि–

1. **अधिग्रहण** – ई व्यवहार संशोधनमे अत्यन्त सहायक होइत अछि। अधिग्रहणेक द्वारा अधिगमक परिभाषा, स्वरूप आ प्रकृतिक निर्धारण कयल जाइत अछि। अधिग्रहणे ओ माध्यम थिक जकरा द्वारा मानसिक रूपसँ अधिगम लेल क्यो तैयार होइत अछि।
2. **धारणा** – एकर अभावमे अधिगमक कोनो अर्जित गुणकेँ व्यक्त नहि कयल जा सकैत अछि। दोसर रूपमे जँ कोनो व्यवहार तथा प्रक्रियाकेँ सीखि लेलाक वादो धारण नहि कयल जाय तँ ओकर अभिव्यक्ति कोना होयत।
3. **सशक्त प्रत्यास्मरण** – एकरा द्वारा ई बूझल जा सकैत अछि जे अधिगम कतेक सफल भेल।

उपर्युक्त तीनू कारक अपन कार्यकेँ तखने नीक जकाँ करैत अछि जखन शरीर एहि योग्य होअय आ जँ ओकरा विकासक उचित स्रोत भेटि सकय। यैह कारण थिक जे बच्चाक शारीरिक क्षमताक विकास पूर्ण रूपसँ नहि भऽ पबैत अछि। तेँ बच्चामे सिखबाक क्षमता कम होइत अछि कारण, क्षमताक विकासक दोसर नाम परिपक्वता थिक।

पोक आ सिम्पसन अधिगमक विशेषताकेँ विश्लेषण करैत कहने छथिः–

1. सीखब वा अधिगम जीवन थिक।
2. सीखब परिवर्तन थिक।
3. सीखब सार्वभौमिक थिक।
4. सीखब विकास थिक।
5. सीखब समायोजन वा अनुकूलन अछि।
6. सीखब अनुभवक व्यवस्था अछि।
7. सीखब उद्देश्यपूर्ण एवं विवेकपूर्ण होइत अछि।
8. सीखब सक्रिय होइत अछि, जे व्यक्तिगत आ सामाजिक दू तरहक होइत अछि।
9. सीखब वातावरणक उपज थिक जे नवीन व्यववहारक खोज करैत अछि।

वास्तविकता ई अछि जे अधिगम क्रियाक आधार हमरा लेल आवश्यक अछि।

अधिगमः क्रिया–विश्लेषण

अधिगमक विश्लेषण एहि प्रकारेँ कयल जा सकैत अछि–

1. **उद्देश्य** – कोनहुँ काजकेँ सिखबाक हेतु उद्देश्य होइत अछि। मानव ओहि काजकेँ नहि सीखऽ चाहैत अछि जे ओकर उद्देश्यक पूर्ति नहि कऽ सकत।
2. **अभिप्रेरणा** – ओहन सभ काज जकरा मानव करऽ चाहैत अछि कोनहुँ ने कोनहुँ अभिप्रेरणासँ संचालित होइत अछि। छात्र एहि लेल पढ़ैत अछि जे परीक्षामे पास होअय आ नीक नोकरी वा व्यवसाय करय। अभिप्रेरणा, उद्देश्य दिस जोर लऽ जायवला काज करैत अछि। अंततः ई कहब उचित अछि जे मानव जे कोनो काज करैत अछि ओकर मूलमे कोनहुँ ने कोनहुँ प्रकारक अभिप्रेरणे निहित रहैछ अछि।
3. **उत्तेजना** – अभिप्रेरणाक पश्चात् उत्तेजना क्रियाक सम्पादनमे सहायक होइत अछि। कोनहुँ क्रिया करबाक लेल उत्तेजना देबऽमे बाहरी वातावरण, साधन, तथ्य आदि काज करैत छैक। उत्तेजना, अभिप्रेरणासँ अनुप्राणित होइत अछि। आ, उद्देश्य प्राप्ति दिस लऽ जाइत अछि।
4. **प्रतिबोधन** – कोनहुँ क्रियासँ संबंधित सभ उपक्रिया तथा आन तथ्यक प्रत्यक्षीकरणक अन्तर्गत अबैत अछि। क्रियाकेँ समानताक लेल प्रत्यक्ष ज्ञानक अभाव ई एकटा भारी समस्या थिक। अवबोध, ज्ञान आदि द्वारा क्रिया आगाँ बढ़ैत अछि।
5. **पुनर्बलन** – पुनर्बलनक अन्तर्गत ओ सभ क्रिया तथा तथ्य आबि जाइत अछि जाहिसँ बाध्य भऽ कऽ छात्र लोकनिकेँ कार्य करऽ पड़ैत छैक। अध्यापकक आदेशक पालन करब अपन इच्छा अपनासँ पैघकेँ सम्मान देब तथा सामाजिक मर्यादासँ अनुकूल जे कोनहुँ काज कयल जाइछ, पुनर्बलन कहबैत अछि।
6. **संगठन** – अधिगम ताहिसँ कियाक अनेक अंगक संगठन नवीन ज्ञानक पूर्व जे अर्जित ज्ञान जोड़बाक लेल कयल जाइत अछि। याबत धरि पूर्व ज्ञान एवं नव ज्ञानकेँ जोड़ल नहि जायत ताबत धरि क्रिया पूर्णता प्राप्त नहि कऽ सकत।

अधिगमः प्रतिकारक एवं प्रभावक तत्व

विद्यालयमे बच्चा किछु ने किछु अवश्य सिखैत अछि। कोनहुँ क्रियाकेँ विद्यालयमे सिखबाक हेतु बहुतो प्रतिकारक उत्तरदायी होइत अछि। एहि प्रतिकारककेँ एहि रूपेँ देखल जा सकैछ–

1. **शिक्षार्थी** – विद्यार्थी कोनहु क्रियाकेँ सिखबाक हेतु ओकर केन्द्रबिन्दु होइछ। शिक्षाक उद्देश्य बच्चाक सर्वांगीण विकास करब थिक। बच्चाक रुचि, योग्यता, क्षमता, व्यक्ति, भेद, बुद्धिक

आधारपर सम्पन्न कयल गेल क्रिया प्रभावशाली होइत अछि। विद्यार्थी अधिगमक आधार अछि। एकर अभावमे ककरा सिखाओल जायत।

2. **अध्यापक** – विद्यालयमे कोनहुँ काजकेँ सिखयबाक दायित्व अध्यापककेँ होइत छनि। जे बच्चामे ज्ञान तथा क्रियाक अधिगम करयबाक हेतु उचित वातावरण तैयार करैत छथि।

3. **पाठ्यक्रम**– बच्चा तथा अध्यापकक रहितहुँ कोनहुँ क्रिया तावत धरि समाप्त नहि भऽ सकत, याबत धरि पाठ्यक्रम नहि रहत। पाठ्यक्रमक रहब बच्चा तथा अध्यापक लेल अति आवश्यक अछि। बच्चाकेँ की सिखयबाक अछि ई थिक पाठयक्रम। विद्यालयमे जे किछु सिखाओल जाइत अछि ओकर माध्यम पाठ्यक्रम होइत अछि। पहिने पाठ्यक्रमक अभिप्राय पुस्तकसँ बूझल जाइत छल, मुदा आब खेल–कूद, भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रम अदि पाठ्यक्रमक एकटा महत्वपूर्ण अंग बनि चुकल अछि।

4. **अधिगमक परिस्थिति** – अधिगम परिस्थितिक तात्पर्य विद्यालयक वातावरणसँ अछि। विद्यालय तथा कक्षाक वातावरण जँ नीक अछि तऽ ओ अधिगमक प्रक्रियाकेँ सरल बना देत। कक्षाक छात्र सभक सहयोग एहिमे निहित रहैत अछि।

5. **अधिगमक प्रक्रिया** – कोनहुँ क्रियाकेँ कोन प्रकारसँ सम्पन्न कयल जाय, ताहिसँ अधिगम प्रभावित होइत अछि। अधिगमक प्रक्रियाकेँ कोनहुँ ढ़ंगसँ सम्पादित कयल जायत, मुदा बच्चा कोनहुँ प्रक्रियाकेँ अपन ढंगसँ ग्रहण करैत अछि।

अधिगमः प्रभावी प्रतिकारक

अधिगमक क्रिया कोनहुँ विशेष प्रतिकारकक प्रभावसँ संचालित नहि होइत अछि। ओकर संचालन प्रक्रियाकेँ प्रभावित करयबला बहुतो प्रतिकारक होइत अछि। कोनो ज्ञान तथा क्रियाकेँ सिखबाक हेतु प्रतिकारकक उचित व्यवस्था आवश्यक थिक। एहि प्रतिकारककेँ निम्न रूपेँ देखल जा सकैछ–

1. **उचित वातावरण** – अधिगम, वातावरणसँ प्रभावित होइत अछि। वातावरण बाहरक होअय वा भीतरक, घरक होअय वा समुदायक, विद्यालयक होअय वा कक्षाक, अधिगमक वातावरण जँ ठीक होअय तँ बच्चाकेँ सिखबामे कोनहुँ कठिनता नहि होयत। कक्षामे प्रकाश, स्वच्छ वायुक प्रबन्ध, सफाइ आदि वाह्य वातावरणक निर्माण करैत अछि। बच्चाकेँ कोनहुँ काजक ज्ञान सिखबाक हेतु ई आवश्यक अछि जे ओ मानसिक रूपसँ तैयार भऽ जाय तथा अध्यापककेँ ई दायित्व रहैत छनि जे बच्चाकेँ सिखबाक हेतु मनोवैज्ञानिक स्थिति उत्पन्न करबथि।
2. **शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य** – प्रायः ई देखल जाइत अछि जे शारीरिक वा मानसिक रूपसँ स्वस्थ बच्चा ज्ञान तथा क्रियाकेँ बुझबामे कुशल होइत अछि। जे बच्चा बीमार रहैत अछि ओ पढ़बा आ लिखबामे बेसी रुचि नहि लैत अछि। अध्यापककेँ अपन काज करयबाक हेतु ओहन बच्चासँ बलजोरी काज लेबऽ पड़ैत छनि। अध्यापककेँ एहि बातपर ध्यान देअऽ पड़तनि, जे पढ़यबाकाल बच्चा शारीरिक आ मानसिक दुनू तरहेँ स्वस्थ अछि वा नहि। तकर बादे अध्यापनकार्य आरंभ करथि।
3. **अधिगम विधि** – अध्यापक कोनहुँ तथ्यकेँ कोन तरहेँ बच्चाक समक्ष प्रस्तुत करताह ई बात अधिगम पर सेहो निर्भर करैत अछि। सभ विद्यार्थी कोनहुँ एकटा विधिसँ बुझि जायत से कहब कठिन थिक। जँ बच्चाकेँ अमनोवैज्ञानिक पद्धतिसँ कोनहुँ विषयकेँ सिखाओल जा रहल अछि तँ बच्चा सिखबामे थोड़बो रुचि नहि लैत अछि। बच्चाक रुचिक आधारपर शिक्षण विधिक चयन करय पड़त तखने शिक्षाक मूल उद्देश्यक प्राप्ति भऽ सकैत अछि।

4. **अभिप्रेरणा –** बच्चामे सिखबाक जे प्रयोजन अछि ताहिमे अभिप्रेरणाक मुख्य योगदान रहल अछि। जँ बच्चाकेँ कोनहुँ काज सिखयबाक हेतु प्रेरित नहि कयल जाय तँ ओ सिखबाक लेल ओतेक रुचि नहि राखत। अध्यापककेँ पाठ्यपुस्तकक आरंभ करबासँ पहिने पूर्व पाठ्यपुस्तकक किछु ज्ञान बच्चाक समक्ष दोहरा देबाक चाहिअनि। ताहिसँ कोनहुँ नव तथ्यकेँ बुझबाक हेतु बेसी जिज्ञासा बढ़ि जाइत छैक।
5. **अध्यापकक भूमिका –** अधिगम प्रभावशाली ढंगसँ काज नहि कऽ सकैत अछि जा धरि शिक्षण विधिमे अध्यापक अपन महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहन नहि करताह। शिक्षाक क्षेत्रमे बहुतो अनुसंधान भऽ रहल अछि। अध्यापककेँ चाहिअनि जे शिक्षाक नवीनतम अन्वेषक नवीनतम विधिक उपयोग करथि। एहिसँ बच्चापर शिक्षाक नीक प्रभाव पड़तैक।
6. **इच्छा शक्ति –** अधिगम सीखऽबला बच्चाक इच्छा शक्तिपर सेहो निर्भर करैत अछि। जँ बच्चा कोनहुँ ज्ञानकेँ सीखऽ नहि चाहैत अछि तऽ ओकरा बलजोड़ी सिखाओल नहि जा सकैत अछि। बच्चा कोनहुँ तथ्यकेँ सिखय लेल ओकरा भीतर इच्छा शक्ति जाग्रत करब शिक्षककक दायित्व भऽ जाइत छनि।
7. **परिपक्वता (Maturation) –** एहि बातक चर्च पूर्वहु भऽ गेल अछि। डंजनतंजपवद क आधारपर बच्चामे ज्ञानक अर्जन होइत छैक।
8. **काजक समय तथा थकान –** प्रायः देखल जाइत अछि जे अधिगम क्रियामे तखन अवरोध आबि जाइत छैक जखन बच्चा थाकि जाइत अछि। एहन अधिगम क्रियामे सफलता भेटल संदिग्ध भऽ जाइत अछि। काजक समय निर्धारित कऽ आ समयपर बच्चाकेँ विश्राम देल जाय तऽ अधिगम क्रियामे सफलता भेटि सकैत अछि।
9. **अभ्यास विभाजन (Distribution of Practice)** – प्रायः देखल जाइत अछि जे अधिगम क्रियामे तखने–प्राप्ति होइत अछि जखन बच्चाकेँ अभ्यासक लेल कोनहुँ काज देल जाइत होअय। जकरा गृहकार्यक रूपमे सेहो जानल जाइत अछि। अभ्यासक काज एहन होयबाक चाही जाहिसँ बच्चाकेँ काजक बाद खेलयबाक हेतु सेहो समय भेटय। तेँ आवश्यक अछि जे अभ्यास कार्यक उचित विभाजन कयल जाय। अभ्यासक काजकेँ उचित विभाजन कयलासँ अधिगममे वृद्धि होइत अछि। अभ्यासक काज एहन होयबाक चाही जे बच्चा सहजतासँ ओकरा कऽ सकय।
10. **पाठ्य–सामग्रीक संरचना–** जँ पाठ्यक्रम सरलसँ कठिन दिस सिद्धान्तक आधारपर बनाओल जाय तऽ अधिगममे बेसी सहायक सिद्ध होयत। अध्यापककेँ ई जनैत रहबाक चाही जे हुनका की पढ़यबाक छनि। जँ पाठ्य सामग्री असंगठित रहत तऽ शिक्षक तथा छात्र दुनूक लेल कठिन भऽ जायत।।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एलेक्जेण्डर अधिगमकेँ प्रभावित करयबला कारककेँ एहि रूपेँ देखओलनि अछि–

1. गति–कौशलक अर्जन तथा प्रतिक्रियाक आदति।
2. प्रत्यक्ष ज्ञान तथा निरीक्षणमे विकास।
3. स्मरणक प्रतीक (मौखिक चिह्न, प्रतिभा) तथा साहचर्यकेँ विकसित करयबला विचार।
4. संवेगात्मक प्रतिक्रिया आ प्रेरणात्मक, प्रवृत्तिमे संशोधन।
5. अवबोध, समझ, समस्या–समाधानक योग्यता।
6. वैयक्तिक लक्षण, विचार, मनोदशाक विकास।

अधिगमः भेद वा प्रकार

अधिगमक भेद करब कठिन काज थिक। तथापि ओकरा आठ भागमे बाँटल जा सकैत अछिः–

1. **कऽ कऽ सीखब** – डॉ. मेसक कहब छनि जे ''स्मृतिक स्थान मस्तिष्कमे नहि, अपितु शरीरक अवयवमे अछि।'' कारण जे कोनहुँ काजकेँ कऽ कऽ सीखल जा सकैत अछि। बच्चा जाहि काजकेँ स्वयं करैत अछि ओहि काजकेँ ओ जल्दी सीखि लैत अछि। जकर कारण ई थिक जे ओ सर्वप्रथम उद्देश्यक निर्माण करैत अछि, काज योजना बनबैत अछि आ ओहि योजनाकेँ पूरा करबामे लागि जाइत अछि। तकर बादो अपन काजकेँ देखैत अछि जे काज सफल भेल वा नहि। जँ सफल नहि होइत अछि तऽ अपन गलतीकेँ सुधारवाक चेष्टा करैत अछि।
2. **निरीक्षण कऽकऽ सीखब** – ल्मांउ –ैपउचेवद लिखने छथिः– 'निरीक्षण सूचना प्राप्त करब, आधार सामग्री एकत्रित करब तथा वस्तु आ घटनाक विषयमे नीक विचार प्राप्त करबाक साधन थिक।' एहि प्रकारेँ अधिगम विधिमे तीनटा पक्ष समाविष्ट अछि यथाः–
   i. अन्तर्संबंध
   ii. समझ वा अन्तर्दृष्टि
   iii. अनुकरण।

बच्चा जाहि वस्तुक निरीक्षण करैत अछि, ओहि तथ्यकेँ ओ जल्दीसँ सिखैत अछि। तकर कारण ई थिक जे निरीक्षणक क्रममे वस्तुकेँ स्पर्श कऽ प्रयोग वा नहि तँ ओहि विषयमे गप–शप करैत अछि। एहि प्रकारेँ एकसँ अधिक इन्द्रियाक प्रयोग करैत अपन स्मृति पटलपर अंकित कऽ लैत अछि ।

3. **परीक्षण कऽ कऽ सीखब** – कोनहुँ नव बातक खोज करब एक प्रकारसँ सीखब थिक। बच्चा एहि खोजकेँ परीक्षण द्वारा कऽ सकैत अछि, एकर बादे ओ निष्कर्षपर पहुँचैत अछि। एहि रूपेँ जाहि बातकेँ सीखैत अछि से ओकर ज्ञानक अभिन्न अंग बनि जाइत छैक।
4. **सामूहिक विधि द्वारा सीखब** समूहमे रहि कऽ सेहो होइत अछि। मुदा सामूहिक रूपसँ सीखब बेसी सार्थक होइत अछि। ई आन विधिक अपेक्षा प्रभावशाली होइत अछि। एकरा एहि रूपेँ देखल जा सकैछ, यथाः–
   i. वाद–विवाद विधि – एहि विधिमे सभ विद्यार्थी केँ अपन विचार प्रकट करबाक आ प्रश्न पुछबाक अवसर भेटैत छैक।
   ii. कार्यशाला विधि – एहि विधिमे अनेक गोष्ठीक आयोजन कयल जाइत अछि। जाहिमे विभिन्न विषयपर छात्र द्वारा क्रियाशीलन कराओल जाइत अछि। ई एकटा शिक्षण–अधिगमक महत्वपूर्ण विधि थिक।
   iii. संगोष्ठी–विधि – एहि विधिमे कोनहुँ एक विषय पर विद्यार्थी द्वारा विचार प्रगट कयल जाइत अछि।
   iv. प्रोजेक्ट, डॉल्टन आ बुनियादी शिक्षणक समवाय विधि – एहि विधिमे व्यक्तिगत आ सामुहिक दुनू प्रकारक प्रेरकक स्थान होइत अछि। सभ विद्यार्थी अपन व्यक्तिगत रुचि, जानकारी आ क्षमताक आधारपर स्वतंत्र रूपेँ काज करैत अछि। ताहिसँ स्पर्द्धा, सहयोग आ सहानुभूतिक विकास सेहो होइत छैक।
5. **मिश्रित–विधि द्वारा सीखब –** एकर दूटा विधि अछिः–
   i. पूर्ण विधि
   ii. आंशिक विधि

दुनू प्रकारक विधिकेँ मिलाकऽ आब एकटा मिश्रित विधिक उपयोग कयल जाइत अछि। एहिमे पाठ कऽ पूर्ण जानकारी देलाक बाद ओकरा विभाजित कऽ कऽ अध्ययन कयल जाइत अछि।

6. **सिखबाक स्थितिक संगठन –** सीखब जे काज थिक तकरा सरल आ सफल बनयबाक हेतु आवश्यक अछि सिखबाक स्थितिक संगठन करब। एहि विधिमे आवश्यकतानुसार सिखबाक सभ विधिक उपयोग कयल जाइत अछि।
7. **समस्या–समाधान विधि**एहि विधिसँ शिक्षार्थीक चिन्तन प्रवृत्तिक विकास होइत अछि। ओ कठिन परिस्थितिमे सेहो समस्याक निदान कऽ लैत अछि एहि विधिमे निम्न तथ्यक विशेष महत्त्व अछिः–
    i. संभावित समाधान हेतु निर्देश।
    ii. समाधानक लेल प्रयुक्त समस्यामे बुद्धिक उपयोग।
    iii. संकेतक आधारपर परिकल्पनाक निर्माण एवं ओकर परीक्षण।
    iv. उपयुक्त परीक्षण परिणामक तार्किक विश्लेषण।
    v. क्रियाक माध्यमसँ परिकल्पनाक सत्यापन।
8. **सामान्यीकरण प्रत्यय–निर्माण–विधि** – प्रत्यय–निर्माण अधिगमक एकटा आवश्यक तत्त्व थिक– सामान्यीकरण प्रत्यय–निर्माण विधि। जखन स्पष्ट अनुभवक आधारपर ज्ञानक प्राप्ति होइत अछि तखन एकरा प्रत्यय निर्माण एवं सामान्यीकरण कहल जाइत अछि। ध्यान देबाक थिक जे बिनु प्रत्ययक विकासकेँ कोनहुँ व्यक्तिकेँ लेल अपन पूर्व ज्ञानक उपयोग नव परिस्थितिमे करब संभव नहि थिक।

सतत् व्यापक मूल्यांकन

1986 ई. क राष्ट्रीय शिक्षा नीतिमे सतत् व्यापक मूल्यांकनक अवधारणा पहिले पहल देखबामे आयल। जाहिसँ मूल्यांकनक क्षेत्र बेसी व्यापक भेल। सतत् व्यापक मूल्यांकनक सामान्य अर्थ होइत अछि जे विद्यार्थी द्वारा सीखल, व्यवहारमे आनल गेल विषय–वस्तुक बोधगत उपलब्धि सभक व्यवहारगत जाँच कयल जाय। मूल्यांकनकेँ व्यापक बना कऽ विद्यार्थीक द्वारा कयल गेल उपलब्धिक प्रत्येक अंगक जाँच आवश्यक अछि।

सतत् व्यापक मूल्यांकनक संबंध विद्यार्थीक विकास तथा प्रत्येक क्रियासँ होयत अछि। अध्ययनक अध्यापनसँ अभिन्न संबंध छैक। एहि तरहेँ सतत् व्यापक मूल्यांकनक योजना बनाओल जाय जाहिसँ प्राथमिक स्तरपर भाषा, गणित–बोधक अतिरिक्त वस्तुकेँ देखबाक, मूल्यांकन करबाक, वर्गीकरण करबाक आ अपन बात कहबाक योग्यता विकसित कयल जाय। एकर अतिरिक्त सहनशीलताक संग वैज्ञानिक दृष्टिकोणकेँ जगायब, भौतिक–सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमे सुधार अनबाक लेल बच्चेसँ काज करयबामे रुचि जगयबा सन मनोवृत्ति–परिवर्तनक कार्य अपेक्षित अछि।

सतत् व्यापक मूल्यांकनक अन्तर्गत शिक्षामे मूल्यांकनकेँ अधिगम प्रक्रियाक अभिन्न रूपमे उपयोग करब थिक। अध्यापनक अवधिमे संग–संग मूल्यांकन कार्य कयलासँ मूल्यांकन सतत् होइत अछि। एहि व्यापक मूल्यांकनसँ विद्यार्थी एवं अध्यापक दुनूक कार्य प्रणालीक उद्देश्यक तथा लक्ष्य प्राप्तिक आधार भेटैत छैक। एहिसँ मेधावी विद्यार्थीक विकासक गति बनल रहैत छैक आ ओहन विद्यार्थी जकर विकास कम होइत छैक तकरा लेल उपचारात्मक शिक्षण चलयबामे बल भेटैत छैक। कक्षामे शिक्षण–कार्य समूहमे चलैत अछि। सामूहिक शिक्षणमे एहि बातक बेसी संभावना रहैत अछि जे तेज विद्यार्थी तऽ शीघ्रहि सीखि लैत अछि मुदा, सामान्य विद्यार्थी ओकरा नीक जकाँ नहि सीखि पबैत अछि। एहि तरहेँ विद्यार्थीकेँ सिखबामे अपूर्णता रहि जाइत छैक। प्रारंभिक स्तरपर बच्चा जे सिखैत अछि वैह सिखबाक आधार बनैत छैक। वास्वतमे मूल्यांकन तऽ सीखब–सिखेबाक अनिवार्य प्रक्रिया थिक। मूल्यांकन ठीक ढंगसँ नहि भेलापर अधिगकम प्रक्रिया ठीक–ठाक नहि चलि पबैत छैक आ, छात्र वर्गमे पछु आयल रहि जायत अछि।

पूर्वमे मूल्यांकन विधा अध्यापनक विषय–वस्तु धरि सीमित छल। मूल्यांकनमे संज्ञानात्मके पक्षपर पर बेसी जोर देल गेल, मुदा आब बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणालीक संदर्भमे आ चिन्तनक नव धाराक सीमामे संज्ञानात्मक आ असंज्ञानात्मक पक्ष दुनूपर बल देल जा रहल अछि। असंज्ञानात्मक पक्ष सेहो व्यक्तित्व विकासक आवश्यक अंग अछि। शिक्षाकक दायित्व अछि जे ओ विद्यार्थीकेँ कौशलक संज्ञानात्मक आ असंज्ञानात्मक दुनू पक्षकेँ उजागर करय जाहिसँ ओकरामे समग्र व्यक्तित्वक विकास भऽ सकय। प्राथमिक कक्षाक विद्यार्थीमे नियमितता, समयबद्धता, समयनिष्ठता, सफाई, श्रम करबाक आदति आदिक विकास करब तथा ओहि अर्न्तगत कर्त्तव्य–भावना, सेवा–भावना, समानता, सहयोग, राष्ट्रप्रेम–भावनाक विकास करब थिक। ई सभ गुण विद्यालयक समग्र क्रियाशीलनक आधारपर विकसित कयल जा सकैत अछि।

संज्ञानात्मक विषयक मूल्यांकन लेल मौखिक आ क्रियात्मक विधि अपनाओल जा सकैत अछि। प्रश्न पुछि कऽ मौखिक ढंगसँ छात्रक व्यक्तिगत उपलब्धिकेँ परेखल जा सकैत अछि। ओहि तरहक जानकारी लिखित उत्तरकेँ देखलाक बादे प्राप्त कयल जा सकैत अछि। लिखित प्रश्नक अन्तर्गत दू प्रकारक जाँच कयल जा सकैत अछि निबन्धात्मक तथा वस्तुपक्षसँ संबंधित प्रश्नक कोटि अछि– बहुवैकल्पिक, एक दोसरसँ मिलान, उत्तरबला रिक्तिपूर्ति इत्यादि।

शिक्षण क्रममे अध्यापक द्वारा देल गेल ज्ञान, सिखाओल व्यवहार, विद्यार्थी जे सिखैत अछि तकरा जाँचक लेल एहि आधारपर संज्ञानात्मक–असंज्ञानात्मक दुनू पक्षक सतत् व्यापक मूल्यांकन कयल जा सकैत अछिः–

मूल्यांकन

न्यूनतम अधिगम–स्तर उपागममे मुख्य रूपसँ दक्षताक प्रवीणतापर जोर देल गेल अछि। एकर निर्धारणक लेल ओकर उपलब्धिक नियमित मूल्यांकन आवश्यक थिक। कोनहुँ शिक्षार्थीकेँ दक्षता प्राप्त करबासँ पूर्व पहिल दक्षता प्राप्त करब आवश्यक अछि। तेँ मूल्यांकन कार्य–योजना तैयार करब आवश्यक भऽ जाइछ, एहि लेल अध्यापक नियमित रूपसँ ई प्रमाणित करथि जे शिक्षार्थी प्रवीणता प्राप्त कऽ लेलनि वा नहि। एहिसँ तात्पर्य जे मूल्यांकन कार्य निरन्तर चलैत रहबाक चाही। अपन शिक्षण कार्यक अन्तमे उपलब्धिक मूल्यांकन करैबाक लेल अध्यापक जाहि परीक्षाक उपयोग करैत छथि ओहिसँ मात्र ज्ञानकेँ आँकल जा सकैत अछि। दक्षता–उपलब्धिक मूल्यांकन लेल अधिगमक संज्ञानात्मक क्षेत्र जेना – ज्ञान, बोध आ मानसिक कौशलक उपयोग कयल जाइत अछि। अधिगमक असंज्ञानात्मक क्षेत्र जेना – मनोवृत्ति, व्यक्तित्व गुण, मूल्य आदिसँ संज्ञानात्मक कौशलक मूल्यांकन नहि कयल जा सकैत अछि। संज्ञानात्मक आ असंज्ञानात्मक अधिगमक प्रतिफलकेँ मूल्यांकन करबाक लेल एकर प्रभावी पद्धतिक प्रयोग करब आवश्यक अछि। कहल जा सकैत अछि जे मूल्यांकन एकटा एहन प्रक्रिया थिक जकरा द्वारा शिक्षार्थीकेँ उपलब्धिक आकलन कयल जाइत छल, मुदा वर्तमानमे एकर परिभाषा व्यापक आ छात्रक प्रगतिक लेल महत्वपूर्ण बनि गेल अछि कियेक तँ–

1. **मूल्यांकन –** क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि । मूल्यांकन विद्यार्थीक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक संबंधमे मूल्यक अंकन करैत अछि।
2. **मूल्यांकन द्वारा –** विद्यार्थीक स्थितिक वर्णन एहि तरहेँ कयल जाइत अछि जे ओहिसँ तुलनात्मक अध्ययन सम्भव भऽ सकय।
3. **मूल्यांकन लेल –** बेसी श्रम शक्ति, साधन आ धनक आवश्यकता पड़ैत छैक।
4. **मूल्यांकनमे**– अंक प्रदान कयलाक बाद मूल्यक निर्धारण कयल जाइत अछि। जेना 35 अंक प्राप्त कयनिहार विद्यार्थीक कक्षामे केहन स्थिति अछि। मूल्यांकनक बोध करबैत अछि जे 35 अंक प्राप्त करयबला विद्यार्थी कक्षामे प्रथम अछि, द्वितीय अछि वा अन्य।

5. मूल्यांकनक आधारपर विद्यार्थीक संबंधमे ई स्पष्ट धारणा बनाओल जा सकैत अछि आ कहल जा सकैत अछि जे विद्यार्थीक समग्र विकास कोना ओ केहन अछि इत्यादि।
6. मूल्यांकन परिमाणक आधारपर विद्यार्थीक संबंधमे पूर्ण सार्थकताक संग भविष्यवाणी कयल जा सकैत अछि।
7. मूल्यांकनमे गुणात्मक आ परिमाणात्मक दुनू प्रकारक निर्णय कयल जाइत अछि। ई संख्यात्मक आ वर्णनात्मक दुनू प्रकारक होइत अछि।

सिखबाक योजना ओ मूल्यांकन

मैथिली–शिक्षण हेतु सिखबाक योजना निर्माण – शिक्षक कक्षामे जे किछु पढ़ाबऽ चाहैत छथि, ओहि लिखित योजनाकेँ साधारणतया पाठ–योजना कहल जाइत छल। मुदा, एकर बदलैत स्वरूपमे शिक्षक कक्षामे जे कोनहुँ विषय–वस्तु पढ़ाबऽ चाहैत छथि, ओ विषयक मूल तथ्य शिक्षार्थी कोना सीखत, शिक्षार्थिक सिखबाक हेतु कोन–कोन विधिक प्रयोग कयल जायत, कोन विधिसँ तैयारी कयल जायत। साधारणतया एही योजनाकेँ सिखबाक योजना कहल जाइत अछि। एकर अन्तर्गत शिक्षणक कतोक युक्तिक संग किछु दक्षता आ कुशलता सेहो निश्चित रहैत छैक, जाहि विधिसँ वर्गमे अध्ययन–अध्यापनक कार्य कयल जाइत अछि। सिखबाक योजना द्वारा अध्ययन–अध्यापनकेँ जँ देखल जाय तऽ ई शिक्षार्थी आ शिक्षक दुनूक हितक लेल सर्वोपरि होयत।

अधिगम योजना प्रारूप

शिक्षक/शिक्षिकाक नाम :–

कक्षाः–

कालांशः–

तिथिः–

विषयः–

इकाईः–

विषयवस्तु

विषयवस्तु सँ संबंधित पूर्व समीक्षा (शिक्षण सँ पूर्व कर बला कार्य

नवीन विषयवस्तु चर्चा शुरू करबाक अछि ☐ पछिला कालांशक विषवस्तुक विस्तार करबाक अछि ☐

ई विषयवस्तु एहि कक्षाक पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम उल्लिखित कोन उद्देश्य/बिन्दुसँ जुड़ल अछि?

.....

.....

.....

की ई विषयवस्तु पूर्ववत कक्षाक पाठ्यक्रम सेहो शामिल अछि? कोना

.....

.....

की एहि विषयवस्तु शिक्षण पहले कएल गेल अछि ? हँ ☐ नहि ☐

ई विषयवस्तु कक्षाक आओर कोन–कोन विषय/इकाइसँ संबंध अछिः

कक्षाक विद्यार्थी एहि विषयवस्तुसँ संबंधित की आधारभूत समझ भसकैछः बहुल कम ☐ थोड़ बहुत ☐ बहुत अधिक ☐

शिक्षणकालमे करबला कार्य

विषयवस्तु/उप विषयवस्तु	सीख–सिखाब केर विधि	विधिके किऐक चुनल गेल (चयनक आधार)	शिक्षण–योजना	समावेशी विन्दु

स्वमूल्यांकन हेतु सुझावात्मक बिन्दु
की उद्देश्य पूर्ति भेल? एकर मूल्यांकन कएल वा नहि?
की एहि विषयवस्तु पुनः कक्षा मे चर्चा करबाक आवश्यकता अदि? किऐक ओ किऐ नहि?
विद्यार्थी द्वारा पूछल गेल प्रमुख सवाल की छल?कतेक विद्यार्थी पूछलाह/लीह?
ओहि सवालके कोना समझाओल? की विद्यार्थीसे स्वयं सवालकेँ हल करबाक अवसर भेटल?
एहि विषयवस्तुकेँ को सीखब–सिखएबामे कोन प्रकारक संसाधनक प्रयोग कएल भेल?
एहि विषयवस्तुकेँ यदि दुबारा पढ़एबाक हो तेँ योजनामे की बदलाव कएल जाएत?
एहि विषयवस्तुसँ संबंधित कोनो एहन प्रश्न जकरा अपन संस्थानक विशेषज्ञ तथा मेंटरसे चर्चा करबाक अपेक्षः अछि?

मेंटर/अवलोकनकर्त्ताक टिप्पणी

प्रधानाध्यापकक हस्ताक्षर

मेंटर/अवलोकनकर्त्ता हस्ताक्षर

<u>सिखबाक योजना</u> (Learning Plan)

शिक्षक/शिक्षिकाक नाम –

कक्षा – कालांश – पहिल तिथि –

विषय – मैथिली शीर्षक – मधुरमनि (कथा)

<u>विषय–वस्तुसँ संबंधित पूर्व समीक्षा</u> (**शिक्षण सँ पहिने कयल गेल काज**)

- नव विषय–वस्तुक चर्चा आरंभ करबाक अछि–(हँ)
- पूर्व कालांशक विषय–वस्तुक विस्तार करबाक अछि।(नहिं)
- ई विषय–वस्तु एहि कक्षाक पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रममे उल्लिखित कोन उद्देश्य/बिन्दुसँ सम्बद्ध अछि– दुःख, संवेदना, गरीबीक जतऽ बात होअय ततऽ स्वतः दाम्पत्य जीवनक चर्च भऽ जाइत अछि। एकटा सुखमय दाम्पत्य जीवन बितयबाक हेतु लोककेँ कतबा संघर्ष करऽ पड़ैत छैक तकर वर्णन एहि कथामे अछि।
- ई विषय–वस्तु पूर्व कक्षाक पाठ्यक्रममे सेहो सम्मिलित अछि। थिक
- कोना? दाम्पत्य जीवनक चर्चक कथा पूर्व कक्षामे सम्मिलित अछि, मुदा स्नेह एक दोसराक प्रति ततेक देखौने छथि कथाकार तेँ एहन कथा नहि थिक।

- की एहि विषय–वस्तुक शिक्षण पूर्वहु कयल गेल अछि?

  (क) हँ ( ) (ख) नहि ( )

- ई विषय–वस्तु एहि कक्षाक कोन–कोन विषय/इकाईसँ सम्बद्ध अछिः?–जतऽ दाम्पत्य जीवनक गप आओत ततऽ ई विषय–वस्तु स्वतः सम्बद्ध भऽ जायत।
- कक्षाक विद्यार्थी लग एहि विषय–वस्तु सँ संबंधित कोन आधारभूत प्रत्यक्ष भऽ सकैत अछि
  (क) बहुत कम () (ख) थोड़–बहुत ( ) (ग) बहुत–अधिक ( )

शिक्षक/शिक्षिका द्वारा स्वमूल्यांकन हेतु सुझाव बिन्दुः (**शिक्षणक बाद कयल जायबला काज**)

- की विद्यार्थी ओहि उद्देश्यकेँ बुझि सकल जाहि लेल ई विषय–वस्तु छल। एकर मूल्यांकन कयल गेल वा नहि।

मूल्यांकन शिक्षण अवधिमे कयल गेल। जाहि आधारपर ई कहल जा सकैत अछि जे ओ उद्देश्यकेँ बुझबा दिस अग्रसर अछि। उद्देश्यकेँ बुझबाक पुष्टि तखने भऽ सकत जखन ई देखल जा सकत जे अवधारणाक प्रयोग अपन सामान्य काजमे कोना करैत अछि।

- की एहि विषय–वस्तुक चर्च कक्षामे फेरसँ कयल जाय? यदि हँ तऽ कियेक आ नहि तऽ कियेक?–आगाँक कक्षाक आरंभिक कालमे एकर थोड़ चर्चा करी ताहि सँ बच्चाक पढ़वाक जे एकटा क्रम होइत अछि ओ बनल रहत।
- विद्यार्थी द्वारा पूछल गेल प्रमुख प्रश्न की छल? कतेक विद्यार्थी प्रश्न पुछलनि।

बच्चा द्वारा कोनो प्रश्न नहि पूछल गेल। मुदा, बच्चा नाटक खेलैत काल एक दोसरसँ पूछैत छल।

- ओहि प्रश्नकेँ कोना बुझाओल जायत? की विद्यार्थीकेँ ओहि प्रश्नक उत्तर तकबाक अवसर भेटलैक अथवा नहि? अधिकांश प्रश्नक उत्तर विद्यार्थी द्वारा स्वयं देल गेल।
- एहि विषय–वस्तुकेँ सीखब –सिखयबामे कोन प्रकारक संसाधनक प्रयोग कयल गेल ओकर की उपयोगिता रहल?

एहि अवधारणाक लेल नाटकक प्रयोजन कयल गेल आ ओकर संसाधनक प्रयोग कयल गेल।

- एहि विषय–वस्तुकेँ दोहरा कऽ पढ़ाओल जाय तऽ सीखब–सिखयबाक योजनामे कोन परिवर्तन अपेक्षित अछि?
  नाटकक विधि छोड़ि कोनो अन्य विधिक प्रयोग कयल जाय।

- एहि विषय–वस्तुसँ संबंधित कोन एहन प्रश्न अछि जकर समाधान संस्थापक विषय–विशेषज्ञ तथा मेटरसँ करबाक अपेक्षा अछि।
  दाम्पत्य जीवनक मौलिकता कि बुझब आवश्यक अछि।

कोनो अन्य टिप्पणी–

समयक व्यवस्थाकेँ ध्यानमे राखि कऽ चलक चाही।

पाठ्य–पुस्तक आधारित मूल्यांकन

अधिगम कार्य–कलाप चलैत रहब एकटा नियमित प्रक्रिया थिक। एकरा संग–संग विद्यार्थीक मूल्यांकन सेहो चलैत रहबाक चाही। एकर अर्थ ई भेल जे मूल्यांकनक ई प्रक्रिया दू तरहक होयबाक चाही। पहिल अध्यापक कोनो योग्यताक विस्तार वा विकास करबा काल अपन शिक्षार्थीक योग्यताक विकासक मूल्यांकन सेहो संग–संग करबाक प्रयास करथि। दोसर अध्यापक एक दोसरसँ जुड़ल योग्यताक समूहकं विकासओ समय–समयपर मूल्यांकन करथि, जकरा आवधिक परीक्षण सेहो कहल जाइत अछि। ई आवधिक परीक्षण शैक्षिक सत्रमे छः सात बेर कयल जा सकैत अछि। एहि लेल अध्यापक वार्षिक परीक्षा सेहो लऽ सकैत छथि। जकरा प्रायः पाठ्यक्रम समापनक अंतिम परीक्षण वा मूल्यांकन कहल जाइत अछि।

भारत सरकार न्यूनतम अधिगम स्तरक अन्तर्गत वर्ग एकसँ पाँच धरिक लेल भाषा, गणित आ पर्यावरण अध्ययनक विषयमे दक्षता निर्धारण कयलक अछि। दक्षता ओ पूर्व निर्धारित लक्ष्य थिक जकरा एकटा निश्चित वर्ग वा आयुक सभ बच्चा द्वारा प्राप्त कऽ लेल जयबाक अपेक्षा अछि।

पाठ्यपुस्तक आधारित मूल्यांकन हेतु सरकार द्वारा चयनित विषयक आधारपर निम्न विषय यथा– भाषा, अध्ययनक मूल्यांकन हेतु निम्नांकित विमर्श प्रस्तुत कयल जा सकैछ–

भाषा – प्राथमिक स्तरपर पाठ्य–चर्यामे भाषाक बड़ महत्वपूर्ण स्थान अछि। भाषा–अधिगमक माध्यमसँ मूलभूत कौशल अर्जित कयल जाइत अछि, ओ आन क्षेत्रक संकल्पनाकेँ बुझबाक सिखबाक क्रियामे सेहो सहायता प्रदान करैत अछि। एकर अतिरिक्त भाषाक प्रमुख नौ गोट मूल कौशल यथा– सूनब, बाजब, पढ़ब, लीखब, सुनि आ बुझि कऽ पढ़ि कऽ विचारकेँ बूझब। व्यावहारिक व्याकरण, स्वअधिगम, भाषा प्रयोग आओर शब्द भंडारपर अधिगम छात्रकेँ व्यक्तित्व निर्माण मे आ ओकर दैनिक जीवनकेँ भिन्न–भिन्न परिस्थितिमे प्रभावी सम्प्रेषण करबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वहन करैत अछि। भाषायी स्तरपर पाठ्यपुस्तक आधारित मूल्यांकनसँ बच्चामे क्रियात्मक भावनाक विकास सेहो होइत अछि। जेनाः–

1. कोनो बातकेँ सुनैत–सुनैत बूझब।
2. औपचारिक तथा अनौपचारिक बातचीतमे प्रभावी ढंगसँ बाजब।
3. बुझि कऽ पढ़ब आ विभिन्न प्रकारक शैक्षिक सामग्रीक रसास्वादन करैत पढ़ब।
4. तार्किक क्रम आ मौलिकताक संग साफ–साफ लीखब।
5. सुनि कऽ आ पढ़ि कऽ विचारकेँ बूझब।
6. विभिन्न सन्दर्भमे व्याकरणक प्रकार्यात्मक प्रयोग करब।

प्रश्न पत्र निर्माण

उपलब्धि जाँच द्वारा ज्ञान वा कौशलक कोनो विशेष क्षेत्रमे व्यक्तिक अर्जित निपुणताक वर्तमान स्थितिक आकलन होइत अछि। परीक्षण द्वारा पाठ्य चर्या–क्षेत्रक अन्तर्गत विद्यार्थीक कोनो विषय योग्यताक पता लगाओल जाइत अछि। परीक्षणक माध्यमे अध्यापक ई जानि सकैत छथि जे एकटा निश्चित अवधि जेना एक महिना, एक वर्ष आदिमे विद्यार्थीक ज्ञानोपलब्धि की अछि। एहि तरहेँ उपलब्धि परीक्षण द्वारा बच्चाक वर्तमान योग्यता वा कोनो विशिष्ट विषयक क्षेत्रमे ओकर ज्ञानक पता लगाओल जाइत अछि।

थार्नडाइक कथन छनि जे 'जखन हम उपलब्धि परीक्षाक प्रयोग करैत छी तखन हम एहि बातक निश्चय करऽ चाहैत छी जे एक विशिष्ट प्रकारक शिक्षा प्राप्त करबामे बच्चा कतय धरि सिखलक'। एहि लेल पढ़ाओल गेल पाठ्यक आधारपर अध्यापक निम्न चारि तरहक प्रश्नक निर्माण कऽ सकैत छथि–

1. सत्य–असत्य
2. प्रत्युत्तर प्रश्न
3. बहु विकल्पीय प्रश्न
4. मिलान प्रश्न

1. **सत्य–असत्य** – एहिमे एकटा वर्णात्मक कथन वा वस्तुस्थिति देल जाइत अछि जे या तऽ सत्य हो वा असत्य । विद्यार्थीकेँ चिह्न लगा कऽ ई देखयबाक छनि जे कथन सत्य अछि वा असत्य। जेनाः–

   i. भारतक राजधानी पटना अछि। (सत्य/असत्य)

   ii. पानि शून्य डिग्री पर बर्फ बनि जाइत अछि। (सत्य/असत्य)

2. **प्रत्युत्तर प्रश्न –** ई एकटा ओहन प्रश्न अछि जे एक्कहि टा प्रश्नक अन्तर्गत प्रश्नमे उल्लिखित तीनटा उत्तरक समावेश रहैत अछि, जाहिमे सँ विद्यार्थी केँ कोनो एकटा सत्य उत्तरकेँ छाँटि कऽ विद्यार्थी दू गोट गलत उत्तर केँ काटि देबाक रहैत अछि। उदाहरणक लेल – एकटा लोहाक छड़ऽक कोनो एकटा शिराकेँ आगिमे दैत छी तखन ओ चालन/संवहन/विकिरणक कारण गर्म भऽ जाइत अछि। एहिठाम प्रश्नमे निहित तीन गोट उत्तर – चालन, संवहन, विकिरण जाहिमे सँ कोनो एकटा उत्तरक छात्रकेँ चयन करऽ पड़ैत छनि।

3. **बहुविकल्पीय प्रश्न –** वस्तुनिष्ठ प्रश्नमे बहुविकल्पीय प्रश्नक सभसँ बेसी प्रचलन अछि। एहिमे एकटा प्रश्न वा अपूर्ण कथन देल जाइत अछि। विद्यार्थीकेँ निर्देशानुसार सत्य, सर्वश्रेष्ठ वा आदर्श उत्तर छाँटब रहैत छैक। जेना–

   प्रश्न – जँ जड़ैत मोमबत्तीक लौपर काँचक गिलास राखि देल जाय तऽ मोमबत्तीक लौ–

   उत्तर– (क) आओर अधिक तेज भऽ जाइत।

   (ख) ओहिना रहत।

   (ग) सुस्त पड़ि जायत।

   (घ) मिझा जायत।

तहिना– सक्कय वाणी बहुअन भावय

पाउ रस को मम्म न पाबय।

देसिल वयना सभ जन मिट्ठा

तेँ तैसन जम्पओ अवहट्ठा।।

अर्थात्, संस्कृत वाणी वा भाषा बहुतोकेँ नीक नहि लगैत छनि, प्राकृत भाषाक रसक मर्मकेँ लोक नहि बुझैत अछि, देशी भाषा सभकेँ रुचिगर–मिठगर लगैत छैक तेँ हम अवहट्ठ भाषामे रचना कऽ रहल छी। – **महाकवि विद्यापति ।**

प्रश्न – कोन भाषा बहुत गोटाकेँ नीक नहि लगैत छनि?

उत्तर – (क) हिन्दी
(ख) अंगरेजी
(ग) संस्कृत
(घ) मैथिली।

प्रश्न– कोन भाषाक रसक मर्मकेँ लोक नहि बुझैत अछि?
उत्तर – (क) फारसी
(ख) प्राकृत
(ग) अवहट्ट
(घ) मागधी

प्रश्न– कोन भाषा सभकेँ रुचिगर वा मिठकर लगैत छैक?

उत्तर – (क) मैथिली
(ख) मातृभाषा
(ग) देशी भाषा
(घ) विदेशी भाषा

अथवा

उपर्युक्त पदक भावार्थ लीखू।
निम्नलिखित पाँतिक रचनाकार के छथि।

4. **मिलान प्रश्न** – एहि प्रश्नमे शब्द, सूत्र, प्रतीक, वाक्यांश वा कथनक दू गोट स्तम्भ देल जाइत अछि। एक स्तम्भक शब्द वा कथनकेँ दोसर शब्द वा कथनसँ विद्यार्थीकेँ मिलान करबाक रहैत अछि। ई शब्दकथन प्रायः अव्यवस्थित रहैत अछि। जेनाः–

(1) बिहार	(क) लखनऊ
(2) पश्चिम बंगाल	(ख) पटना
(3) उत्तर प्रदेश	(ग) कोलकाता
(4) पंजाब	(घ) भुवनेश्वर
(5) उड़ीसा	(ङ) चण्डीगढ़

परियोजना कार्यक संकेत

इकाई–1

- आधुनिक मैथिली नाटक
- मैथिली कहावत'क संकलन
- मैथिली बुझौअलि'क संकलन।

इकाई–2

- आकाशवाणी दरभंगा अथवा पटना'क कोनो एकटा मैथिली कार्यक्रम (हाल, चाल, सिंगरहार/ अन्य कार्यक्रम)क एक सप्ताहक प्रतिवेदन
- मैथिली गीत'क कोनो दू टा सुनि ओहि पर अपन प्रतिक्रिया
- 5–8 वर्ष'क बच्चाक अपन माता–पिताक संग अथवा संगी–साथीक संग बातचीत पर आधारित परियोजना कार्य।

इकाई–3

- अपन वर्ग–कक्षमे शिक्षक–प्रशिक्षुक पुस्तकक कोनो गद्यांश वा पद्यांश (कथा, एकांकी, कविता आदि) पढ़बा पर परियोजना कार्य।
- मिथिलाक्षर मे कोनो पाँच गीत/कविताक लेखन
- दुर्गा पूजा, दीयाबाती अथवा कोनो उत्सव'क संस्मरण लेखन
- प्रायोगिक विद्यालय'क कोनो घटनाक वर्णन

इकाई–4

- कक्षा 1–5/6–8क कोनो विषयक कोनो पाठक शिक्षण लेल अधिगम सामग्रीक निर्माणक' ओकर उपयोग पर परियोजना कार्य (चार्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, समूह कार्य, गीत, नाटक आदि)

विविध

- कोनो एक शिक्षण विधि पर परियोजना कार्य तैयार करू–
- कथा शिक्षण
- संस्मरण शिक्षण
- गीत/कविता शिक्षण
- एकांकी शिक्षण
- व्याकरण'क कोनो पाठक शिक्षण
- कोनो विषय'क कोनो पाठ'क आकलन हेतु उपकरण तेयार करब
- विभिन्न प्रकार'क प्रश्न निर्माण करब।

अन्य –

- अपन जिला/ प्रखण्डक किछु साहित्यकार'क सूची/संस्था'क सूची देल गेल अछि ओहि मे सं. अथवा ओकर अतिरिक्त कोनो व्यक्ति/संस्था पर परियोजना कार्य तैयार करू।

क्र.सं.	नम	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष
01.	साहित्य अकादमी	1954	दिल्ली	पहिल – पं. जवाहरलाल नेहरू

02.	साहित्य अकादमी	1965		पहिल प्रतिनिधि – रमानाथ झा वर्तमान प्रतिनिधि –
03.	मैथिली अकादमी	1972	पटना	पहिल अध्यक्ष – श्रीकान्त ठाकुर ''विद्या'' वर्तमान अध्यक्ष –
04.	चेतन समिति	1954	पटना	पहिल अध्यक्ष – वर्तमान अध्यक्ष –विजय कुमार मिश्र
05.	मैथिल महासभा	1910	दरभंगा	पहिल अध्यक्ष – महाराज रमेश्वर सिंह वर्तमान अध्यक्ष –
06.	मैथिली साहित्य परिषद	1930		पहिल अध्यक्ष – राजा कृत्यानन्द सिंह वर्तमान महासचिव –
07.	कर्ण गोष्ठी	1981	कलकत्ता	पहिल अध्यक्ष – वर्तमान महासचिव –
08.	किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान		धर्मपुर उजान लोहना रोड, दरभंगा	अध्यक्ष वर्तमान –
09.	विद्यापति सेवा संस्थान	1984	दरभंगा	अध्यक्ष पहिल– ब्रज किशोर शर्मा 'मणिपदम्' वर्तमान अध्यक्ष –

परियोजना कार्य हेतु किछु प्रस्तावित शीर्षक

क्र.सं.	नाम	पैतृक गाम जिला	जन्म	शिक्षा ओ वृत्ति	कृति	पुरस्कार ओ सम्मान	निधन
01.	ज्योतिरीश्वर		1288ई.		वर्णरत्नाकर, धूर्तसमागम, पंचसायक, सा शेखर		
02.	विद्यपति ठाकुर	विस्फी, मधुबनी	1350ई.		कीर्तिलता कीर्तिपताका, मणिमंजरी, गयापत्तलक गंगावाक्यावली, दानवाक्यावली इत्यादि	कवि कोकिल, कवि कंठहार महाकवि	1440ई.
03.	उमापति	कोईलख, मधुबनी	1620 सँ 1700ई. मध्य		पारिजात हरण, सारसंग्रह, शुद्धिनिर्णय, स्मृति दीपिका		
04.	कविशेखर बद्रीनाथ झा	सरिसब, मधुबनी	1823ई.	धर्मराज संस्कृत कॉलेजमे प्राध्यापक	राधा परिणय, एकावली परिणय	कविशेखर	1974ई.
05.	पं. जीवन झा	हरिपुर, मधुबनी	1856ई.	काशीराजमे दानाध्यक्षक पद	सुन्दर संयोग, नर्मदा सहक, मैथिली सहक सामवती पुर्नजन्म		1920ई.
06.	म.म.मुरलीधर झा	भराम, मधुबनी	1868ई.	काशीक क्वीन्स	मैथिली व्याकरण, अर्जुन	महामहोपाध्यायक	1929ई.

				कॉलेजमे प्राध्यापक	तपस्या, हितोपदेश मिथिलामोदक– सं.	उपाधि	
07.	पं. दीनबन्धु झा	इसहपुर, मधुबनी	1874ई.	प्रधानाध्यापक (सरिसव ग्राम)	रमेश्वर प्रतापोदय,रसिकमनोरंजिनी, मिथिलाभाषा, विद्योतन		1960ई.
08.	म.म.डॉ. उमेश मिश्र	गजरहारा, मधुबनी	18 नवम्बर 1985	भारतीय दर्शन तथा संस्कृत सँ एम.ए., कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत वि. वि. प्रथम कुलपति	कमला,नलोपाख्यान, अन्य उपाख्यान, अतिचार निर्णय, मैथिली संस्कृत ओ सभ्यता		1967ई.
09.	डॉ. अमरनाथ झा	सरिसवपाही, मधुबनी	1897	इलाहाबाद वि.वि. कुलपति हिन्दू वि. वि. मे कुलपति	इशनाथ काव्य ग्रन्थावली		1965ई.
10.	डॉ. का°चीनाथ झा किरण	उजान, मधुबनी	28 दिसम्बर, 1906	प्राध्यापक	पराशर, चन्द्रग्रहण विजेता विद्यापति इत्यादि	साहित्य अकादेमीक	1989ई.
11.	ईशनाथ झा	सरिसवपाही, मधुबनी	1907	अध्यापक सी.एम. कॉलेज, दरभंगा	माला, उगना, चीनीक लड्डू	साहित्य अकादेमी, (सरस कविक) उपाधि	1965ई.

12.	काशीकान्त मिश्र 'मधुप'	कोईलख, मधुबनी	2 अक्टूअर 1906ई.	शिक्षक, बहेड़ा	राधा विरह, द्वादशी, त्रिवेणी शतदल,पंचमेर, त्रिकुश	साहित्य अकादेमी (कविकोकिल) उपाधि	1987ई.
13.	सुभद्रा झा	नागदह, मधुबनी	1909ई.	शिक्षक	प्रवास, नातिक पत्रक उत्तर मैथिली व्याकरण मीमांसा	साहित्य अकादेमी	2000ई.
14.	उपेन्द्रनाथ 'व्यास'	हरिपुर, मधुबनी	1917ई.	अभियन्ता	दू–पत्र, कुमार बाभनक बेटी, विडम्बना, प्रतीक	साहित्य अकादेमी	
15.	प्रो. बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर'	ड्योढ़ी, मधुबनी	1919ई.	प्राध्यापक (आर.के. कॉलेज, मधुबनी)	अमर बापू, आवेश, अभिशाप, मधुमती		
16.	श्री मनमोहन झा	सरिसव, मधुबनी	1920ई.	बी0ए0, बी0एल. वकालत ओ अध्यापक	अश्रुकण, मीनाक्षी, गंगापुत्र	साहित्य अकादमी	
17.	पं. गोविन्द झा	ईसहपुर, मधुबनी	1923ई.	मैथिली अकादमीक निर्देशक	कोशीकात, पूसक चोट सामाक पौती		
18.	पं. योगानन्द झा	कोईलख, मधुबनी	1923ई.	सी.ए. कॉलेजमे प्राध्यापक मैथिलल अकादमीक	भलमानुष, पवित्रा, मुनिक मतिभ्रम, आमक जलखरी		

				निर्देशक			
19.	पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	खोजपुर , मधुबनी	2 मई 1925ई.	व्याकरणाचार्य (शिक्षक) एम.एल. एकेडमी	गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल, आशा दिशा	साहित्य अकादेमी, पुरस्कार 11 महत्तर सदस्यता	जीवित
20.	डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'	विट्ठी, मधुबनी	1926ई.	(प्राध्यापक) मिल्लत कॉलेज, दरभांग	मैथिली साहित्य इतिहास, मनु, महामत्स्य		
21.	ललितेस मिश्र 'ललित'	बसैठ–चानपुर, मधुबनी	1932ई.		पृथ्वीपुत्र, प्रतिनिधि		1983 ई.
22.	धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'	लोहना, मधुबनी	1934ई.	प्राध्यापक	भोरूकबा, कादी आ कोयला, सम्यलाक, विधवा		
23.	श्री जीवकान्त	ड्योढ़–घोघरडीहा, मधुबनी	23 जुलाई 1936ई.	उच्च विद्यालयमे (शिक्षक)	अग्निवान, तकैत अछि चिड़ै, नाचू हे पृथ्वी	साहित्य अकादेमी	2014
24.	डॉ. गंगेश 'गुंजन'	पिलखवार, मधुबनी	1942ई.	आकाशवाणी पटनामे पोड्यसर	अन्हार इजोत, उचितवक्ता लोक मुनू, आइ भोर		
25.	मंत्रेश्वर झा	लालगंज, मधुबनी		बिहार सरकारक कमिश्नर रैकमे	ओझा लेखे गाम बताह खाद्यि, अनचिन्हार, गाम		

				कार्यरत			
26.	रमानाथ मिश्र 'मिहिर'	खोजपुर, मधुबनी			मधुरी, युगबोध, उपराग, स्मृति		

संदर्भ ग्रंथ सूची

मातृभाषा मैथिलीक शिक्षण शास्त्र – सं० डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, डॉ० सुभाष चन्द्र झा

मैथिली भाषा ओ शिक्षा (ODL) SCERT बिहार सरकार द्वारा विकसित

भाषा शिक्षण (पाठ्यचर्या क्रियान्वयन) इग्नू–ई एस 201 (3) 2001

हिन्दी भाषा की शिक्षण विधि – पं० श्री रघुनाथ सहाय

मातृभाषा शिक्षण – श्री आर०एस० श्रीवास्तव

मैथिली साहित्य संग्रह – स्व० रमानाथ झा

मैथिली व्याकरण प्रबोध – श्री भोलालाल दास

बी० सी० एफ० (BCF) – 2008

एन० ई० पी० (NEP) – 2020

मैथिली साहित्यक इतिहास – श्री जयकान्त मिश्र

भाषा–विज्ञान – प्रो० देवेन्द्र नाथ शर्मा

मैथिली भाषा शास्त्र – डॉ० भोला तिवारी

भाषा – विज्ञान – डॉ० भोला तिवारी

मैथिली लोकहत बिन्दू ओ विस्तार – डॉ० महेन्द्रनरायण राम